

॥ अथ हरिवल्लभकी रास लिख्यते ॥



॥ हुदा ॥ प्रथम वर्णन जगधर्मी, प्रथम श्रवण पण एह ॥
 प्रथम तीर्थकर जग जयो, प्रथम गुरु पमणेह ॥ १ ॥ विश्वस्थिति
 कारक प्रथम, कारक विश्व उद्योत ॥ धारक अतिशय आदि जि
 न, धारक भवनिधि पोत ॥ २ ॥ लघुवय इछा इच्छुनी, पारण
 दिन पण तेह ॥ एह इष्ट जेहने सदा, नाभिनिन्दन प्रणमेह ॥ ३ ॥
 सिद्धपूना संगमें, अछक छवयो दिन रात ॥ हुं तस पदपंक
 ज नमुं, नित्य उठा परभात-॥ ४ ॥ हंसासन जे सरसती, वरन
 ति वचन बिलास ॥ कविजन केरा हृदयमें, करती बुद्धि प्रकाश
 ॥ ५ ॥ ते हुं प्रणनु भारती, धारति जद अंवार ॥ मुझ मन मंदिरमें
 बसी, करवा मूढ उपगार ॥ ६ ॥ माता मुझ सहोदो करी, देजे य
 चन रसाल ॥ गंगंगीली जनमभा, मांभले यह उजमाल ॥
 ॥ ७ ॥ जे हुं चाहं चित्तमें, ते तूं करजे पात ॥ वचननी रचना
 रम दियो, बधि तुझ आगमन ॥ ८ ॥ गुरु ज्ञाता माता पिता, गुरु
 रूपी अधिक न कोय ॥ देवधर्म गुरु आत्मपा, बलिहारी गुरु सो
 य ॥ ९ ॥ ते गुरु चरण नदी करी, भविष्यनने हितकार ॥ राम
 रत्न हरिवल्लभ ज्यो, पुण्य उपर अधिकार ॥ १० ॥ पुण्यें वंछित
 पापोंमें, पुण्यें साहि नव जोय ॥ पुण्यें महिला मंत्रमें, पुण्यें शुद्ध
 सद्बुद्ध ॥ ११ ॥ जीवदया पानी जिनें, निग उपराष्ट्रें पुण्य ॥
 मुर नर नम सानिध करे, माने ते दिन धन्य ॥ १२ ॥ जीव
 दयायकी पापियों, हरिवल्लभ मच्छी राय ॥ तास मरव्य सुगतां
 धर्मा, मरव्या पातक आय ॥ १३ ॥ रास सगन मुगतां थकां

जे को करशे बात ॥ तेहने तस बल्लभ तणा, सम देखे छत्र सात ॥ १४ ॥ जिम मृग नाट लियो रहे, निसुणे यह एकरंग ॥ तिम सुणजो भवियण तुमै, आणी चित्त अमंग ॥ १५ ॥

॥ बाल १ ला ॥ रसीयानी देखी ॥ लस जोजननो रे जंबुद्वीप ए कसो, शाश्वत वर्तुलाकार ॥ सोभागी ॥ नेहमें क्षेत्र ए नंद सोहामणुं, कुलगिरि सात कथा सार ॥ सो० ॥ १ ॥ भाव घरीने रे भवि तुमै सांभलो ॥ रसिया देखे रे कान ॥ सो० ॥ सुणतां रंग रस कपजे, मुखमें राख्यां जिम पान ॥ सो० ॥ भा० ॥ २ ॥ क्षेत्र तिनमें करमी बसे निहां, अभि मशि कृपी रोजगार ॥ सो० ॥ आजीविकायें जीव जीवाढवा, आख्या ए तीन व्यापार ॥ सो० ॥ भा० ॥ १ ॥ धीजां क्षेत्र जे जगलां धर्मनां, भारुयां अ करमि उदार ॥ सो० ॥ तिहां को व्यापार तीनमें नवि लहे, छे कद्वतना आहार ॥ सो० ॥ भा० ॥ ४ ॥ तेहमें पदपुगलादिक क्षेत्र जे, भरत ने ऐरबत विदेह ॥ सो० ॥ ए नव क्षेत्र जंबुद्वीपनां, शोभित गोमे छे एह ॥ सो० ॥ भा० ॥ ५ ॥ ए नव क्षेत्र सात छे कुलगिरि, तेहनो अतिहा विस्तार ॥ सो० ॥ क्षेत्र समास में गुरुमुख सांभली, भारयो तास विचार ॥ सो० ॥ भा० ॥ ६ ॥ पण इहां हग्विल मच्छी रापनूं, चरित्र मणो चित्त लाय ॥ सो० ॥ लोक उखाणो जगमां इम कहे, जे परणे ते गवाय ॥ सो० ॥ भा० ॥ ७ ॥ द्विरे इहां जंबुद्वीपें अति भलूं, भरत क्षेत्र कहाय ॥ सो० ॥ पांचशे छव्यांश जोजन पटफला, धनुपाकारें सोहाय ॥ सो० ॥ भा० ॥ ८ ॥ सहस बर्षांश ते जन पद नेहमां, तेहना स्वत खंड होय ॥ सो० ॥ तिण रिचगे पद्या बंताडयो रजतनो, नोत्रण पचासनो जेय ॥ सो० ॥ भा० ॥ ९ ॥ पटखटमें खंड १० तिन तें करयो, दक्षिण उत्तर श्रेण ॥ सो० ॥ सोल सो ६ सहस ए जनपदमें रहै. बसती अनार्यनी तेण ॥ सो० ॥

॥ भा० ॥ १० ॥ साक्षा पञ्चवीश आर्ये अति यत्ना, केनै अर्थ
ममेत ॥ सो० ॥ श्रीजिनवर्मनो वाम तिहां लहे, महम्म बत्तांग
एध्य एत ॥ सो० ॥ ११ ॥ भा० ॥ ते माटे इहां आरय देशमां,
कनकपुरी अभिधान ॥ सो० ॥ साव सोनामय मुंदर शोभती,
भस्मपुरी उपमान ॥ सो० ॥ १२ ॥ भा० ॥ नलिनीगुल्म विभा
न तणी परे, एकविश्र भूषि भावास ॥ सो० ॥ स्तन जटितमें गो
ख विराजता, करता तेज प्रकाश ॥ सो० ॥ १३ ॥ भा० ॥ कुंती आव
ण परे हटभेणि राजती, छानती विजयना पंक्ति ॥ सो० ॥ देश देशांतर
विजज करे बहु, वरसे वस्तु धारा शक्ति ॥ सो० ॥ १४ ॥ भा० ॥
धनवंत धनद भंडारी साखिवा, वसे तिहां नगरीमां लोक ॥
सो० ॥ पंच विषयना रसमें दीना रहे, योगी चानुर लोक ॥
॥ सो० ॥ १५ ॥ भा० ॥ पट दरसनना पोषक जन बहु, पाळे
निज निज धर्म ॥ सो० ॥ पर पर शत्रुकार करे यणा, लहवा
गिव मुक्त हर्ष ॥ सो० ॥ १६ ॥ भा० ॥ जिनशासनना देवउ
दीपता, वजीश यदा वामाद ॥ सो० ॥ चोराणी मंदन अनि चो
पणुं, करता स्वरागुं वाद ॥ सो० ॥ १७ ॥ भा० ॥ दंडधरा अ
तिरनें फरहरे, नाचे माचे मनरंग ॥ सो० ॥ धन्य दिवस मुज
जिन दिर हूं चढी, पावन करवा मुक्त भंग ॥ सो० ॥ १८ ॥ भा० ॥
श्रीजिन केरी भगति करे सदा, मजिक जीव अपार ॥ सो० ॥
नीर्यदार पद ने उपराजता, राखनी परे मार ॥ सो० ॥ १९ ॥
॥ भा० ॥ वरण अक्षर वंस निण नगरीये, जगिये सुर अर
नाग ॥ सो० ॥ गद मद मंदिर पोनि शोभा यमी, भूमणी उर
हार ॥ पाठांतर ॥ नगर कनकपुरनामें शोभतुं. स्वर्गपुरी अनु
हार ॥ सो० ॥ २० ॥ भा० ॥ नंदनवन मय परिमल वाटिका,
चिहुंदिशि नमरीनी वाम ॥ सो० ॥ बापी कृप मनेवर जन्म भरघां,
मदकल पले मुक्ताम ॥ सो० ॥ २१ ॥ भा० ॥ काल दुकाष्ट ने

फोनवि भोलिखे, भहोनिश मुखनी छे वान ॥ सो० ॥ ईनि
 छपदव सुपने नवि जाणे, पुहवीये मगदीए रुवान ॥ सो० ॥ २२ ॥
 ॥ भा० ॥ कनकपुरीना प गुण सांभली, लाजी लंका तिकार
 ॥ सो० ॥ जलनिभिमां जइ बूढी बापढा, जाणे सकल संसार
 ॥ सो० ॥ २३ ॥ भा० ॥ स्वर्गपुरी पण नममां जइ रही, नि
 सुणी तेहना अवाज ॥ सो० ॥ एह नगरी कनकपुरी तणी-
 दिन दिन चढती छे लाज ॥ सो० ॥ २४ ॥ भा० ॥ कनकपुरी
 नां मे वयण बखानतां, पभणी पहेली ए डाल ॥ सो० ॥
 विविजय कइ भविष्य सांभलो, आगल वान रसाल ॥
 ॥ सो० ॥ २५ ॥ भा० ॥

॥ दुहा ॥ निग नगरीयें राजरी, वसंतसेन भूपाल ॥ न्यायि
 निपुण वसुदेव ज्युं, करुणारंत कृपाल ॥ १ ॥ वाक्य बछल ह
 रिदंद निर्यो, भुतबलि भीमममान ॥ अरिपण सघला बड
 कर्मा, उतात्थ्यां तम मान ॥ २ ॥ परजाने पाळे सदा, कोरे
 हथेली छांद ॥ दाण जगत दिमे नही, करदंड बंधन क्यांइ
 ॥ ३ ॥ कण्ठ मनि देखल गिरे, बंजन सीधिरकेस ॥ वसंत
 सेन नृप इणि परे, पाळे गज्य विशेष ॥ ४ ॥ तम पदराणी पद
 मिनी, रूपे रघु ममान ॥ नील सुरंगी शुभनवी, वसंतसेना ज
 भिमान ॥ ५ ॥ माळी मधुकरनी परे, मीतही निम जल घीन
 ॥ निम नृगणी एरुमना, रंगे रहे लख लीन ॥ ६ ॥ दोष्टदक
 मूर्ती परे, पनविजय मुख भोग ॥ नृगणी मिलमे सदा, पूर्व
 पुण्य मयोग ॥ ७ ॥

॥ हाज ० जी ॥ रहो रहो रहो रहो वालडा ॥ ए देजी ॥ विजये
 मोम ते राजवी. वसंतसेना साय माल रे ॥ जन्न सफल देख
 मने, मांमे पायो भाय लाउये ॥ १ ॥ सुगुण मनेदा मांमलो

आगल बात रसाल ॥ ला० ॥ जावदया पाली जिणे, ते लघो गं
 गल माल ॥ ला० ॥ २ ॥ सु० ॥ राज कृदि रमणी घणी, पूव
 पुण्यपमाय ॥ ला० ॥ मुरपतिनी परे राजवी, पुढचीये ते गवरा
 य ॥ ला० ॥ ३ ॥ सु० ॥ पण तस पुत्र ते को नही, तें चिंतातुर
 होय ॥ ला० ॥ याय उपाय करे घणा, देकी न लागे कोय
 ॥ ला० ॥ ४ ॥ सु० ॥ देव दाणव लख जो मिले, तो पण तिण
 भी न पाय ॥ ला० ॥ कर्म आगल चाले नही, जो करे लक्ष उ
 पाय ॥ ला० ॥ ५ ॥ सु० ॥ माहादेव महोदो महीतले, लोक
 माहे परसिद्ध ॥ ला० ॥ पार्वती सरस्वी नारीने, करमे पुत्र न
 दीव ॥ ला० ॥ ६ ॥ सु० ॥ तो बीजानुं शुं गनुं, ए सवि कर्म
 नां काम ॥ ला० ॥ कर्म सावाई जो हवे, मनवंचित फले ताम
 ॥ ला० ॥ ७ ॥ सु० ॥ एकने शुभ कर्म करी, पुत्र तणे घरे पुत्र
 ॥ ला० ॥ नाम करे चिहुं खंडमां, राखे घरनां सुत्र ॥ ला० ॥
 ॥ ८ ॥ सु० ॥ एकने पुत्र विना सही, भूनां तस आगार ॥ ला० ॥
 ॥ येन मंदिर सम जाणीये, पुत्र विना घरवार ॥ ला० ॥ ९ ॥
 सु० ॥ पुत्र विना गति को नही, पुत्र विना नही स्वर्ग ॥ ला० ॥
 लौकिक मठना शास्त्रने, भाषे कृपिजन वर्ग ॥ ला० ॥ १० ॥ सु०

उक्तंच ॥ गाथा ॥ गेहं तंभि मत्ताजे, जच्छ न दोसंति भूति
 धूसरछाया ॥ दवंत पदंत रदंत, दो तिनि दिग्भान दीसंति ॥ १ ॥
 ॥ श्लोक ॥ अश्वस्य गतिर्नास्ति, स्वर्गोर्नैवच नैवच ॥ तस्मात्पृ
 थमुखं दृष्ट्वा, पश्चात् र्धम ममाचरेत् ॥

॥ दाल उपरली ॥ अहोनिष्ठ द्य विनां करे, वसंतमेन भूगान्छ ॥
 ला० ॥ ॥ तिग अवसर एक व्योतिपी, आर्वा भित्तपो तनकाव ॥ ला०
 ॥ ११ ॥ सु० ॥ आगम नीगवनी करे, शाम्भ तणे अनुमार ॥
 ला० ॥ एरवो पंडित देखीने, नरपति हरम्यो अपाव ॥ ला०
 ॥ १२ ॥ सु० ॥ उठीने मगीर करे, याव धी मनपांदि ॥ ला०

मुद्रा सहित फल फूलगुं, पुस्तक पूजे उछाहि ॥ ला० ॥ १३ ॥ सु० ॥
 बेकर जोड़ी चीनवे, कीजें करुणा कृपाल ॥ ला० ॥ १४ ॥ सु० ॥
 पूरो मम माहरे, दोशे बाल गोपाल ॥ ला० ॥ १५ ॥ सु० ॥
 तब पंडित नरु जोड़ने, बेला साबो सार ॥ ला० ॥ १६ ॥ सु० ॥
 लगनने के रहे रायने, मांमलजो सुविचार ॥ ला० ॥ १७ ॥ सु० ॥
 तुझ करम नही, दुख भारी भोग ॥ ला० ॥ १८ ॥ सु० ॥
 सही, पूष दुष्य संजोग ॥ ला० ॥ १९ ॥ सु० ॥
 रूपे रंभास रिखी, नंदिनी तोहोरे तुझ ॥ ला० ॥ २० ॥ सु० ॥
 गट होइ ते तुझ ॥ ला० ॥ २१ ॥ सु० ॥
 एम कहीने विम ते गयो लेइ धंछित दान ॥ ला० ॥ २२ ॥ सु० ॥
 नृप मनमें हररूपो पणुं, निमरवि कज इकतान ॥ ला० ॥ २३ ॥ सु० ॥
 विम वचन ते योगी राणी गर्भ धरेय ॥ ला० ॥ २४ ॥ सु० ॥
 वमंत कहु फल फूलगुं, शोभित पना लहेय ॥ ला० ॥ २५ ॥ सु० ॥
 जागी तब नृपने कहे, पना तपो अधिकार ॥ ला० ॥ २६ ॥ सु० ॥
 सांभली नृप हररूपो पणुं, श्रीकरतार ॥ ला० ॥ २७ ॥ सु० ॥
 हरखित यह रागी विधे, ते गर्भजनन ॥ ला० ॥ २८ ॥ सु० ॥
 अत्रकमे मारा पूग धरि, जन्मी पुत्री ॥ ला० ॥ २९ ॥ सु० ॥
 इवां इगल वधामणां, घर घर गलमाउ ॥ ला० ॥ ३० ॥ सु० ॥
 लोन्धीविजय रंगे करी, पमणी बीजी डाल ॥ ला० ॥ ३१ ॥ सु० ॥

॥ दुहा ॥ गन्मोछव अति है करे. वमंतमेन भूपाल ॥ भारी माणक मांती पया, वरसे ज्यु वरसाल ॥ १ ॥
 कृष्ण केसर छा टणां, दीन करेह विशाल ॥ सोहव सधि दोले मिली, गावे गीत रमाल ॥ २ ॥
 घर घर गुडी उछेले, घर घर दोणी माल ॥ घर घर तोगा बांधीयां, दोमे शानु शाल ॥ ३ ॥
 नृत्य करे नदवा भला, खेले नवन सेल ॥ बेदीजन मुक्या परा, उव आवे रंगरेल ॥ ४ ॥
 इम उच्छर करनां यकां, बोल्या दिन ते

तार ॥ नगरीजन सहु पोषीया, देई निष्ट आहार ॥ ५ ॥ निज
 हृदय मेली करि, पुत्री मना ठवीज ॥ सुपन तणा अनुसारयी,
 वसंतमिरि ते कहीज ॥ ६ ॥ कुमरी ते दिन दिन बजे, ज्यं बधे
 इष्टदंड ॥ चंद्रकला जिम धीजयी, बाधे तेज अखंड ॥ ७ ॥
 इम करतां वपनी यद, पंचवरसनी थाल ॥ शुभलग्न लेई करी,
 मई धांशी नौशाल ॥ ८ ॥ सटदरसननां शास्त्र जे, तेहमां यई
 मवीण ॥ रंग राग नाटक कला, यंत्रवाजिज मिलीन ॥ ९ ॥
 षट भाषा लहती मुखें, चौसठ कलानिपान ॥ अभिनव जाणे
 शारदा, प्रगट यई सावधान ॥ १० ॥ इम करतां ते अनुक्रमे,
 वरस ययां जब सोल ॥ नवपौवन नारी तणा, उलझ्या याम
 कलोल ॥ ११ ॥ मात पिता हरखें यणुं, पुत्री देखी रतन ॥
 घरनी चिंता चित घेर, करतां कोटिपतन ॥ १२ ॥

॥ डाल १ जी ॥ सुमति सदा दिलमां घरो ॥ ९ देखी ॥ ति
 ण नगरीमें एक गृहे, धीवर हरिबल नाम ॥ सनेही ॥ जन्मपर
 जीव हणे सदा. मेळे दुष्कृत ठाम ॥ सनेही ॥ १ ॥ हवे सुणतो
 तेहनी कया, सूकी सयलो प्रमाद ॥ स० ॥ साकर द्राग तर्जा
 परें, विण पडसे ल्यो स्वाद ॥ स० ॥ २ ॥ ह० ॥ धीवर ने ना
 णे नही, जीवदयानो धर्म ॥ म० ॥ उद्यम उदरेने कारणे, केई
 नित्य करणीकर्म ॥ स० ॥ ३ ॥ ह० ॥ विगांधग दुग्धर पेटने,
 पेट करावे वेड ॥ स० ॥ उद्यम मध्यम प्राणीने, पेट ते हरावे ने
 ट ॥ स० ॥ ४ ॥ ह० ॥ पेटने कारणे जीवदा, जावे देश नदेश
 ॥ स० ॥ जावे जलनिविधारणे, पेटने हेतविशेष ॥ म० ॥ ५ ॥
 ह० ॥ अगण्यांनीं करणी करे, चोरी हेरो मत्वस ॥ म० ॥ पेटना
 अर्धी जे अले, न गणे भक्ष अभक्ष ॥ स० ॥ ६ ॥ ह० ॥ याग क
 ला लेवले यणुं, नटुआ नटवी जोर ॥ म० ॥ दावीन वेवे जांरने,
 पेटने अर्थ घोर ॥ स० ॥ ७ ॥ ह० ॥ जिनचरवादि मोनवरा.

[illegible]

॥ म० ॥ ६० ॥ २१ ॥ धीवर कुलें आवी पट्या, क्यां रहे गुरु
 नं ज्ञान ॥ म० ॥ आनीविका ए पेडनी, दोषी करमे निदान,
 ॥ म० ॥ ६० ॥ २२ ॥ पण गुरुजी तुम वचनथी, आजनी मे
 पण होय ॥ म० ॥ पंढरी जाळमां जीव जे, तेहने मे जीपिन
 दोर ॥ म० ॥ ६० ॥ २३ ॥ इणि परे अभिग्रह आदरी, हरिवल
 वळियो नाम ॥ स० ॥ मुनि पण ईश्या शोधता, प-ता धीजे
 टाय ॥ म० ॥ ६० ॥ २४ ॥ हनुआ करमी जीव जे,
 तरत लहे उपदेश ॥ स० ॥ भारे करमो जीवटा, माने नही
 लबलस ॥ स० ॥ ६० ॥ २५ ॥ पार्षनि मनिवोपता, पन पो
 तानुं जाय ॥ स० ॥ टपटो मराने चढाविये, आरिसो नवि
 णाय ॥ स० ॥ ६० ॥ २६ ॥ हरिवलनी परे प्राजोया, गुरुमुखे
 होरे जेद ॥ स० ॥ गुरुनां वचन हृदय धरे, मनगंठित छे
 नेद ॥ म० ॥ ६० ॥ २७ ॥ लम्बिबिनय गंगे करी, भावी ए
 धीनी टाळ ॥ स० ॥ हरिवल जीवदयायकी, लेहये मंगल
 मान ॥ म० ॥ ६० ॥ २८ ॥

॥ दुरा ॥ हरिवल अभिग्रह लेहने, पाजे वळियो जान ॥
 णिण अरगरे मुर मगडियो, सुस्थित जळनिधि स्वामि ॥ १ ॥
 अवशी ज्ञानी देवतां, रूप करे लनकाल ॥ धीवरनुं मन सों
 भवा, मण्ड हुवां झुजल ॥ १ ॥ धीवर ते जळमे जह, लांसी
 नागी जाळ ॥ आव मरानो जालनां, लांसी मण्ड झुजल ॥
 ॥ १ ॥ तव धीवर ते मण्डने, स्नेह करुणावंत ॥ गुरुनुं वचन हृदये
 परो, पाने ते डलसंत ॥ ४ ॥ बळी बीजे यानक जह, उंटा
 द्रानां जाळ ॥ नागी वर किरि मण्डने, आप्यो जाळ मण्डगळ
 ॥ ५ ॥ ते पण बळि मण्ड म्कीयो, नीयन निज नंभार ॥ ना
 सों धीवर जळनिनां, जाळ ते धीनी बाग ॥ ६ ॥ बांज सिरीने

इम करतां संध्या धई रे, आव्यो नगर नजीक ॥ पण निज
 मंदिर नारीनी रे, मनमें आणी भीक ॥ सू० ॥ १२ ॥ पेट भरा
 इ जही नही रे, भोटये रांड कुहाडा ॥ जाइश जो खाली परे
 रे, बेसये लेई राड ॥ सू० ॥ १३ ॥ काली नागणनी परे रे,
 रोपे भरी छे चंद ॥ छेकरदाने धारे धनुं रे, बोलै ज्युं खोखर
 भंड ॥ सू० ॥ १४ ॥ मुसनायी भोंठा पटे रे, कोइ बोलावे बोल
 ॥ बलगे बापणनी परे रे, राखे नही तस तोल ॥ सू० ॥ १५ ॥
 दीयालीनो परोदीयो रे, दीमंती जाणे अलछ ॥ आंगण आवे
 को पानवी रे, देखी जाये गछ ॥ सू० ॥ १६ ॥ कूडा धोली
 कर्कशा रे, दे बली अछतां आल ॥ गुण अवगुण जाणे नहीं रे,
 परिणामे विकराल ॥ सू० ॥ १७ ॥ उतरे जे वर्ष सातनी रे, जे
 द पनोती कहाय ॥ पण आगि पनोती जन्मनी रे, ते कि
 म उतरी जाय ॥ सू० ॥ १८ ॥ जाणी बंशु-रु कोयला रे, एहबुं
 रूप नीहाल ॥ खापानी संख्या नही रे, जाणीयें पेटमें काल
 ॥ सू० ॥ १९ ॥ धीवर कहे मुझ नारीनां रे, केतां कवं ह बखाण
 ॥ पूर्ण पापना जोगथी रे, मिली ए कर्म प्रमाण ॥ सू० ॥ २० ॥
 इतियळ चित्तुं चितवे रे, नमट्यो जत्रच जीव ॥ घरे जावुं
 तो बांकडी रे, रुझी करश रीव ॥ सू० ॥ २१ ॥ ते माटे वनमें
 रही रे, रजनां छेठ विशराम ॥ दिन उगे घर जाइश रे, जड
 छे जीविक ताम ॥ सू० ॥ २२ ॥ इम जाणी ते वद्यमें रे, इन्विल
 रहियो ताम ॥ कालीकाने देवलें रे, लीयो तिहां विधाम ॥
 सू० ॥ २३ ॥ धीवर मृतो चितवे रे, धन धन जीवदया धर्म ॥
 एक में जाव उगारीयो रे, तो बाधी मुझ शर्म ॥ सू० ॥ २४ ॥
 सोभे निथे आजधी रे, इणयो नही कदि जीव ॥ जल निधि
 नो पर्णी देवता रे, फलये मुझ सदाव ॥ सू० ॥ २५ ॥ पानए
 देयो पारगुं रे, धीवर हरखे पइड ॥ जीवदया धर्म उपरें रे,

डि मुँ आबनो, बरवाने हो घणुं आणी हेत के ॥ कुं० ॥ २ ॥
 प्यरदारी हरल्लो घणुं, कुमरीनु हो देखिनि बिच के ॥ कुं० ॥ ३ ॥
 पे आशे, निज घरनु हो लैने बिच के ॥ कुं० ॥ ४ ॥
 नृपना नैदिना, मुझप्री केम हो निरवारो पाव के ॥ कुं० ॥ ५ ॥
 कर्मा किरां मिहनी, किरां हमिणी हो किरां कर्नुं कर्नुं के ॥ कुं० ॥ ६ ॥
 किरां अलमी किरां नागनी, किरां कर्नुं कर्नुं के ॥ कुं० ॥ ७ ॥
 किरां अज बरवत के ॥ किरां कुमरीने हु, किरां कर्नुं कर्नुं के ॥ कुं० ॥ ८ ॥
 किरां येर मरत के ॥ कुं० ॥ ९ ॥ जानि कर्नुं कर्नुं के ॥ कुं० ॥ १० ॥
 दर राखे हो मयने संसार के ॥ कुं० ॥ ११ ॥
 जावे हो मेर छे प्यरदाग के ॥ कुं० ॥ १२ ॥
 री, पीठ एकपे हो नाखे तम बर के ॥ कुं० ॥ १३ ॥
 मे, कुमी हुके हो नैदने नदी पेर के ॥ कुं० ॥ १४ ॥
 स प ह पर, कुल भाजे हो निज साधनु मेर के ॥ कुं० ॥ १५ ॥
 पदमनी, किम देह हो मेरने हु मेर के ॥ कुं० ॥ १६ ॥
 स छे परना, परनाग हो साधे परे राग के ॥ कुं० ॥ १७ ॥
 संद पनी, नरि पाधे हो किरां बेरानो मेर के ॥ कुं० ॥ १८ ॥
 किरावनां फल सागिनां, देवतां हो कर्नुं कर्नुं के ॥ कुं० ॥ १९ ॥
 पन मे पन घागुवादी, जीव पाधे हो कर्नुं कर्नुं के ॥ कुं० ॥ २० ॥
 लोके के ॥ कुं० ॥ २१ ॥
 शोक के ॥ कुं० ॥ २२ ॥
 शक्तिने मेर के ॥ कुं० ॥ २३ ॥
 पर के ॥ कुं० ॥ २४ ॥
 निज कुल मंदार के ॥ कुं० ॥ २५ ॥
 हो मेरना किराव के ॥ कुं० ॥ २६ ॥
 पावे प्याहुर हो जवाने के ॥ कुं० ॥ २७ ॥

रज्जु ॥ १ ॥ अन्ध रत्न दो नेहने, आशी छुं तुम कस ॥ उंय
 तनी उतावला, आशी चढो यइ सस ॥ ३ ॥ हरिबल बणीक ते
 जाणीने, विनवे कुमरी ताम ॥ धीवर सूतो जागीयो, केहने क
 हे अभिराम ॥ ४ ॥ हरिलंकी अपसर समो, देखी कुमरी रूप ॥
 धीवर मन विन्दल ययुं, ए हुं दीसे; सरूप ॥ ५ ॥ चमत्कार
 चित्तमें लरी, धीवर चिने ताम ॥ कोइक बात विचार छे, मौन
 करणानुं काम ॥ ६ ॥ अणबोल्पो ऊठ्यो तुरत, करी असवारी
 सार ॥ कुमरी मन हरस्तिन यई, चाल्या पय विचार ॥ ७ ॥
 पाणीपंथा घोडला, तेइहुं करहा जोर ॥ पंथे चाल्या घटबढी,
 पहोतां जे बन घोर ॥ ८ ॥ बसंतसिरी कुमरी हिवे, टाली सघ
 ली बीक ॥ हरिबलने बोलाववा, आशी पास नमीक ॥ ९ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥ पारकर देखी आयो ॥ ए देखी ॥ हिवे
 हरिबल मधुमी बोलो, मनबल्लभ मनहुं खोलो रे ॥ माहरा जी
 बनमी तुम बोलो ॥ हिवे काई दृग् मन आणो, मधु भेल्या तुम
 अम दाणो रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मुझ मरखी तुन नारी, धिण पैसे
 मित्रि सुख कारी रे ॥ मा० ॥ कनक रयण छे साथे, तुम बावरो
 सुखे निज हाथे रे ॥ मा० ॥ २ ॥ पेहरो नव नवा बायो, जर
 तारी बायो पाया रे ॥ मा० ॥ स्वदग्गस रमवतो सारी, करी
 पीरसुं मोहनगारी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ तुम संगे रहुं कर जाई, करुं टे
 हल ते आलस छोटी रे ॥ मा० ॥ हुं छुं तुम प्रेम विलुढी, आ
 धी हुं तुम सुधी रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ हिवे तुम ययग न ओयुं,
 जावित लो वरमांछा सोयुं रे ॥ मा० ॥ करहा जे साते ओप्या,
 लेई तुम गुंने सौप्या रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ नन मन धन तुन केरुं, क
 रि भस्त्रवजो ए भलेक रे ॥ मा० ॥ एक तुम मेहेरनी आशा,
 अमे गायुं मेमना पाशा रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इणि परे कुमरी
 बोले, पग हरिबल बाचा न खोले रे ॥ मा० ॥ तव निदां कुमरी

रिमाणे, हा छे ए वणिक्त न भासे रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ इम करत
 गनु ने राहाणे । दीनु मुण श्याम गुणु भाणु रे ॥ मा० ॥ दिन
 उगमने ने दीडो, दीन वद्य विहणो धीडो रे ॥ मा० ॥ ८ ॥
 माणे भायोऊनो पिंढ, जाणे पाडयो देवें दंड रे ॥ मा० ॥ देहा
 छे मरीणळ वान, वलि जाणे कोरळ मान रे ॥ मा० ॥ ९ ॥
 भावा पोतर जाणी, नव कुमरी मन उलजाणी रे ॥ मा० ॥ मुं
 दरी गड न निमाणी, निने मड हाणी ने हाणी रे ॥ मा० ॥ १० ॥
 मरणा न हर घळमे, फळ चाण्या आंक आलो रे ॥ मा० ॥
 भाण गुरुवर वाणी, पण निमळ्यो कनक निहामी रे ॥ मा० ॥
 ॥ ११ ॥ वधवे घेवणे चढावी, पण देवें भुणे भयदावी रे ॥ मा० ॥
 दुन परजाडा मही, पण पानीये मनि चुही रे ॥ मा० ॥ १२ ॥
 कामग राता माड, मोला मोरुण पण मोई रे ॥ मा० ॥ निम
 ष उभागा मेल्या, निज मंदिर कुळ भवरेल्यो रे ॥ मा० ॥
 ॥ १३ ॥ जाणु जावनवेणे, जेनु ने लोरो विगेणे रे ॥ मा० ॥
 हजरा मदन पगळी, नव वणिके मही न वाही रे ॥ मा० ॥
 १ ॥ १४ ॥ कांगळे रिमामी, दीडि गुण कपळ कामी रे
 मा० ॥ १५ ॥ रागदना ने करे संग, नव जनन ने मोरो देग
 १ ॥ १६ ॥ जाणु ने वनिहने वणु, निज जनम ने म
 १ ॥ १७ ॥ ॥ मा० ॥ पाणीये वाचा न वाशी, रिण सुनई
 १ ॥ १८ ॥ ॥ मा० ॥ १९ ॥ जननी नाव सुद्धारी, सुद्धी ने
 १ ॥ २० ॥ ॥ मा० ॥ जो नुष्ट मोक्ष टियागा, ना दाने
 १ ॥ २१ ॥ ॥ मा० ॥ २२ ॥ रिष्ट रे देव नृ देव्या, यी
 १ ॥ २३ ॥ ॥ मा० ॥ ने रिही उबी ए मोरो,
 १ ॥ २४ ॥ ॥ मा० ॥ २५ ॥ दीने ए दो
 १ ॥ २६ ॥ ॥ मा० ॥ २७ ॥ ॥ मा० ॥ २८ ॥ ॥ मा० ॥ २९ ॥ ॥ मा० ॥ ३० ॥ ॥ मा० ॥ ३१ ॥ ॥ मा० ॥ ३२ ॥ ॥ मा० ॥ ३३ ॥ ॥ मा० ॥ ३४ ॥ ॥ मा० ॥ ३५ ॥ ॥ मा० ॥ ३६ ॥ ॥ मा० ॥ ३७ ॥ ॥ मा० ॥ ३८ ॥ ॥ मा० ॥ ३९ ॥ ॥ मा० ॥ ४० ॥ ॥ मा० ॥ ४१ ॥ ॥ मा० ॥ ४२ ॥ ॥ मा० ॥ ४३ ॥ ॥ मा० ॥ ४४ ॥ ॥ मा० ॥ ४५ ॥ ॥ मा० ॥ ४६ ॥ ॥ मा० ॥ ४७ ॥ ॥ मा० ॥ ४८ ॥ ॥ मा० ॥ ४९ ॥ ॥ मा० ॥ ५० ॥ ॥ मा० ॥ ५१ ॥ ॥ मा० ॥ ५२ ॥ ॥ मा० ॥ ५३ ॥ ॥ मा० ॥ ५४ ॥ ॥ मा० ॥ ५५ ॥ ॥ मा० ॥ ५६ ॥ ॥ मा० ॥ ५७ ॥ ॥ मा० ॥ ५८ ॥ ॥ मा० ॥ ५९ ॥ ॥ मा० ॥ ६० ॥ ॥ मा० ॥ ६१ ॥ ॥ मा० ॥ ६२ ॥ ॥ मा० ॥ ६३ ॥ ॥ मा० ॥ ६४ ॥ ॥ मा० ॥ ६५ ॥ ॥ मा० ॥ ६६ ॥ ॥ मा० ॥ ६७ ॥ ॥ मा० ॥ ६८ ॥ ॥ मा० ॥ ६९ ॥ ॥ मा० ॥ ७० ॥ ॥ मा० ॥ ७१ ॥ ॥ मा० ॥ ७२ ॥ ॥ मा० ॥ ७३ ॥ ॥ मा० ॥ ७४ ॥ ॥ मा० ॥ ७५ ॥ ॥ मा० ॥ ७६ ॥ ॥ मा० ॥ ७७ ॥ ॥ मा० ॥ ७८ ॥ ॥ मा० ॥ ७९ ॥ ॥ मा० ॥ ८० ॥ ॥ मा० ॥ ८१ ॥ ॥ मा० ॥ ८२ ॥ ॥ मा० ॥ ८३ ॥ ॥ मा० ॥ ८४ ॥ ॥ मा० ॥ ८५ ॥ ॥ मा० ॥ ८६ ॥ ॥ मा० ॥ ८७ ॥ ॥ मा० ॥ ८८ ॥ ॥ मा० ॥ ८९ ॥ ॥ मा० ॥ ९० ॥ ॥ मा० ॥ ९१ ॥ ॥ मा० ॥ ९२ ॥ ॥ मा० ॥ ९३ ॥ ॥ मा० ॥ ९४ ॥ ॥ मा० ॥ ९५ ॥ ॥ मा० ॥ ९६ ॥ ॥ मा० ॥ ९७ ॥ ॥ मा० ॥ ९८ ॥ ॥ मा० ॥ ९९ ॥ ॥ मा० ॥ १०० ॥

निमें सुत मन देमें, माहालं जोवन एलें बढेने रे ॥ मा० ॥ इम
 सुंदरी मियेंवो, लही मुच्छी पही ते धरती रे ॥ मा० ॥ २० ॥
 तव निदां धारण शूरे ॥ मनसुं ते पुण्य अशूरे रे ॥ मा० ॥
 मे ते ए सुं कीचुं, निज मंदिर सूका दीधुं रे ॥ मा० ॥ २१ ॥
 ललेश पाक न साधो, निजरुमें हाथे टाधो रे ॥ मा० ॥ जे
 पडे लोक उखाणो, ते मे तो नअरें पिछायो रे ॥ मा० ॥ २२ ॥
 पोगट मुंदरी माय, आयी रोंई घरनी आय रे, ॥ मा० ॥ ए दुःख
 केहने दाखें, एहो नही कोइ भाखें रे ॥ मा० ॥ २३ ॥ मुख
 दुःख जे लिग्यां पाने, ते भोगवे जीव एक ताने रे ॥ मा० ॥ धी
 वर मनमें विमामें, रोइ राज न पामे उछाम रे ॥ मा० ॥ २४ ॥
 एतो सुंदरी मोहेंदी, किम रोक घरे रहे शोदी रे ॥ मा० ॥ रूपें रं
 भसमान, किम सुंदरी दे मुझ पान रे ॥ मा० ॥ २५ ॥ धिग धिग
 जीवित एह, धीवर पनुं रघो भे जेह रे ॥ मा० ॥ माहालं पुरुष
 देखी, कुमरीयें भाख्यो उवखी रे ॥ मा० ॥ २६ ॥ धिग धिग
 जानि अकामी, मुझ देखी मुच्छी पापी रे ॥ मा० ॥ धीवर दुःखी
 यो अपाग, बडे जयणें आंसु धार रे ॥ मा० ॥ २७ ॥ किहां
 गयो सागर देव, मुझ काम पडे इहां देव रे ॥ मा० ॥ सुंदरी
 जे मूछाणी, करे जीवित ते मुख खाणी रे ॥ मा० ॥ २८ ॥
 जलनिधि मर तब नहि, धीवरने हर्ष उपावे रे ॥ मा० ॥ लज्जि
 करे डाल छडी, कुमरीने करे हिवे बेडी रे ॥ मा० ॥ २९ ॥

॥ दुहा ॥ धीवर ननमें संक्रमे, तनखिण सागर देव ॥ अनृ
 त जल जेई करी, कुमरी छांटी हेव ॥ १ ॥ रंभा फल पवें करी,
 करयो पवन उषचार ॥ तव कुमरी सार्जी रई, पापी चेतन मार
 ॥ २ ॥ आंसु उवाटी निरसियुं, हरिचक्र केरुं रूप ॥ बाला
 चपरी गिनै, एतुं देव सरूप ॥ ३ ॥ कालो वरण मिथी गयो,
 मनयो मोहन जान ॥ अद्भुत क्रांति छरिनी, दीपे देव रा

इधने साच ॥ ४ ॥ एम रुही उठ्यां तरुद, लेई निज परि
 वार ॥ नगरीयां जातां थकां, शकुन ययां श्रीकार ॥ ५ ॥ दुर्गा
 काक ने भान शुभ, दावी भैरव संत ॥ सांड मारत खर रुही,
 जिमणां न्याली हंत ॥ ६ ॥ अंगज दशरथ मृततणां,
 बाने तोरण सार ॥ शकुन ययां जप्ती दिशें, करतां
 पुर पेसार ॥ ७ ॥

॥ दाल ८ मी ॥ बन्धो रे मगुरुजीनो कल्पमे ॥ ए देशी ॥
 जीरे शुभ लगनें शुभ सुहृत्ते, एतो नगरीमें कीच प्रवेश रे ॥
 मुजाण ॥ तिण समे सनमुख बलां यया, शुभ कारी शकुन बिशे
 पंर ॥ सु० ॥ शु० ॥ १ ॥ कन्या पांच सहामी मिनी, एतो लेई
 दीप ज्योत रे ॥ सु० ॥ गजरथ शिणगरथा भला, मिलि सनमु
 ख रयणनी ज्योत रे ॥ शु० ॥ शु० ॥ २ ॥ जीरे एहं शकुने
 नगरीमें, एतो हरिचलें पगलुं दीध रे ॥ सु० ॥ तिण समे एक
 व्यवहारियो, मिल्यां सनमुख प्रणिपत कीच रे ॥ सु० ॥ शु० ॥
 ॥ ३ ॥ तब हरिबल पूछं बणिकने, अम बोद पनावो गेह रे ॥
 ॥ सु० ॥ वास करु भमें जई तिरी, एतो लहीये मुख ससनेह
 रे ॥ सु० ॥ शु० ॥ ४ ॥ जीरे तब कर जोडी बणिक ने, हरि
 चलने बरे मनहार रे ॥ सु० ॥ अम घरे आवो प्रादुषा, अमें
 देश मोहोई आगार रे ॥ सु० ॥ शु० ॥ ५ ॥ जीरे आग्रह क
 शने बणिक ने, वेदी भाव्यो निज आगार रे ॥ सु० ॥ भगति जुग
 ति भलि साचरी, एतो देई भीठा आहार रे ॥ सु० ॥ शु० ॥ ६ ॥
 जीरे बणिक हगिबल कारणें, रेखाने दीया आवाम रे ॥ सु० ॥
 बनेकरपणनय मालीयां, एतो सोह रदि जुं मकाग्र रे ॥ सु०
 ॥ शु० ॥ ७ ॥ एतो दारा करयो जह तेहमें, एतो हरिचलें आ
 नि उल्लास रे ॥ सु० ॥ शकुनतणा परभावयी, एतो पुण्ये ल
 दितां मुसास रे ॥ सु० ॥ शु० ॥ ८ ॥ दिने हरिबल पूछं बणिक

ने, तुम नाम कहो गुगुर्वन रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 मुष्ट नाम छे श्रीर्षात मन रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 मुष्टी तव हृद्विले आयात रात रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 मनमानीयो, एता रिग्दारा ॥ सु० ॥ १६ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 ॥ सु० ॥ १७ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 ॥ सु० ॥ १९ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ २० ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 दान उछाह रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ २२ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 लना घोठ अथाह रे ॥ सु० ॥ २३ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 मुदंगना, एतो वात नाह रे ॥ सु० ॥ २५ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ २६ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 प्राभवा, एतो श्रीव नाह रे ॥ सु० ॥ २७ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ २८ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 पुष्पे वातहो, एतो हाह रे ॥ सु० ॥ २९ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ ३० ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 नृप भागले, एतो हाह रे ॥ सु० ॥ ३१ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ ३२ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 ॥ सु० ॥ ३३ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ ३४ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ ३५ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 ॥ सु० ॥ ३६ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ ३७ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ ३८ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 शी प्राहुणो जोर रे ॥ सु० ॥ ३९ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ ४० ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 अभ चकार रे ॥ सु० ॥ ४१ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ ४२ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 एतो हृद्विल केरी वात रे ॥ सु० ॥ ४३ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ ४४ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 वीरवठ केरी जात रे ॥ सु० ॥ ४५ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ ४६ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 भर्ता, एतो मनमें हृभो बैराण रे ॥ सु० ॥ ४७ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ ४८ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 एतो जोरु ते आह ॥ सु० ॥ ४९ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥ ५० ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 नृप तदा, एतो मयिरने दीव अदिश रे ॥ सु० ॥ ५१ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 तेराने, तमें आवजो अथ विशेष रे ॥ सु० ॥ ५२ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 भविष्य सचिव निहां जई, हृद्विलने कीव प्रणाम रे ॥ सु० ॥ ५३ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥
 हृद्विलने तेइ तुम अछे, तुम आरो आनमरान रे ॥ सु० ॥ ५४ ॥ अथ अथ रे ॥ सु० ॥

॥ २० ॥ उद्यो हरिबल ततखिणे, चन्द्रो अश्व रत्न गुण गेर रे
 ॥ सु० ॥ भेट मली नृप आगले, जड मूली नृप मणमेह रे ॥
 ॥ सु० ॥ शु० ॥ २१ ॥ नृप पण हनिबलने तदा, एतो उठीने दी
 धी बांद रे ॥ सु० ॥ घेडा एकण गादीये, एतो हरिबल नृप ख
 पटाइ रे ॥ सु० ॥ शु० ॥ २२ ॥ आगम नंगमनी करी, एतो
 रे घडी पानगी गोठि रे ॥ सु० ॥ अन्यो अन्य राजी पपा,
 निम का चढे साकर पोठि रे ॥ सु० ॥ शु० ॥ २३ ॥ सागर
 देव ममादयी, एतो हरिबल केरु तेज रे ॥ सु० ॥ राग्यसमा
 दिक नृप मनु, एतो देखी बाध्युं हेज रे ॥ सु० ॥ शु० ॥
 ॥ २४ ॥ बंदीजन बिरदावनी, एतो धोले सत्री बंध रे ॥ सु०
 ॥ माता बीगये जननीयो, एतो बीरबल कुल अवतंस रे ॥
 सु० ॥ शु० ॥ २५ ॥ हरिबल गुन नृप सांमली, एतो मंशीसर
 पद दीव रे ॥ सु० ॥ आम्पन अगे ठवी, एतो नृपे निजबंध
 व कीर रे ॥ सु० ॥ शु० ॥ २६ ॥ अश्व अमृक पालसी, एतो
 हरिबल बदरा काज रे ॥ सु० ॥ एतो भाये नृप हपे करी,
 एतो मरल वसानी लाज रे ॥ सु० ॥ शु० ॥ २७ ॥ एतो म
 ले भाव्या तुमे नपामे, तुम आरे बध्युं हम हेज रे ॥ सु० ॥
 नगरी अम पारन धई, एतो दिन दिन बदरे तेज रे ॥ सु० ॥
 ॥ शु० ॥ २८ ॥ इम मनमानी सोलावियो, एतो बमंतसिनि
 गेर रे ॥ सु० ॥ मरि कहे दाळ आटयो, एतो पुण्ये लज्जे
 पर रे ॥ सु० ॥ शु० ॥ २९ ॥

॥ इहा ॥ हरिबल ने निज भंडि, भाव्यो करो आदंग ॥
 बमंत मिरि हग्वित यई. देखी दिगो रंग ॥ ॥ १ ॥ पदन
 पेन नृपनी मदा, मारे निमदिन नेव ॥ बांध जोर दरगानी,
 होयक करे वज्जेव ॥ २ ॥ हान हुडन हरिबल ठनी,
 एतो बिदादानक ॥ सोरण सचिव कोरे रदा, अलगा यई

॥ ख० ॥ ४ ॥ तुमयो धावो अये महोद्य, तुमैं छो वोंछत
 पोद्य रे ॥ तुमैं छो गिरुवा गापर पेद्य, तुम नजरे याउं घेद्य रे
 ॥ ख० ॥ ५ ॥ तुम छिर महोद्यो छे परमेसर, जगाशिर प्रभु तुमैं
 सहना रे ॥ तुमैं छो जगमें कर्मा हर्ता, शुं कहीये विवहना रे
 ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणिपरें मीठे बचनें नृपने, रीसवो हरिवल बोलै रे ॥
 अरज मुजो एक प्रभुजी हमागी, नोतरु बचन ते सोलै रे ॥
 ॥ ख० ॥ ७ ॥ नगर सहित तुमैं राज पवारो, हम घरे भोज
 न कवा रे ॥ हुं आच्यो छुं तेहवा सार, तुमने जिमण आचर
 वा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ नव हरस्तिन घड नृप परिवारे, हरिवल
 मंदिर आवै रे ॥ सोवन बाल कचोलां मांटी, निजस्त्री पासैं
 पिग्मावे रे ॥ ख० ॥ ९ ॥ कुमारी नवनवा भिणगार पेहरी, नृ
 पने भोजन पीरसे रे ॥ हरिवल पिण नृप जिमना नाखे, पंगे
 पवन जगीसे रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविश जातनां सुखडी पिर
 सी, फलने मीटा मेवा रे ॥ सिंहकेमरोया मोदक महोद्य, देखे
 आरोगे एहवा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत पारु न आंवां पोली,
 भीखंड सीरा मुंहाली रे ॥ शाल दाज ने घृत पगनालि, पिर
 से ज्यु गंगा बाली रे ॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां खाटां तित्तां व्यं
 जन, धर्मीश जातिनां घामे रे ॥ नृप आठें नगरीमहानन ते, जिम
 तां ह्ति न पावे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ जिमतां जिमतां अन्योभन्ये,
 रसयनी जीभे बखाणे रे ॥ के शुं देव आकर्षी रसोइ, हरिवलें
 करि दण ठाणे रे ॥ ख० ॥ १४ ॥ रसीयावाटे मिल्या जन
 लार, मुजे मन आलहादे रे ॥ अमली मंगी जंगी जन ते, कीचां
 भोजन खादे रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपागी तरोल रंगे, द्रै
 मुखरामनी व्की रे ॥ इण परि नगरी मागी जिमादी, भागेलें
 चोगा ह्की रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ एमैं जस पढटो बजटासी, ह
 रिवलें ते जस लीयुं रे ॥ धीवर कूज लदि दाम्बक पोत, मुहुन

भक्त ॥ ३ ॥ हरिचल नृपनृं एक मन, दीर्घता दन
 वाजी पूरण भीतही, ड्युं नख मांसने हाथ ॥ ४ ॥
 सिरि अपठर समी, पाणी पुण्य संयोग ॥ दीर्घदृक भुज
 हरिचल भोगेवे भोग ॥ ५ ॥ एक दिन बेडा रंगने,
 करे विचार ॥ नृप नगरने नीतरी, दीर्घ भोजन सार
 ॥ ६ ॥ तब प्यागी पियुने कहै, सांभलो प्राणावरि ॥
 बातें कृप ना करे, करता पुण्य उपचार ॥ ७ ॥ पण
 बात विचार छे, धारो चित्त मगार ॥ दीपक लेइ दे
 तेदी नृप आगार ॥ ८ ॥ नृप मंत्री ने चाडीयो, काग
 मोनार ॥ एता नेहे आपणां, कीर्ति कांदि प्रकार ॥ ९ ॥
 माटे नृपने कहै, करजो समजी काय ॥ नृप नगरने
 यो भोजन अभिमान ॥ १० ॥ सांभल गोरी माहरी,
 कही तै बात ॥ जो छे दाशढा पावरा, जुं करसे नृप पा
 ॥ ११ ॥ एखे बैसि आशुता, पुखे पाय डिलाय ॥ पुण्य
 ल जां कीर्तिये, तो मयकां दुख जाय ॥ १२ ॥ ते माटे
 मल प्रिया, जां मय दीर्घ आय ॥ निनजे हाथे दीर्घये,
 ते आबे साय ॥ १३ ॥

॥ दाऊ ५ मी ॥ गगनर दन परिवर सुंदर ॥ अयरा ॥
 कही आप्या जव गते ॥ ए देशी ॥ छिने हरिचल
 पाने, भातमगै भेरी रे ॥ गोष्ठम तंडुल मिथिरी संदा,
 मामग्री बेटी रे ॥ १ ॥ गडगम भोजन सार निवारि,
 देव मभारे रे ॥ नीतर देवा नृप दग्गारे, हरिचल पोते जां
 ॥ म० ॥ २ ॥ आग्रह करि निज आसन आवे, हरिचलने नृ
 हने रे ॥ मदनरोग कहै हरिचलने, तुम छे जीवन जने रे
 ॥ ग० ॥ १ ॥ तब नृपने हरिचल कर जोडी, मांसे सां
 स्तापी रे ॥ हुं मेवक छे नृप पद केगे, नृप मूत्र अनाजानी रे

॥ ख० ॥ ४ ॥ तुमथो यवो अमें महोटा, तुमें छो वंछित
 पोटा रे ॥ तुमें छो गिरवा गापर पेडा, तुम नजरे धाउं घेडा रे
 ॥ ख० ॥ ५ ॥ तुम शिर महोटो छे परमेसर, जगशिर प्रभु तुमें
 सहना रे ॥ तुमें छो जगमें कर्ता हर्ता, शृं कहीये बिबहना रे
 ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणिपरें भीडे बचने नृपने, रीसवी हरिवल बोले रे ॥
 अरज मुजो एक प्रभुजी हमागी, नोतरु बचन ते खोले रे ॥
 ॥ ख० ॥ ७ ॥ नगर सहित तुमें राज पवारो, हम परे भोज
 न कवा रे ॥ हुं आप्यो छुं तेडवा सारु, तुमने निमण आचर
 वा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ सब हरस्तित यह रुप परिवारें, हरिवल
 मंदिर आवे रे ॥ सोवन बाल कचोलां मांढी, निजसी पास
 पिग्सावे रे ॥ ख० ॥ ९ ॥ कुमनी नवनवा निमणार पेहरी, नृ
 पने भोजन पीरसे रे ॥ हरिवल निण नृप निमता नाखे, पंखे
 पवन जगीसे रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविश जातनां सुखदी पिर
 सी, फलने पीडा मेवा रे ॥ मिहंमरीया मोदक महोटा, देखे
 आगेगे एहवा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत पाक न आंयां पौली,
 भीगंड सीरा मुंहाली रे ॥ शाल दाळ ने घृत परनालि, पिर
 से ज्यु गंगा बाली रे ॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां खादां तिखां व्यं
 जन, धर्मीश जातिनां घामे रे ॥ नृप आदे नगरीमहाजन ते, निम
 तां हमि न पांवे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ निमतां निमनां अण्योअण्ये,
 रसनी जीभे बखाणे रे ॥ के शृं देव आकृषीं गरोह, हरिवले
 करि दण टाणे रे ॥ ख० ॥ १४ ॥ रसीपावाले पित्या जन
 जगर, हुंने धन आल्हादे रे ॥ अमली भंगी जंगी जन ते, कीयां
 भोजन खादे रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपागी तखोळ रंगे, दू
 मुखरासनी बूकी रे ॥ इण परि नगरी सारी जिनादी, भागोले
 चोग्या मूकी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ एरने जस पडदो बजटावी, ह
 रिवले ते जस लीधुं रे ॥ धावर कूड लटि हागेवर पाने, मुहने

भक्त ॥ ३ ॥ हरिवल नृपनं एक मन, दीर्घता ॥
 सात्री एग्य भीतही, ड्युं नख मांसने होय ॥ ४ ॥
 सिंगि अपठर समां, पापी पुण्य संयोग ॥ दोमंडरु मुर्न
 हरिवल भोगवे भोग ॥ ५ ॥ एक दिन वेग रंगम,
 करे विचार ॥ नृप नगरीने नोतरी, दीर्घ भोजन स
 ॥ ६ ॥ तत्र प्यारी पिपुने कहे, सांभलो माणाधारे ।
 बांते कृण ना करे, करतां पुण्य उपचार ॥ ७ ॥ प
 बात विचार छे, धारो चित्त मातर ॥ दीपक लें दे
 तेडी नृप आगार ॥ ८ ॥ नृप मंत्री ने घाटीयो, का
 मानार ॥ एता नोहे आपणां, कीर्ति कोंदि प्रकार ॥ ९
 माटे तुमने कहे, करजो समजो काम ॥ नृप नगरीने
 धां भोजन अभिमान ॥ १० ॥ सांभल गोरी मादरी,
 कही ते बात ॥ जो छे दादादा पाधरा, छे करशे नृप
 ॥ ११ ॥ एग्ये पैगी भांशला, पुण्य पाप डिलाय ॥ पुण्य
 छे जो कीर्तिये, सो मयलां दुख जाय ॥ १२ ॥ ते माटे
 भक्त मिया, जो मनु दीर्घ आय ॥ निनजे हाथे दीर्घये,
 ते भावे माय ॥ १३ ॥

॥ दाऊ १. मी ॥ गगनर दन परपर सुंदर ॥ भयरा ॥ ए
 कही आव्यो जव गने ॥ ए देवी ॥ दिवे हरिवल
 धरीने, भातमग्न भेरी रे ॥ गोधूम तंडुल निमिरी रंदा,
 मामग्री बेरी रे ॥ १ ॥ सटस भोजन सार निवाई. म.
 देव मभाई रे ॥ नोतर देवा नृप दग्वारो, हरिवल पोते जावे
 ॥ म० ॥ २ ॥ आग्रह करि निज आसन आपे, हरिवलने
 हने र ॥ मदनरोग कहे हरिवलने, तुम छे जीवन जेते रे
 ॥ म० ॥ ३ ॥ नृप नृपने हरिवल कर जोरी, बांति सांभ
 पानी रे ॥ हुं मरु छे तुम पद केगे, तुम पुत्र अनाजानी रे

। ख० ॥ ४ ॥ तुमथी यन्त्रो अमें महोटा, तुमें छो बंछित
 मोटा रे ॥ तुमें छो गिरुवा सापर पेडा, तुम नजरे याउं घेडा रे
 ॥ ख० ॥ ५ ॥ तुम शिर महोटे छे परमेसर, जगेशिर प्रभु तुमें
 सहना रे ॥ तुमें छो जगमें कर्ना हर्ता, शुं कहीये विवहना रे
 ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणिपर मीठे वचनें नृपने, रीसवो हरियल बोले रे ॥
 अरज मुणो एक प्रभुजी हमागी, नोतर वचन ते खोले रे ॥
 ॥ ख० ॥ ७ ॥ नगर सहित तुमें राज पवारो, रुप घर भोज
 न कम्हा रे ॥ हुं आन्यो छुं तेहवा साल, तुमने निमण आचर
 वा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ तव हरखिन यड नृप परिवारे, हरियल
 मंदिर आवे रे ॥ सोवन थाल कनोलां माटी, निजत्ता पास
 पिग्सावे रे ॥ ख० ॥ ९ ॥ कुमरी भवनवा शिणगार पेहरी, नृ
 पने भोजन परसे रे ॥ हरियल पिण नृप जिमना नासि, परे
 पवन जगीसे रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविश जातनी सम्वदी पिर
 सी, फलने मीठा मेवा रे ॥ मिहकसरिया मोदक महोडा, देखे
 आगेगे पहवा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत पाक न आयां पाली,
 भीमंड सीरा सुंदाली रे ॥ साल दाल ने गृत परनाल, पिर
 से जु गगा बाली रे ॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां गारां तित्तां व्यं
 जन, बर्षां जातिनां घामे रे ॥ नृप आदे नगरीमहाजन ते, निम
 तां हृति न पामे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ निमतां निमतां अन्धोअन्धे,
 रसवती जीमे वखाणे रे ॥ के शुं देव आकषीं रमोह, हरियले
 परि टण टाणे रे ॥ ख० ॥ १४ ॥ रनीयावाडे मित्यां जन
 जार, सुत्रे मन आहदादे रे ॥ अमली भंगी जंगी जन ते, कीयां
 भोजन खादे रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपारी तेरोल रंगे, दे
 मुखवामनी धुकी रे ॥ इण पारे नगरी सारी जिनादी, भागोले
 पोसा मूवी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ एमे जस पदरो बगटावी, ह
 गिले ते जस नीरु रे ॥ धीवर कुष्ठ लहि हागेवच पाने, मुहन

भक्त ॥ ३ ॥ हरिवल नृपतुं एक मन, दीर्घता ॥
 धात्री पुष्प मीतदी, इयं नर मांसने होय ॥ ४ ॥
 तिरि अवलर ममा, पाथी पुष्प संयोग ॥ दोगंडक मुरती
 हरिवल भोगवे भोग ॥ ५ ॥ एक दिन बेडा रंगने,
 करे विचार ॥ नृप नगरने नोतरी, दीर्घ भोजन सार
 ॥ ६ ॥ तब प्यारी पियुने कहे, सांभलो प्राणाधार ॥
 बाते कण ना कहे, करतां पुष्प उपचार ॥ ७ ॥ एन
 बात विचार छे, धामे चित्त मगार ॥ दीपक लेइ दे
 तेई नृप आगार ॥ ८ ॥ नृप मंत्री ने चाटीयो, काग
 सोनार ॥ एना नोहे आपणा, कीजे कोडि प्रकार ॥ ९ ॥
 माटे तूपने कहं, करजो समजी काम ॥ नृप नगरने नो
 यो भोजन अभिमान ॥ १० ॥ सांभल गोरी माररी,
 कही ते बात ॥ जो छे दाशदा पाथरा, नृप करके नृप
 ॥ ११ ॥ पुष्प पैरी आंखला, पुष्प पाप डिलाय ॥ पुष्प
 ल जो कीनिये, नो मयलां दुख जाय ॥ १२ ॥ ते माटे
 मल दिया, जो प्रभु दीर्घ आय ॥ निनणे दाथे दीर्घने,
 ते भावे साथ ॥ १३ ॥

॥ दाऊ ० श्री ॥ गगनर दन पुंवर सुंदर ॥ भयरा ॥
 कही आख्या जग गने ॥ ए देसी ॥ द्वि हरिवल
 यनीन, भातमगने भेली रे ॥ गोधूम तंदुल मिथिरी लंदा,
 मायरी मेथी रे ॥ १ ॥ गदगद भोजन सार निवारि.
 देर प्रभावे रे ॥ नोतर देश नृप दग्गारे, हरिवल पोने ज
 ॥ म० ॥ २ ॥ आग्रह करि निज भासन आपे, हरिवलने
 हने ॥ मदनरेग कहे हरिवलने, नृप छे जीवन जेने
 ॥ म० ॥ ३ ॥ नर नृपने हरिवल कर जोडी, मांसे म
 स्तानी रे ॥ हुं मेवक छे तूप पद केगे, नृप मृग अतरजानी

॥ ख० ॥ ४ ॥ तुमथो थावो अमें महोटा, तुमें छो वंछित
 पोटा रे ॥ तुमें छो गिहवा सायर पेटा, तुम नजरें थाउं घेटा रे
 ॥ ख० ॥ ५ ॥ तुम शिर महोटा छे परमेसर, जगशिर प्रभु तुमें
 सहना रे ॥ तुमें छो जगमें कर्ना हर्ना, भुं कहीये विवहना रे
 ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणपरें मीठे वचनें नृपने, रीसवो हरिवल बोले रे ॥
 अरज मुणो एक प्रभुजी हमारी, नोतहं वचन ते खोले रे ॥
 ॥ ख० ॥ ७ ॥ नगर सहित तुमें राज पयारो, इम धरे भोज
 न कवा रे ॥ हुं आख्यां छुं तेहवा सार, तुमने जिमण आचा
 वा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ तव हरखित यइ नृप परिवारें, हरिवल
 मंदिर आवे रे ॥ सोवन थाल द्योलां मांटी, निजसो पारें
 पिरसावें रे ॥ ख० ॥ ९ ॥ कुमारी नवनवा शिणमार पेहरी, न
 पने भोजन पीरसे रे ॥ हरिवल पिण नृप जिमता नाख, परें
 पवन जगीसे रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविश जातनां सुखही पि
 सी, फलने थोडा मेवा रे ॥ सिंहकेसरीया मोदक महोटा, दे
 आगेणे णहवा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत पाक न आंवां पोली
 शींगंड सीरा मुंहाली रे ॥ शाल दाल ने शृत परनालि, पि
 से शु गंगा चाली रे ॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां खाटां तिरां व
 जन, बघीस जातिनां धामे रे ॥ नृप आदे नगरीमहाजन ते, जि
 तां हसि न पामे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ जिमतां जिमतां अन्योअन्ये
 रसवर्नी जीभे वखाणे रे ॥ के भुं देव आकपी रसोह, हरिवां
 फरि दण टाणे रे ॥ ख० ॥ १४ ॥ रमीयावाजे मिह्या ज
 छार, सुत्रे मन आलहादे रे ॥ अमली भंगी जंगी जन ते, कीर
 भोजन स्वादे रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपारी तरांग रंगे,
 मुखवासनी वकी रे ॥ इण परि नगरी सारी जिनाही, भागो
 पोता मूकी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ पुरमें जस पडहो बमदारी,
 रिबल ते जस वीधुं रे ॥ धीवर कूळ सहि हरिवन पोट, लुट

भक्त ॥ ३ ॥ हरिवल नृपतुं एक मन, दीसता दन
 पात्री पूरण भीतही, ड्युं नख मांसने होय ॥ ४ ॥
 सिरि.अपछर समो, पात्री पुण्य संयोग ॥ दोमंडुं मुर्ता
 हरिवल भोगेवे भोग ॥ ५ ॥ एक दिन वेडा रंगने,
 करे विचार ॥ नृप नगरीने नोतरी, दीजे भोजन सार
 ॥ ६ ॥ तत्र प्यारी पियुने कहे, सांभलो माणावोर ॥
 वातें कृण ना करे, करतां पुण्य उपचार ॥ ७ ॥ पण
 बात विचार छे, धारो चित्त मझार ॥ दीपक लेइ दे-
 तेडी नृप आगार ॥ ८ ॥ नृप मंत्री ने घाटीयो, काग
 मोनार ॥ एता नोहे आपणां, कीजे कोडि प्रकार ॥ ९ ॥
 माटे तुमने कहें, कजो समजी काम ॥ नृप नगरीने ने
 यो भोजन अभिमान ॥ १० ॥ सांभल गोगी माहरी,
 कही ते बात ॥ जो छे दाडादा पावरा, हुं फरसे नृप
 ॥ ११ ॥ पुण्ये वैशि आश्ला, पुण्ये पाप ठिलाप ॥ पुण्य
 ल जो कीजिये, तो सचलां वृत्त जाय ॥ १२ ॥ ते माटे
 मन्त्र मिया, जो प्रभु दीधी आय ॥ जिनणे हाथे दीजिये,
 ते आवे साय ॥ १३ ॥

॥ दाऊ ९ मी ॥ गणधर दन पूर्वपर मुंदर ॥ अधरा ॥
 कही आव्यो जब गते ॥ ए देखी ॥ दिवे हरिवल
 धरिने, भातमग्गे भेली रे ॥ गोधूम तंदुल निशिरी खंडा,
 सामग्री मेळी रे ॥ १ ॥ स्वयं भोजन सार निगारि.
 देव ममां रे ॥ नोतरं देवा नृप दरबारें, हरिवल पोतें जां
 ॥ म० ॥ २ ॥ आग्रह करि निज आसन आपे, हरिवलने
 हें र ॥ मदनरेण कंड हरिवलने, तुपें छे जीवन जेने रे
 ॥ म० ॥ ३ ॥ तत्र नृपने हरिवल कर जोडी, मांसे सांभ
 स्ताभी रे ॥ हुं सेंवक छे तुम पद केगे, तुम मुझ अनरजानी रे

॥ ख० ॥ ४ ॥ तुमथी यावो अमें महोय, तुमें छो बंछित
 पोय रे ॥ तुमें छो गिरुवा गायर पेय, तुम नजरें याउं घेय रे
 ॥ ख० ॥ ५ ॥ तुम गिर महोय छे परमेसर, जगेशर प्रभु तुमें
 सहना रे ॥ तुमें छो जगमें कर्ता हर्ता, शं कहीयें विवहना रे
 ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणिपरें मीठे वचनैं नृपने, रीसवो हरिवल बोले रे ॥
 अरज मुणो एक प्रभुजी हमारी, नोतरं वचन ते खोले रे ॥
 ॥ ख० ॥ ७ ॥ नगर सहित तुमें राज पवारो, इप परें भोजन
 न कया रे ॥ हुं आन्यो छुं तेहवा सार, नृमने निमण आयर
 वा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ उव हरखित यह नृप परिवारें, हरिवल
 मंदिर आवे रे ॥ सोवन थाल कचोलां मांढी, निजस्त्री पासैं
 पिरसावे रे ॥ ख० ॥ ९ ॥ कुमारी नवनवा निमणार पहरी, नृ
 पन भोजन पीरसे रे ॥ हरिवल पिण नृप निमता नास, परें
 पवन जगीमें रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविंश ज्ञानना सुखही पिर
 सी, फलने मीठा मेवा रे ॥ सिंहकेसरीया मोदक महोश, देवें
 आगेमें एहवा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत पाक न आवां पोली,
 भीगंड सीरा मुंहाली रे ॥ शाल दाज ने धृत परनालि, पिर
 से ज्यु गंगा बाली रे ॥ ख० ॥ १२ ॥ स्वारां खाटां तिरां व्य
 जन, बघीन जानिनां धामे रे ॥ नृप आठें नगरीमहाजन ते, निम
 तां हृषि न पावे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ निमतां निपतां अन्पोअन्पे,
 रसवती जीमें वखाणे रे ॥ के शं देव आकपीं गसोइ, हरिवलें
 करि इण टाणे रे ॥ ख० ॥ १४ ॥ रनीयावाले दिव्या जन
 जार, झुंज मन आल्हादे रे ॥ अमली भंगी जंगी जन ते, कीपां
 भोजन स्वादे रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपारी तंकोल रंगे, दै
 मुखरामनी वृकी रे ॥ इण परि नगरी सारी जिनाही, भागोले
 चोगा मूकी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ पुरमें जस पदहो बजडाती, ह
 रिवले ते जस लीधुं रे ॥ धीवर कृष्ण लटि हाग्वन पान, मुहव

केशर अमर दो भ्राता, रवि शशिपरें दीपना रे ॥ ख० ॥
 ॥ २० ॥ ते गुरुचरण पसायें लब्धि, पुण्य उपर परबंध रे ॥
 ॥ २१ ॥ हरेला उल्लास कसो नव डाले, हारेबल केरो संबंध रे ॥ ख० ॥ २१ ॥
 ॥ इति श्रीहरेवलचरित्रे हरिवल राजर्षि पुरवर्णन नृपवर्णना
 दि प्रथमउल्लासः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयउल्लासः प्रारंभ्यते ॥

॥ इहा ॥ परम व्योति प्रकाश कर, त्रिभुवन निलक समान
 ॥ गरिब निवान गोदी घर्षी, भयभंजन भगवान ॥ १ ॥
 ॥ अविनाशी अव्यय अरुण, अशरीरी अरिहंत ॥ ज्योतिरूप जग
 दीश जे, ते प्रणमुं शुभ संत ॥ २ ॥ कविजन हृदय महीतलें,
 शारद मान विशाल ॥ वचनामृत वरमें सदा, प्रगट थई उजमाल
 ॥ ३ ॥ मूरख मूंगां बोवडा, अकलविदुषा जेह ॥ तस घट
 भीतमें बसी, सुरगुरु सम करे तट ॥ ४ ॥ परउपगारी मातजी,
 थाला त्रिपुरा साय ॥ ते हुं प्रणमुं भारती, निम मुझ यंछित
 होय ॥ ५ ॥ कौविद केशर अमरना, चरण कमल नमि ताम
 ॥ हरिचल मल्लीमायनी, पभंगुं विजो उल्लास ॥ ६ ॥ रंगीली
 जनसभा, सांमल बेचक जाण ॥ यथकानी परें रसलील, गुण
 बंत भाव प्रमाण ॥ ७ ॥ सरस नीरस रमिया लहे, चानुर
 येथक जेह ॥ पण मृगय पशु बापटा, हुं जाणि रस तेह ॥ ८ ॥
 सांम निन्त मयक लहे, जे सेवे वनभाय ॥ यथं हुं जाणे नी
 वशे, मूकां लकड खाय ॥ ९ ॥ सटपट सारिमा चतुर नर,
 बेरक वनन रसाळ ॥ राचे सरम कया मुणी, दिहया तजी वि
 चाड ॥ १० ॥ वक्ताने थोना मुणी, साढामो साढाभी दष्ट ॥
 एक सरिरी जो हवे, मुगतां उपजे मिष्ट ॥ ११ ॥ तेजाटे भा

कारज काँधुं रे ॥ स्व० ॥ १७ ॥ मद्ने बेगें रसवती जिमतां
संतोसरी ते दीडी रे ॥ मृगनयणीनुं रूप मुकौमल, देखत
मीडी रे ॥ स्व० ॥ १८ ॥ नृपनुं मन विच्छल ययुं जिमतां, कामे
थो जेरो रे ॥ नृप चित्ते मुद्रा स्त्री छे भलेरी, पण नहि
तोरी रे ॥ स्व० ॥ १९ ॥ खटरस भोजननी मुघडाई,
मनमें येडी रे ॥ कामध्वरयो भोजन भूल्यो, स्त्रीनां
रे ॥ स्व० ॥ २० ॥ स्वायुं नरवायुं करीने नृपते, मन विमनो
व्यो रे ॥ असेनियो यह नृप घरे बलीयो, जाणे
व्यो रे ॥ स्व० ॥ २१ ॥ चमकी चितमें चतुरा ततरिण,
नृप मन विगड्युं रे ॥ तब प्रीतमने कहे निज प्यारी, चेतो
हेत उपड्युं रे ॥ स्व० ॥ २२ ॥ तब हरिवल कहे सांभल
भाती दशे ने धासे रे ॥ सणसे ने पडसे स्वार्थी, आपण
न जासे रे ॥ स्व० ॥ २३ ॥ चिहुं जगमें हरिवलनी कीर्ति,
ले गुणिजन जीहा रे ॥ सुखे समाये देवति दोये, सुपमे
दे दीडा रे ॥ स्व० ॥ २४ ॥ जेजो भविषा धीवर जाति,
जो जीर उगाव्यो रे ॥ सुन्मानिद्र मनचंचित कलियुं,
जग विस्तारयो रे ॥ स्व० ॥ २५ ॥ शुद्ध धर्मपर सोइ
हीगरेजय सरिगया रे ॥ साठ अकबर जे प्रतिनोरी,
दीपाया रे ॥ स्व० ॥ २६ ॥ तम शिष्य धर्मविजय धर्मधोरी, सयल
धर्म जाते रे ॥ कोरिदगिर मुकुमग्रि सोहे, तस शिष्य
द्वय गजे रे ॥ स्व० ॥ २७ ॥ तस शिष्य कुशलविजय कवि
दिनमणि तेज सयाया रे ॥ तम बंधन गाणे कमल विजय
तम धनज्ञान मुद्राया रे ॥ स्व० ॥ २८ ॥ तम शिष्य पंडित
धर्मी विजय मुद्र, सोहि मायु नगीना रे ॥ ज्ञान क्रिया
शुं आनयो, आनय मायन कौना रे ॥ स्व० ॥ २९ ॥ तम
प्य दो दृश मायु शिरोमणि, कुमनो मद शीघंता रे ॥

॥ आ० ॥ आप्या नेही लवाने ॥ ८ ॥ भरदा धुवा जेह,
 कारण कोरे तेह ॥ आ० ॥ आप्या ते शीघ्र घुणवता ॥ जही
 घुणोना जान, गाल्दी करुता वगण ॥ आ० ॥ आप्या ते आप
 सगणता ॥ ९ ॥ बीगडला जे कडाप, इनुपन हाक पनाय ॥
 आ० ॥ आप्या ते शक्ति उपासनी ॥ भगन वेगगी पाप, लांवा
 दीलां बनाय ॥ आ० ॥ आप्याने दंत उवागनी ॥ १० ॥ इणि
 परे निनिषा शोक, उदरने कारण फोक ॥ आ० ॥ चिकित्सा
 कावा सुव तपो ॥ निज निज तं कला सदे, कावा पांही अ
 गर्व ॥ आ० ॥ निज निज जस लेवा भणी ॥ ११ ॥ कहे
 एक नाही देव, नृपने मो रोग अघेप ॥ आ० ॥ दाह उदर
 सुपनी नदी ॥ रांभी कोले बैप, ऐ सुझ गोली मय ॥ आ० ॥
 छत्रीस रोग हने मदी ॥ १२ ॥ जे हवा बैप ते गर्व, मनसुं रा
 मना मी ॥ आ० ॥ जाली दड पोपी गदा ॥ बटु ते कांय उ
 पाय, पन नुरगेन न जाय ॥ आ० ॥ बैप बसुव पोपी बदा
 ॥ १३ ॥ सोन्हा गोली जान, मांवे एगन वनाण ॥ आ० ॥
 द्रव पीडा ऐ मदेने ॥ ते माटे कोरे दोन, जाय ज्युं रोगनो जो
 म ॥ आ० ॥ गोदान पो तुने कापने ॥ १४ ॥ जाय ज्यो
 मरा सन, त्रिप द्रव होरे दल्ल ॥ आ० ॥ ते द्रव नृपनी
 रजा करे ॥ सोन्हा भननन एव, मानो ने रिपु जेव ॥
 ॥ आ० ॥ हननी नूर सुख इषारे ॥ १५ ॥ एक रते पेटने मार,
 ऐ भरीने माहार ॥ आ० ॥ रेषनी गोनी कोजये ॥ रते
 एक गोनी रोग, पोतो छली सोन ॥ आ० ॥ पुरन हरी दी
 लो ॥ १६ ॥ हका सोने नमोद, नृपने मोडिन नरांम ॥
 आ० ॥ वेगगी रिपुन प ॥ पुणे घुणानी लीन, पांटे
 पोण ॥ आ० ॥ जान उदरे चिंता जे ॥ १७ ॥
 पांटी नेव, चाली दाहनी नेव ॥ आ० ॥ पन जे

बुक तुमैं, मांमलनो चित ल्हाय ॥ पग ने सुणार्न मन कगे,
 मटिपी किन्नर न्याय ॥ १२ ॥ नृपने तेडी हरिवल्ले, की
 थी भक्ति विल्ल्यान ॥ ते सुणनो मरियन तुमैं, शी शी
 निपजे वान ॥ १३ ॥

॥ दाल १ ली ॥ आछे लालनी देशी ॥ तेडी नृपने आ
 गार, भोगण नेउ मार ॥ आछे लाल ॥ हरिवल्ले कीव परेरा
 मणी ॥ मापी माणक लख लेय, अग आभूषण देय ॥ आ० ॥
 बोल्लाव्यो नृप गृह भणी ॥ १ ॥ मदनवेग नृप ताम, मंदिर व
 लियां ताम ॥ आ० ॥ वमनमिरी मनमें वमी ॥ अंगनारूप
 निहाल, मनमां थड चकचाल ॥ आ० ॥ नृप मननी डगरी
 गमी ॥ २ ॥ जीर गयो ललचाय, ड्यं मधु खग लपटाय ॥
 ॥ आ० ॥ काम वगे करी जून्वियो ॥ कामानुर धयो राय, आ
 कुल व्यारुल थाय ॥ आ० ॥ कामज्वरे नृप पुर्वियो ॥ ३ ॥
 पगरन थड नृप देह, अनभजम थोने तेह ॥ आ० ॥ विरुलपू
 र्ति पंग भयो ॥ ग्विग वाटिग ग्विग मांदि, जरुन पदे ग्विग
 पयांदि ॥ आ० ॥ कामिनीवाहन बहिगयो ॥ ४ ॥ न गमे कू
 सुमनी मेज, न गमे अनउनी हेज ॥ आ० ॥ राज काज पण न
 रि गमे ॥ न गमे पान तयोउ, न गमे वान दहोउ ॥ आ० ॥
 अन्न उदन्न मन नहि गमे ॥ ५ ॥ शयी परजाराळ, मदनवेग म
 छाल ॥ आ० ॥ बीराति बीर हनो रररो ॥ भोट वाण लागी
 भनेप, पट्यां गिट्या पेव ॥ आ० ॥ कामिनीये रुग्घां जाज
 रो ॥ ६ ॥ नृप थयो झुग्या अंगन, जार्नीये लाग्यो रैन ॥
 आ० ॥ मदन मरियन नेटोया ॥ पेहेनी नव नरा बेज, वर
 धव दाड अयेय ॥ आ० ॥ आया मनी न जेटिना ॥ ७ ॥
 जाग्या जार्नी विदेय, पट्या जे म्याना हपेय ॥ आ० ॥ तेह्यां
 ने वेद राजने ॥ दयो दिवे दोळ्यां नरे, जाज मरीण ने गरे

॥ आ० ॥ आग्या तेडी लवामने ॥ ८ ॥ भरडा भूवा जेह,
 कारण काहे तेह ॥ आ० ॥ आपा ते शीश धुगावता ॥ जडी
 घुशोना जाण, गान्डी करना वखाण ॥ आ० ॥ आया ते आप
 दखानता ॥ ९ ॥ बीगाडला जे कडाव, हनुमंत हाक बनाय ॥
 आ० ॥ आया ते शक्ति उपामनी ॥ भगत बेरागी घाय, लांवा
 शीला बनाय ॥ आ० ॥ आयाते दंत उवासनी ॥ १० ॥ इणि
 परे निलिया लोक, उदरने कारण फोक ॥ आ० ॥ बिकित्मा
 करवा नुर तणी ॥ निज निज ते कना सर्व, करवा मांडी अ
 गर्व ॥ आ० ॥ निज निज जश लेवा भणी ॥ ११ ॥ काहे
 एक नाडी देख, नुरने तो रोग अघेप ॥ आ० ॥ दाह ज्वर
 सूर्या लदी ॥ हांकी बोले वैद्य, छे मुष्ट गोडी सय ॥ आ० ॥
 छवीश रोग हणे सही ॥ १२ ॥ जे हना वैद्य ते सर्व, मनशं रा
 खना गर्व ॥ आ० ॥ पाली मठ पोपी रया ॥ बहु ते कोय उ
 पाय. पण नृगोग न जाय ॥ आ० ॥ वैद्य प्रमुख पोथी बछा
 ॥ १३ ॥ बोण्या जोशी तान, भांवे लगन प्रमाण ॥ आ० ॥
 ग्रह पीडा छे राखने ॥ ते भाटे करो होय, जाय ज्युं रोगनो जो
 य ॥ आ० ॥ गोदान घां तुम छावने ॥ १४ ॥ जाय जपो
 सवा सत्य, निम ग्रह होवे प्रत्यक्ष ॥ आ० ॥ ते ग्रह नृपनी
 रत्ना करे ॥ बोल्या भगतजन एव, मानो ने बिष्णु जेव ॥
 ॥ आ० ॥ हरनां नूर मुख बखरे ॥ १५ ॥ एक काहे पेटमें भार,
 ते भर्तृणी आहार ॥ आ० ॥ रेचनी गोली कोजिये ॥ वडे
 एक गांठनो रोग, पोथो छडी योग ॥ आ० ॥ चुरण घुई दी
 जिये ॥ १६ ॥ भूवा बोले जगोश, नृमने छोटिज नरांस ॥
 ॥ आ० ॥ वेत्यावली दिलगन थड ॥ धूणे घुगावी घ्राय, पाडे
 चहलो नाम ॥ आ० ॥ वाण उतारे बिना जड ॥ १७ ॥
 मांड्यां मांड्यां केय, वाज्यां टांकट्यां जेप ॥ आ० ॥ पण छे

युक्त नृपे, सांभलजो चित लाय ॥ पग ते मुणजां मन को,
महिषी किन्नर न्याय ॥ १२ ॥ नृपने तेही हरिवलें, की
धी भक्ति विख्यात ॥ ते मुणजो भविष्यत-तुम, सी श्री
निपजे यात ॥ १३ ॥

॥ दाल १ ली ॥ आछे लालनी देखी ॥ तेही नृपने आ
गार, भोयण देइ सार ॥ आछे लाल ॥ हरिवलें कीय पदेरा
मणी ॥ माथी माणक लख लेय, अंग आभूषण देय ॥ आ० ॥
बोलाव्यो नृप गृह भणी ॥ १ ॥ मदनवेग नृप ताम, मंदिर क
लियो जाम ॥ आ० ॥ वसंतसिरी मनमें बसी ॥ अंगनारूप
निहाल, मनमां थइ चक्रचाल ॥ आ० ॥ नृप मननी दगनी
रसी ॥ २ ॥ जीव गयो नलचाय, अंग मधु रंग लपटाय ॥
॥ आ० ॥ काम बसैं करी जूरियो ॥ कामातुर थयो राय, आ
कल व्याकूल धाय ॥ आ० ॥ कामग्वरें नृप पूरियो ॥ ३ ॥
परवश थइ नृप देह, असमंजस बोले तेह ॥ आ० ॥ विरल
नि पैं भयो ॥ त्विण बाहिर गिण मांदि, जरुन पदे गिण
वपांदि ॥ आ० ॥ कामिनीवाहण बहिगयो ॥ ४ ॥ न गमे कु
सुमनी सेज, न गमे अंतउनी हेज ॥ आ० ॥ राज काज पण न
दि गमे ॥ न गमे पान नवोउ, न गमे बात दहोल ॥ आ० ॥
अज्ञ उदर मन नहि रने ॥ ५ ॥ हवी परजावाल, मदनवेग
छराल ॥ आ० ॥ बीराधि बीर हतो सरौ ॥ मोह बाण लाग
अशेष. पख्यो गिरदा पेच ॥ आ० ॥ कामिनीपैं करघो जाम
रो ॥ ६ ॥ नृप थयो मूरछा अचेन, जार्णायें लाग्यो केन ॥
आ० ॥ मंदग्न राखिने भेटोया ॥ पदेही नव नवा वेश, न
धव धाउ अशेष ॥ आ० ॥ आया मनो न जेहिया ॥ ७ ॥
नाग्या जोरी विशेष, पट्टा जे स्याना हमेश ॥ आ० ॥ तेह
ने देह राजने ॥ दशो दिने दोह्यां सई, जाण मरीण ते स

॥ आ० ॥ आच्छा तेही लवाजने ॥ ८ ॥ भरदा भूवा जेठ,
कारण काटे तेह ॥ आ० ॥ आया ते शीश घृणावता ॥ जडी
वुष्टीना जाण, मारुडी करता वस्त्राण ॥ आ० ॥ आया ते आप
यत्नानता ॥ ९ ॥ बीराउला जे कडाप, हनुमंत हाक धजाय ॥
आ० ॥ आया ते शक्ति उपासनी ॥ भगन बेरागी धाय, लांवा
शीलां बनाय ॥ आ० ॥ आयांतें दंत उवासनी ॥ १० ॥ इणि
परें भिलिया लोक, उदरने कारण फोक ॥ आ० ॥ चिकित्सा
करवा लुप ठणी ॥ निज निज तें कला सर्व, करवा मांडी अ
गर्व ॥ आ० ॥ निज निज जश लेवा भणी ॥ ११ ॥ कहे
एक नाडी देख, नृपने नौ रोग अघेप ॥ आ० ॥ दाह ज्वर
मूर्च्छा लही ॥ रांकी बोले वैद्य, छे मृष्ट गोली सद्य ॥ आ० ॥
छत्ताश रोग हने सही ॥ १२ ॥ जे हता वैद्य ते सर्व, मनशुं रा
खता गर्व ॥ आ० ॥ पाली मठ पोपो रया ॥ बहु ते कीय उ
पाय, पण नृरोग न जाय ॥ आ० ॥ वैद्य ममुख पोथी यद्या
॥ १३ ॥ बोण्या जोडी जाण, भांखे लगन प्रमाण ॥ आ० ॥
ग्रह पीडा छे राखने ॥ ते माटे करो होय, जाय ज्युं रोगनो जो
म ॥ आ० ॥ मोटान घो तुम लायने ॥ १४ ॥ जाय जपो
सवा सल, निम ग्रह होवे मत्स्य ॥ आ० ॥ ते ग्रह नृपनी
रक्षा करे ॥ योद्या भगनमन एय, मानो ते त्रिपुणु जेन ॥
॥ आ० ॥ हसनां नृप मुख उखरे ॥ १५ ॥ एक करे पेटमें भार,
छे भर्जणे जाहार ॥ आ० ॥ रेवनी गोली कीनिये ॥ कहे
एक गांठनो रोग, पीडो छली योग ॥ आ० ॥ चूरण वुडी दी
निये ॥ १६ ॥ भूवा बोले जगोश, नृपने श्रोत्रिण खवीस ॥
॥ आ० ॥ वेलावठी चित्तमग धइ ॥ भूणे घृणाची जाण, पाटे
चट्टी चीस ॥ आ० ॥ बाण उतारे चिंता जइ ॥ १७ ॥
मांख्यां मांडलां केय, वाड्यां टांकुझां जेय ॥ आ० ॥ पण छे

से को नाचियां ॥ जेणें कसो जे जेम, तेणें वग्गुं ते तेम ॥
 आ० ॥ पण नृप चित्त न भावियां ॥ १८ ॥ एम अनेक उ
 पाय, भलभला जाण कहाय ॥ आ० ॥ जाणपणं पट्टी व
 न्या ॥ विरावला इना जेह, परवंधी पण तेह ॥ आ० ॥
 सिद्ध साधक सधला गल्या ॥ १९ ॥ भगन संन्यासी दूध,
 गलिया ज्युं पाणी लुळ ॥ आ० ॥ फोगट गाल फुलावता ॥
 जडी घुडीना जाण, वादीगग गया ठाण ॥ आ० ॥ जाण
 पणं जे हुंलावता ॥ २० ॥ तिणसवे मंत्री एक, जाणे शासति
 वेक ॥ आ० ॥ मेहर नामें मंत्रीसरु ॥ जिहां पोढ्या छे राप
 निहांकिण आच्यो धाय ॥ आ० ॥ नाडी जोड तिहां गुणकर ॥
 ॥ २१ ॥ जायो नाडी भेद, मंत्री लसो ते उपेद ॥ आ० ॥ क
 मगवरें ने नृप नटयो ॥ मूरजा न्या निण योग, पूरय कर्म
 भोग ॥ आ० ॥ काम अनल कुंडे पटयो ॥ २२ ॥ जेह
 नृपने रोग, तेह नृं जागे लोम ॥ आ० ॥ अंतरगतनी कु
 ळहे ॥ कामतुं घेहेर अथाह, नृपने ते लाग्यो दाह ॥ आ०
 कसो ते रोगने कुम घेहे ॥ २३ ॥ निहांयो मगटयो दुःख,
 हांभी होये नृप ॥ आ० ॥ अगनि वस्यो अगनी डे ॥
 रहानलनी बाफ, जेहने रहि तन व्याप ॥ आ० ॥ ते शीत
 रमणी के ॥ २४ ॥ इम चिंती मनमांहे, राभा रामत उच्छाहे
 आ० ॥ मेहर मंत्री इम भगे ॥ नृपने रोग न कांय ॥ फो
 कांया उपाय ॥ आ० ॥ जाण मंत्रीमने अरगुणे ॥ २५ ॥
 सनु भोपय कान, कांनुं तेम निदान ॥ आ० ॥ मिद्ध मार
 मार गिन्या ॥ अंगग्ननी पीट, कायजरनी रीट ॥ आ०
 ते कुंम नरि अट्टरग ॥ २६ ॥ जे लहे शास्त्र विचार, हे
 जे गुरु मुख मार ॥ आ० ॥ ते जाणे सरली कर ॥ जे करे
 दिन्मा कर्म, न जाणे शास्त्रनो मर्म ॥ आ० ॥ ते करे छेद

शक्त्या ॥ २७ ॥ सभा विसर्जो ताम, महु पोरोता निज पा
 २ ॥ आ० ॥ मंथो हिरे बैरू करे ॥ घोना उल्लासनी ढाल,
 देह्यो कही उजपाळ ॥ आ० ॥ लाज्यावेजय इम उच्चरे ॥ २८ ॥
 ॥ हुदा ॥ दिव मेहर मंत्रीसर, लोकांने दे शीत ॥ नृपनी
 मोदा ढालवा, घेरो आइ नजीद ॥ १ ॥ कामानुर नृपने लही,
 सचिव करे उपचार ॥ राणी सचळी तेडीयो, शोल सजी शिण
 गार ॥ २ ॥ रम सुन करती आवीई, रुँ अपछर सार ॥
 मदन तणी जे पाटिका, कार्याने सुरकार ॥ ३ ॥ आरी नृपना
 पग तळां, ओलासे उल्लास ॥ पवन करे रंभादल, आजि नेत्र व
 रास ॥ ४ ॥ पट्टाणां जे पद्मनी, नृपनुं भीडी अंग ॥ दा
 यन करघो पडि दो लगे, उतरघो ताम अनंग ॥ ५ ॥ कोक
 शास्त्र नजे बलें, कीयो ए उपचार ॥ आंख उघाडी तनीसंगे, म
 हिपनिये निज वार ॥ ६ ॥ कामज्वर डलको थयो, पाम्पो चे
 तन सार ॥ मेहर मंत्री जस श्रो, बरत्यो जयजय कार ॥ ७ ॥
 मदनरेग हरल्यो घशुं, देसी बुद्धि निधान ॥ सन्नान्यो
 मंत्रीमरु, देई बहलुं मान ॥ ८ ॥ बीजा सचिव कुरे कग्धा,
 शक्त्यो एह प्रधान ॥ मुझे मोहोटी गुण करघो, दीधुं जीवित
 दान ॥ ९ ॥ नृप कहे मंत्री तुं थयो, माहरा दुखनो जाण ॥
 में रान्यो नृपने सही, तन मन करिने प्राण ॥ १० ॥ तव कहे
 मंत्री नृप सुणो, हुं तुमारो दास ॥ केहशो ते करुं अमें, तम
 मन करि एरुगम ॥ ११ ॥ एण मुझे साची कही, ए कारण
 यहुं केम ॥ अंतरगतनी वानदी, जाणी जाए जेम ॥ १२ ॥
 विगर कहे किम जाणिये, पारका मननी वान ॥ तव नृप मंत्रीने
 कहे, मांडी सचळी घात ॥ १३ ॥
 ॥ ढाल २ जी ॥ नदी जमुनाके नीर, उडे दोष पंसीयां ॥
 ए देशो ॥ नृप कहे मांभल मंत्री, कह नुष्ठ नीपनी ॥ हरिच

से को नावियां ॥ जेणे कसो जे जेम, तेणे वरुं तेने
 आ० ॥ पण नृचि न भावियां ॥ १८ ॥ एम अने
 पाय, भलभला जाण कहाय ॥ आ० ॥ जाणगुं
 त्या ॥ विराउला हता जेह, परचंधी पण तेह ॥ का
 सिद्ध साधक सधला गल्या ॥ १९ ॥ भगत संन्यासी
 गलिया ज्युं पाणी लुळ ॥ आ० ॥ फोगट गाल फुटात
 जडी वृद्धीना जाण, बादीगर गया ठाण ॥ आ० ॥
 रजुं जे हुंलावता ॥ २० ॥ तिणसमे मंत्री एक, जाणे
 बेक ॥ आ० ॥ मेहर नामें मंत्रीसरु ॥ जिह्या पोत्र्या
 तिहाकिण आव्यो घाय ॥ आ० ॥ नाडी जोड तिहां
 ॥ २१ ॥ लाघो नाडी भेद, मंत्री लघो ते उमेद ॥ आ० ॥
 मग्वरे ते नृप नटयो ॥ मूरछा लघो तिण योग, पूव
 भोग ॥ आ० ॥ काम अनल कुंड पटयो ॥ २२ ॥
 नृपने रोग, तेह नृ जाणे लोग ॥ आ० ॥ अंतरगानी
 लहे ॥ कामहुं भेदेर अपाह, नृपने ते लाग्यो दाह ॥ आ०
 कसो ते रोगने कुग भेदे ॥ २३ ॥ जिहांची मगट्यो दुख,
 हांथी होये सुख ॥ आ० ॥ भगनि बल्यो भगनी ठरे ॥
 रहानलनी बाफ, जेहने रहित न व्याप ॥ आ० ॥ ते
 रमणी करे ॥ २४ ॥ इम चिंती मनमंदि, राभा रामत उच्छा
 आ० ॥ मेहर भंती इम भणे ॥ नृपने रोग न कांय ॥
 कीधा उपाय ॥ आ० ॥ जाण प्रवीमने अवगुणे ॥ २५ ॥
 खतुं ओपव कान, कीरुं तेम निदान ॥ आ० ॥ सिद्ध
 मूरख गिल्या ॥ अंतरगननी पीड, कामज्वरनी रीड ॥ आ०
 ते कृणे नात्रि अटकल्या ॥ २६ ॥ जे लहे शास विचार,
 जे गुरु मुख सार ॥ आ० ॥ ते जाणे सगली कला ॥ शुं करे
 कित्सा कर्म, न जाणे शास्त्रनो मर्य ॥ आ० ॥ ते करे

॥ २७ ॥ सभा जिसगीं ताग, सह पोयेता निज था
 ॥ आ० ॥ मंत्री दिवे बैरू करे ॥ बीजा उल्लासनी ढाल,
 हेनो कही उजमारु ॥ आ० ॥ लाल्यविजय इम उच्यरे ॥ २८ ॥
 ॥ हुटा ॥ दिव मेहर मंत्रीसरु, लोकोने दे शीख ॥ नृपनी
 पोटा दालवा, बंदो आड नर्जाक ॥ १ ॥ कामातुर नृपने लक्षी,
 निव करे उपचार ॥ राणी सचली तेंडीयो, शोल सर्जी शिण
 तार ॥ २ ॥ रम झन करती आर्यई, रुएँ अपछर सार ॥
 दिन तणी जे पाटिका, कार्याने सुखकार ॥ ३ ॥ आपी नृपना
 ग तलां, ओलासे उल्लास ॥ पवन करे रंभादलें, आंजे नेत्र व
 तास ॥ ४ ॥ पद्मराणां जे पद्मगी, नृपनु भीड़ी भग ॥ श
 वन करयो घटि दो लगे, उतरयो ताम अनंग ॥ ५ ॥ कोक
 शास्त्र तणे बलें, लीयो ए उपचार ॥ आंख उवाडी नखिले, म
 दिपतिये तिण दार ॥ ६ ॥ कामद्वार हल्लको थयो, पाम्पो थे
 तन सार ॥ मेहर मंत्री जस न्दो, बरत्यो जयजय कार ॥ ७ ॥
 मदनमेग हरन्यो पगुं, देखी बुद्धि निधान ॥ सन्मान्यो
 मंत्रीसरु, देई बहल मान ॥ ८ ॥ बीजा सचिय दूरें कगथा,
 बाल्यो एह प्रधान ॥ मुझने भोहीयो गुण करयो, दीपुं जीवित
 दान ॥ ९ ॥ नृप कहे मंत्री तुं थयो, माहरा दुखनो जाण ॥
 में सल्यो मुझने सही, तन मन करिने प्राण ॥ १० ॥ तब कहे
 मंत्री नृप सुणो, हु छु तुमारो दास ॥ केदशो ते करग अमे, तन
 मन करि एकगत ॥ ११ ॥ एण मुझने साची कहो, ए कारण
 थपुं केम ॥ अंतरंगननी वानही, जाणी जाण जेम ॥ १२ ॥
 विगर कहे किम जाणिये, पारका मननी वात ॥ तब नृप मंत्रीने
 कहे, मांडी सचली घात ॥ १३ ॥

॥ दाल २ जी ॥ नदी जमुनाके तीर, उहे दोष परीयां ॥
 ए देशी ॥ नृप कहे सांभल मंत्री, कहू मुझ नीपनी ॥ हरियरु

से को नावियाँ ॥ जेणें कसो ते जेय, तेणें परतुं नेय
 आ० ॥ पण नृप चित न भारियो ॥ १८ ॥ एव प्रेस
 पाय, मझमला जाण कहाय ॥ आ० ॥ जागरुं
 त्या ॥ विराउला हता भेद, परचधी पण तेद ॥ १९
 सिद्ध साधक सचला गल्या ॥ २० ॥ भगत संगानी
 गलिया ज्युं पाणी लुळ ॥ आ० ॥ गोंगट गाल कुडाण
 लदी वृहीना जाण, बादीगज गया डाण ॥ आ० ॥
 पणुं जे हुंलावता ॥ २० ॥ निणमवे मंत्री एक, जोने
 बेक ॥ आ० ॥ मेहर नामें मंत्रीमरु ॥ गिहां पोल्या जे
 तिहाकिण आण्यो धाय ॥ आ० ॥ नादी जोर निहा
 ॥ २१ ॥ लावो नादी भेद, मंत्री लखो ते उमेद ॥ आ०
 मज्जरे ते नृप नटयो ॥ मुरजा ल्हो निण योग, पूरव
 भोग ॥ आ० ॥ काम अनल कुंदे पडयो ॥ २२ ॥
 नृपने रोग, तेह नृ जाणें लोग ॥ आ० ॥ अनरागनी
 लहे ॥ कामनुं सेहेर अधाह, नृपने ते लाग्यो दाद ॥ आ०
 कहा ते रांगने कुंग भेद ॥ २३ ॥ तिहांयें मगदयो हुं
 हांथी होये मुख ॥ आ० ॥ भगति वल्वां भगनी ठो
 रहानलनी नाफ, जेहने रहि तन व्याप ॥ आ० ॥ ते
 रमणी करे ॥ २४ ॥ इम चिंती मन-नांदे, राभा रामत उच
 आ० ॥ मेहर भंती इम भणे ॥ नृपने रोग न कांय ॥
 कीधा उपाय ॥ आ० ॥ जाण प्रतीमने अनगुणे ॥ २५
 खनुं ओषध कान, कीयुं तेम निदान ॥ आ० ॥ सिद्ध
 मूरख गिल्या ॥ अंतरगतनी पीड, कापडरनी रीड ॥
 ते कृणे नाचि अटकल्या ॥ २६ ॥ जे लहे दास विचा
 जे गुरु मुख सार ॥ आ० ॥ ते जाणे सचली कला ॥ नृ
 किरसा कर्म, न जाणे शास्त्रनो मर्म ॥ आ० ॥ ते करे

कला ॥ २७ ॥ सभा विमर्गो नाम, महु पोरोता निम घा
 ॥ आ० ॥ मंत्रो दिवे बैदू करे ॥ घोना उज्जासनी दाल,
 ह्यो कटो उज्जमाल ॥ आ० ॥ लोन्नावेजय इम उच्चरे ॥ २८ ॥
 ॥ हुदा ॥ दिव मेहर मंत्रोमरु, लोकोने दे शील ॥ नृपनी
 दा दालवा, बेदो आड नर्जाक ॥ १ ॥ कामातुर नृपने लही,
 चिद करे उपचार ॥ रागी सचली वेदीयो, धोल सजी शिण
 र ॥ १ ॥ रम झन करती आसीई, रुँ अपछर मार ॥
 इन तणी जे पाटिका, कार्माने मुखकार ॥ २ ॥ आर्या नृपना
 ग तलां, ओलामे उज्जास ॥ पवन करे रमादलें, अग्नि नेत्र व
 ास ॥ ३ ॥ पट्टाणां जे पद्मगी, नृपनु मीढी अंग ॥ श
 णि करघो घटि दो लगे, उनरथो ताम अनंग ॥ ४ ॥ कौक
 ण्ण नजे बलें, कीयो ए उपचार ॥ आंख उपाडी तनील्लेण, म
 हेपनिगे निग दार ॥ ५ ॥ कामवर हल्लको धयो, पाम्यो वे
 इन मार ॥ मेहर भेरी जस न्घो, धरत्यो जयजय कार ॥ ६ ॥
 मदनैग हरत्यो घणं, देखी बुद्धि निधान ॥ सम्मान्यो
 मंत्रोमरु, देई बहल मान ॥ ७ ॥ बीना सचिव दूरे करघा,
 राल्यो एह मदान ॥ मुझने मोहोरो गुग करघो, दीधु जीवित
 दान ॥ ८ ॥ नृप कहे मंत्री तुं थयो, मादरा दुखनो जाण ॥
 मे राल्यो तुझने मही, तन मन करिने प्राण ॥ ९ ॥ तव कहे
 मंत्री नृप सुणो, हु छ तुमारो दास ॥ केह्यो ते करग अमें, तन
 मन करि एकगाम ॥ १० ॥ एण मुझने नाची कहे, ए कारण
 यपुं केम ॥ अंतरगतनी बातही, जाणी जाए जेम ॥ ११ ॥
 विगर कहे किम जाणिये, पारका मननी बात ॥ तव नृप मंत्रीने
 कहे, मांही सचली घात ॥ १२ ॥

॥ दाल २ जी ॥ नदी जमुनाके तोर, उडे दोय पंखीयां ॥
 ए देशो ॥ नृप कहे मांभल मंत्री, कहू गुप्त नीपनी ॥ हरियरु

हां मुंश ते नयणें न, निरन्धे अति भले ॥ घरनां कारज ति
 हां मुंश, कांठि न ऊकले ॥ १० ॥ लोभीनी परें जीव, रहें
 निज ते कने ॥ सावा पिपानी सूच, नही ते, जीरने ॥ दूनी
 फिरे नम देह के, मन विण मानवी ॥ लय लागीं पणुं जोर जे,
 सलना अभिनवी ॥ ११ ॥ विरुधो विषय विकार के, दाष्टि
 लागे तिका ॥ चोपरीनां दिल दाह, जाणे केवली तिका ॥
 मदिरा पीधे जीव, घुमाई च्युं रहे ॥ विरहना लीणो जीव, घुं
 भाइ ल्यु पडे ॥ १२ ॥ जोजो मरियां मीनही, लागे जेहने
 ॥ होवे एह हवाल के, मानव तेहने ॥ विरहनी वारता पीवी,
 हंसा ते जाणळ ॥ पण निमनेही शूरस, शुं ते पिछाणजे ॥
 ॥ १३ ॥ मननी लालच राव, दिवस रहे नेहशुं ॥ न गण
 मुख दुःख भीह, बंधाणो जेहशुं ॥ मीनिणां लीणो जीव,
 पडे ते रूपमां ॥ तन धन सोंपे नेही ने, सरवे ते घुपमां ॥
 ॥ १४ ॥ रमणी तणां जे नेत्र ते, कण्ठ पंकपी ॥ मगट क
 दर्प मत्त, बगड निःशंकपी ॥ कापी जन मनवनें, बराह ते सं
 घरी ॥ मानकता सिण पुरुनें, जाये ते घरी ॥ १५ ॥ का
 पी जनने काम, सुभर रेहें पडे ॥ विग्ही जनने भागिनि,
 विण खूने नडे ॥ काम बराह ते कामिनी, संगपी भोमरे ॥
 बीगहीजननां मन ते, तब शोतळ करे ॥ १६ ॥ सखल पुरुष
 गड कोट ते, जीवे पराक्रमे ॥ कामिनी जीने श्रीजग, एक कदा
 सपे ॥ कामनगारा नारी ते, सडुने बस करे ॥ रानना लीणा
 सुनर, - शोहें फिरे ॥ १७ ॥ सुबला ते नवला पडे, श्री
 बलरहे बड ॥ तो माहरो कोण आशगे, मंजो दुष काहुं ॥ ने
 मंजो दुष भागळ, मांढो ये काहो ॥ वसंतमिरोनु कारण, ए
 नीरनु सरी ॥ १८ ॥ भोजन रखा गया तब, ए फल न्यायि ॥
 कारण बरीने कारण, लोकने साविषा ॥ कारण विधास्ता

नारु, विधात्री आवियो । ए उवाणो जोकमें, माचो ॥
 वियो ॥ १९ ॥ ने माटे दिवे कोडक उथप कीजिये ।
 तामिरीपुख देखि, मुवाग्ग पीजिये जो कोड विरा होत नो,
 पलकमें जड मिळु ॥ २० ॥ गन्ध मान मन निद्राथी न नीकल ।
 ॥ २० ॥ वृद्धि भरुन पर्यंच कर काड करवे । उठे
 मधुनो बाढालो, मुद्धने पेलर नन मन कर खगवान के ।
 मुद्धने भिले ॥ अत्तु कोदे दमाय करे भवे भद ॥ २१ ॥
 ए भ्रांकार ने मचलो, मंजोये मधिन्यो ॥ कानातुर गयो ।
 य, ने पवीये भटकन्यो ॥ वण बछोया वण मिद, अताही
 में पक्यो ॥ निम रमणी माड जालया नृप पुगे जळ्या ॥
 ॥ २२ ॥ तो दिवे कोडक बाल, म बाल कने भन्दा ॥ वपनी
 मनमें लीता, फिर कर काडु बन्दा ॥ मचलु रूपल दणे नो, क
 या नृप मानसे ॥ तो शीखायण सपली, लेखे आणसी ॥
 ॥ २३ ॥ सामळजो भवि भागल, पीडी वाग्ना ॥ साभलनी
 म्निगयाळ भोना दिल ठागनी ॥ पीजा उल्लामनी डाल, ए बी
 नी परी कर ॥ नेहीने मन गमनी ए, लचिये उच्चरी ॥ २४ ॥
 ॥ बडा ॥ दिवे मंत्री नृपने कहे, साभलो मधु महागज ॥
 भवगमनी जे कही, ने में निमणी आज ॥ १ ॥ पण ए वा
 न हटकी नही, छे भारी महिनाथ ॥ गणवा दशन यमदंडना,
 नभनु भारी बाथ ॥ २ ॥ तिम ए छीशु नेहलो, करवो अ
 ति दुःख ॥ उदो संगति पहनी, वृषु लहो मुख मुमल ॥
 ॥ ३ ॥ जे कीरे तुमने मधु, स्वामी छामे अपार ॥ बाढ जो ग
 लंग चौभडा, कर्वा होय ताम पुकार ॥ ४ ॥ पर दुःखमंजु
 गजरी, वगजन पाळे माद ॥ बाहार जोडये जिहा यकी,
 निहा किम उंड थाद ॥ ५ ॥ अणघटनी ए धानरी, किम
 हिने मधु नाथ ॥ देखी पेखी बाघना, मुखेग धावनी हाथ ।

॥ ६ ॥ वसंतसिरी नारी तणो, जो कीजें प्रतिबंध ॥ छानी
 यातो नवि रहे, हिंग तणो जेय गंध ॥ ७ ॥ पोतानी परणी
 मिया, चपनावे रंगरेख ॥ जगमें छे परणी मली, पर परणी
 विपवेख ॥ ८ ॥ काणी कोची करवनी, काली कुवडी जाण ॥
 परणी जेह पनोवदी, पदमिणा तेह पिछाण ॥ ९ ॥ आपणी
 गावडी चंद्रमा, जे दोही पीवाय ॥ जुं कीजें परनी मली, जे
 दोही नवि जाय ॥ १० ॥ परस्त्री संगति जे करे, तेहनां पूर
 न पाय ॥ झंप करी बेसे नही, न मिटे तास संताप ॥ ११ ॥
 घृतकुंभ सरिखा नर कछा, अगनि सराखी नार ॥ मधु खरडी
 आसपार ज्युं, तिम स्त्रीसंग विचार ॥ १२ ॥ परनारीना ला
 छची, जे थपा विषयाभंग ॥ नरकनिगोदें रहवण्या, सुणमो
 तास संबंध ॥ १३ ॥

॥ हाळ १ जी ॥ नणदलनी देशी ॥ राजन हे राजन, रा
 वण सरिखो राजनी, जे बलीयो कहेवाय ॥ हे राजन ॥ ला
 ख बेताल्ल्या गज तुरी, सेवे सोळ सहस राय ॥ हे राजन
 ॥ १ ॥ भिक भिक काम बिडंबना, कामें लुब्धा जेह ॥ हे रा०
 ॥ अस अपजस कांइ नवि गणे, नगणे सुख दुःख तेह ॥ हे
 रा० ॥ धि० ॥ १ ॥ बघीय सहस अंतेदरी, कों अपछर
 प्राय ॥ हे रा० ॥ ते सरस्वीने भवगुणी, रावण सीता हराय
 ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ २ ॥ राम ने लिछमण बेहु मिली, मेळो
 कटक अपार ॥ हे रा० ॥ धार वरस लगे आकरा, लूंस्या
 नर झुंझार ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ ३ ॥ सीताकामने रावणे,
 केइ सुभट हणाय ॥ हे रा० ॥ अंते पण रावण तणां, दण म
 स्तक छेदाय ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ ४ ॥ त्रिजगमें कंटके
 श्री, नाम घरावनो जेह ॥ हे रा० ॥ चोपी नरकें ने गयो,
 परस्त्रीनां फल एह ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ ५ ॥ लंका परलं

हे रा० ॥ परिचरमे केई जातिनां, पाभी ते निज दाव ॥ हे
 रा० ॥ धि० ॥ १९ ॥ कूट कपटनी मोरदी, गोरदी निगुण नि
 टोल ॥ हे रा० ॥ अमया राणी तणि परें, कोइ न राखे तोल
 ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ २० ॥ रमणी तणां मन एहवां, जेहवां
 पाकां बोर ॥ हे रा० ॥ बाहिर सुंदर देखणां, माहि कठिण कठो
 र ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ २१ ॥ महिला केरो नेहलो, जेहवो
 संध्यां राग ॥ हे रा० ॥ आसों मासनो मेहलो, तेहवो स्त्रीनो
 राग ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ २२ ॥ स्वारय पहांचे जिह लां
 गें, निहां लगें करे रंग रेन ॥ हे रा० ॥ झूठी तन धन हरि
 लिये, रुठी विपनी बेल ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ २३ ॥ मुरी
 कंठार्ये कंतने, हणियो देई घेर ॥ हे रा० ॥ नारी गुष्ट होवे स
 दां, न जुवे करतां केर ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ २४ ॥ ब्रह्म
 दत्तने मारवा, लावनां मंदिर कीध ॥ हे रा० ॥ बुद्धणीयें
 निज पुत्रने, स्वहस्तें बनिह दीव ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ २५ ॥
 पापुं रक्त भुजानणुं, स्ववरान्युं उरनांस ॥ हे रा० ॥ ते जित
 चक्षुने राणीयें, नारुपो जलधिमें तास ॥ हे रा० ॥ धि० ॥
 ॥ २६ ॥ नारी न होवे आपणी, बानांजो कोर्यें लस ॥ हे
 रा० ॥ दृपंत डांग दो भाभिनी, देखादे परतस ॥ हे रा० ॥
 धि० ॥ २७ ॥ मोह देखादी दगो करे, स्त्रीनो छे ए दंग ॥
 हे रा० ॥ ते माटे नुमे रामवी, म करो परस्त्री संग ॥ हे रा०
 ॥ धि० ॥ २८ ॥ इणि परें नृपने मंत्रीयें, दाख्या केइ दृष्टांत
 ॥ हे रा० ॥ पण नृपनुं मन-नवि मिलें, बसंतसिरी चित आंत
 ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ २९ ॥ मन लागुं जेह उपरें, बिसारलुं
 नवि जाय ॥ हे रा० ॥ मोहनी मदिरा छाकयां, उपदेश नावे
 दाव ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ ३० ॥ लब्धि बीजा जंझासनी,

दे एक तान, शिव रमणी दे तस मान रे ॥ न० ॥ ४ ॥ ए
 तो शील छे गुणनुं निषान, शीलें पाये स्वर्न विमान रे ॥ न० ॥
 ए तो शीलें संकट भांजे, शीलें ते हरि ज्युं गाने रे ॥ न० ॥
 ॥ ५ ॥ ए तो शीलें कुंभर श्रीपाल, तस कोट गयो ततकाल रे
 ॥ न० ॥ ए तो शीलें सुदर्शन श्रेष्ठ, शूलि फीटी सिंहासन बेठ
 रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ए तो शीलें जंबू स्वामी, लघुवयमें यथो
 शिवगामी रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें जेय कुमार, यथो शिवरम
 णी उरहार रे ॥ न० ॥ ७ ॥ ए तो शीलें भेषकुमार, जेणें
 छंदी आठे नार रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें गजसुकुमार, शिवप
 दवी छरी सुरसाळ रे ॥ न० ॥ ८ ॥ ए तो शीलें शूलिमद्र
 नाम, राखुं चिहं जगमे अमिराष रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें
 भीमछिनाय, ए तो मुगतिवधू करि हाथ रे ॥ न० ॥ ९ ॥
 ए तो शीलें सीता नारी, करी धीजतां शीलें समारी रे ॥
 न० ॥ ए तो शीलें सुभद्रा सुरादी, चंपा पोल चपादी रे ॥
 न० ॥ १० ॥ ए तो द्रोपदी पांडव केरी, जेणें कौरवें लज्जा उवे
 री रे ॥ न० ॥ ए तो तेहने शील भयावें, सुर सत अष्ट ची
 र पहरावे रे ॥ न० ॥ ११ ॥ ए तो शीलवती सुकुमार,
 अहि फीटी यः फुलमाल रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें चंदनवा
 ला, वीर करी झाक झमाला रे ॥ न० ॥ १२ ॥ ए तो इ
 त्यादिक अवदात, कहं शीलनी केती आरुपात रे ॥ न० ॥
 जे पाले शील नर नारी, हुं जावें तस बलिहारी रे ॥ न० ॥
 ॥ १३ ॥ कुशीलियो किहां न सदाय, कुकर ज्युं घटा खाय रे
 ॥ न० ॥ कुशीलने पाटे कूटी, जिम घरमांथी हांदी फूटी रे ॥
 ॥ न० ॥ १४ ॥ कुशीलनो नावे विमास, कुशीलियो फिरे यः
 दास रे ॥ न० ॥ कुशीलियो गनि नावे पागे, जाये नरक नि
 गोदने ठापें रे ॥ न० ॥ १५ ॥ कुशीलियो सपले भंदाय,

चोविन दंडके देहाय है । न० ॥ कुशीलना कसे भयोरे, म
 वो भवे भिरे थडे चोर है ॥ न० ॥ १८ ॥ पत्र पत्र नै वि
 द्या जेह, कुशीलने न कहे तेह है ॥ न० ॥ समद साधक ना
 म गवावे, कुशीलने जस काटनाव है ॥ न ॥ १९ ॥ मा
 हादेव जे देव कथाय, मरगथा मरि नरग जाय है ॥ न० ॥
 अहिल्यास डड जे छत्रो, ना मरमभगा नाय दीस है ॥ न०
 ॥ २० ॥ कठ गठभो साउ कथानो मरु प्रोखन किम जातो रे
 । न ते गया गणिना मगे उठी नरक कुशीलने दगे रे ॥
 न० ॥ २१ ॥ वषे मरम न चाख्य पालो कंदगीके तव परजा
 ली है । न० ॥ ते मान पकण गते नउ बडो नारकी पा
 त है न० ॥ कुशीलनी कुरणो ग्योरी, करतो फिरे
 नार्ता महीश है । न० ॥ कुशीलनु तव तव फोक, वष बंधन
 मंड फल शक है ॥ न० ॥ २२ ॥ स्वराग दिल नवि भावे,
 कालिया नायि स्वांर है ॥ न० ॥ २३ ॥ जनां जेहने जे पदी
 हवा नरना जाय २४ मर्या है । न० ॥ २४ ॥ ते माटे
 नम मर नाय उठा परम्वाना माय है । न० ॥ कुशीलनु ना
 म मर्या नायि उठ्य मर्या है । न० ॥ २५ ॥ दिल
 गावने रया मानी जे दिदनी गय्या माता है ॥ न० ॥ २६ ॥ ए
 ता नम जे मर्या वाटा, उण वाव मत पाओ हाटा है ॥ न०
 ॥ २७ ॥ २८ ॥ जनां जेहने जे पदी, तुम न कगे एहशुं चालार
 । न जाय तेनम न जगन कमाता, पण बार न लगे ज
 न नाय है । न० ॥ २९ ॥ ३० ॥ जनां परदेया थड छुडे, पण
 मर्या मरु नम खट है । न० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ मर्या ते परचाये, पण
 नयने उठ कड नावे है । न० ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ मर्या जे कही
 वाता न मान्यो नव नवा नाता है ॥ न० ॥ ३५ ॥ नव मर्या थयो
 नानाशयो साहाय नव राख भगणा है ॥ न० ॥ ३६ ॥

हिंवे सुणभो जे नृप खोले, मंत्री आगल पोयी खोले रे ॥ न०
॥ ए दो बांजा दछासनी डाल, कही चोयी छम्हे र
साल रे ॥ न० ॥ २८ ॥ इति ॥

॥ दुहा ॥ वयण सुणो मंत्री तणां, नृपने लागीं हिंग ॥ भूत
भराद ते नृप थयो, जागे लागु विंग ॥ १ ॥ हित शीखामण
देवतां, नृपने ऊठा झाल ॥ आगे अहि छंछेदियो, तिम हुबो नृप
विकराल ॥ २ ॥ आगे बानरने बली, विछोये चटको कीष
॥ आगे केशरनि बडी. श्वाननुं विरुद ते दीध ॥ ३ ॥ तिम नृ
प मंत्री उपरे, कोपाकुल यह राय ॥ यदनवेग तिहां सचिवहुं
बोल्पो भ्रुकुटा खडाप ॥ ४ ॥ रे मंत्री हुं जाणतो, तुझे चा
तुर कोरु ॥ वे दाणा तुझमें नही, जे खोले ते फोक ॥ ५ ॥
ते किम जाण्या कुशीलिया, करणी हीणा जेह ॥ परस्त्री गमन
किया पछे, स्वर्गे पहाता केह ॥ ६ ॥ ते सांभल तुझ
जे कहें, शास्त्र तणे अनुसार ॥ व्रत भांगी ते मुनिवरा,
पाण्या भवनो पार ॥ ६ ॥

॥ डाल ५ यो ॥ जीणा मायजीरी करइलडी ॥ ए देशी ॥
भूनेना कहें सचिवने, सांभल तुं एकंगो यइने कान उपाडी हो
राज ॥ चौविश वर्ष घरे रही, मुनिवर आर्द्र कुमारे व्रतने
छाज लगाडी हो राज ॥ १ ॥ ते गयो ज्योति आगारमें, सिद्ध
वधूना संगमें जइ सुख भोगवे पुरां हो राज ॥ साख भली नस
ए कही, धीवसुदेवनी हिंदमें अक्षर जो तुं सनूरा हो राज ॥
॥ २ ॥ श्रेणिक रायनो कुंवहं, नामें नंदिरेशन जे बलियो यह म
न लीनो हो राज ॥ तेषें पण व्रत भांजीने, गणिकाहुं घर
मांडि रहो रंग भीनो हो राज ॥ ३ ॥ चार बरस सुख भोग
यो, अजरामर पद लढियो करणी सहु जग जाणे हो राज ॥
मारानिजीय जे मूर्खपा, साख भली जाणजे मंत्री निश्चित मराण

हो राज ॥ ४ ॥ पार्थ बिजानी पूत्र जे, श्री हत्या जिणें
 श्री मदीही कानें व्याप्या हो राज ॥ ने गयां मुगं लोक आउ
 साख्य बन्दी न जागें जे आ योगशास्त्रे उपायो हो राज ॥ ५ ॥
 आपादभनि अणनार जे, नादकणीने साथे बार वरम घर
 दियो हो राज ॥ साथ बन्दी तम चमित्रमां, ने गयां शिवग
 माहे जागी जे वन गदयो हो राज ॥ ६ ॥ चंद्रशेखर वि
 धर ने निज भगिन साथे निशिदिन गे रमतो हो राज ॥ ते
 या भुगविरर त्रिधा, श्रीमंचेजो पादानम साखी छे मन गम
 ने राज ॥ ७ ॥ चर्मी भक्त नरेमर, गंगा देवीने घर रहि
 १८ सरसायी हो राज ॥ गहम वरम मुख भोगवी, भुव
 वासिमाया वाभ्या ज्ञान उन्नामी हो राज ॥ ८ ॥ अष्टा
 १९ उ ॥ साथ जेनेमर साथे मगनि पुगिय पहना हो रा
 १ नना साथे ; जाणें, जेवरीकपलानिमाहे भक्त मुहना हो रा
 १ नना साथी जाणीय, नादकणीने साथे भक्तयो जे
 १९ ॥ १० ॥ केवळ गण ने पारमन, मुगनि पुगमें उ
 ने ११ ॥ ११ ॥ मुहो हो राज ॥ १२ ॥ १२ ॥ सरसायिठका
 १३ ॥ १३ ॥ गद हो भाद नेहनी भेन हत्या हो राज
 १४ ॥ १४ ॥ मारी, माखसाहन रिणा १५ गदी उ
 १६ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ने बट भया कृतकमा भ
 १८ ॥ १८ ॥ नेहिन १९ मुगलोकें हो राज ॥ नेहना प
 २० ॥ २० ॥ इतिभना मालामाह वारी जेके हो राज
 २१ ॥ २१ ॥ न चूक्या, नागभ २२ गदा २३ ॥ २४ ॥
 २५ ॥ २५ ॥ चिह्ननि चउमुग नापना, गदम
 २६ ॥ २६ ॥ न उपजे शयो हो राज ॥ २७ ॥ २७ ॥ माख
 २८ ॥ २८ ॥ वनन दाश गिछरी बीडी मनमे लागी हो राज
 २९ ॥ २९ ॥ ३० ॥ गिछरि तें गिछरी पेटें उपना मा

हो राज ॥ १४ ॥ ब्रह्मपुराणें ते ब्रह्माने, परमेश्वर करि माने
 हुनियाँ एकण ध्यानें हो राज ॥ तारक जग परमेश्वर, निज
 पुत्रीं निलसे रंगें यह एक तनि हो राज ॥ १५ ॥ उमपा
 नारी चेतनाने, जटापथ्ये छानी सार्या ईश्वरें गंगा हो राज ॥
 तारक जाणी शंभुने, वरुण अटार जे मानवि रुद्रने पूजे एकंगा
 हो राज ॥ १६ ॥ पृथी ऊसा देखाने, त्रिनेत्रा ययो शंकर
 तिण दिनधी गवराणो हो राज ॥ विष्णुपूजां यह तिण दिनधी
 विष्णु पुराणें चाबो अक्षर छे मपराणो हो राज ॥ १७ ॥ वि
 ष्णु पुराणें विष्णु जे, कान गोवाल यदन लोकमहि पूजागो हो
 राज ॥ बर्वास सहस्र अंतर्दरी, ते छंदी मर्यादारी राधा साथें
 गवाणो हो राज ॥ १८ ॥ पुंजा पांडु नृप तभी, लघुवयनें
 कृनारी मुग्ध देवे विठ्ठली हो राज ॥ करण ययो ते उदरनो,
 जग चतु ते देवनी सह जग माने उत्तमी हो राज ॥ १९ ॥
 ए अवदान जे भे कदा, करमां दीपक लेइ देखी कृप केइ पदि
 या हो राज ॥ बलवर्तमाहि शिरोमणि, ते सारंग पण बलि
 या गलिया कर्म नादिया हो राज ॥ २० ॥ तो माहारो कोण
 आशरो, निज भुवनमें सर्वने कर्म मुख्या लूणी हो राज ॥ जे
 पाने गज उडिया, तेजे पवने करी घाई दोहरी लेवा पूर्णी हो
 राज ॥ २१ ॥ कृपनि मुगति जे पामनी, ते करी छे सपली
 भरितन्यताने दायें हो राज ॥ जे जे समयें मानिये, शुभाशुभ
 ना संय जे बांध्या ते आवे साथें हो राज ॥ २२ ॥ उग्र तपस्या
 नो वणी, नितारि नृप जिननो सारी पूगण हुनो हो राज ॥ ते
 मरीने ययो सूत्रदो, किदां गइ करणी तेदनी निरियेच गतिमां
 पदांतो हो राज ॥ २३ ॥ ए अधिकार तुं जाणो, श्री शंभु
 पा मादानम माहि छे ए सारी हो राज ॥ करणीनुं कारण को
 नही, भरितन्यतानुं कारण सपले जिन बाणी बांकी हो राज

॥ २४ ॥ भवस्थिति पूरी क्यों बिना, सद्यः प्रोच करे पग ले
 खे कदिय न आवे हो राज ॥ माली सींचे सो गणां, पग ते
 हनी उतावले ऋतु बिना फल नवि पावे हो राज ॥ २५ ॥
 तिम आपणी उतावले, समकित रयण बिना किम भवस्थिति
 पाकी जाय हो राज ॥ घणुंअ बूरुयो पग दुं करे, लाख उ
 तावल करीयें वे करणी न जिमाय हो राज ॥ २६ ॥ तिम
 द्रव्य क्रियायी न ऊपदे, भावक्रिया जब भ्यंतर मगटे तब शिव
 पावे हो राज ॥ जिहां सुधी समकित नवि छत्रो तिहां सूधी ते
 जनिने चिहु गनि कर्म भमावे हो राज ॥ २७ ॥ द्रव्यधी भो
 या चरबला, एकठा कीधा जीवें मेरु जेवहा ढगला हो राज ॥
 सो पण गरज मरी नही, भाव बिना जे किरिया कीधी दंभी
 व्युं बगला हो राज ॥ २८ ॥ ते माटे मंत्री तुमैं, शील कुशी
 लनुं कारण कोइ इहां मन गणप्रो हो राज ॥ पांचे कारण ज
 ब मिलें, भवितव्यनाने जोगें शुभाशुभ तब भणप्रो हो राज ॥
 ॥ २९ ॥ एइवो उत्तर मंत्रीने, मदनवेगें दीवो चोवो हाथें
 लाहु हो राज ॥ बरी कहे सांभल मंत्री, तुष्ट करणी विगता
 बी ताहरा कान उपाहु हो राज ॥ ३० ॥ लब्धे बीजा उ
 द्दामना, मंत्रीने समझाव्यो भलि परे पांचमी दालें हो
 राज ॥ दिवे सुणजो भरियग तुमैं, आगल शी शी बात नि
 पजें ते उजमालें हो राज ॥ ३१ ॥

॥ इहा ॥ रे मंत्री हुं ताहरां, जाणुं मयल चरित ॥ पा
 पट खाई पदमनी, तुं ययो महोयो पवित्र ॥ १ ॥ पटा खा
 भो भ्रम तणा, ल्यो बलि लोकां लांच ॥ लेवा देवा मापलां,
 राखो कूटां माच ॥ २ ॥ कूट कपट इदयेधरी, बोलां पिडाबोल ॥
 घोने दिन घुनो मणुं, राखी कूटां तोल ॥ ३ ॥ परनिंदा करता
 कियो, पागुं नाखो छिद्र ॥ मार्ची नूटी करो घभी, काटां नू

ना हृद्र ॥ ४ ॥ अम उपराले लोकने, पो लेखणनो पार ॥
 बरे बींटी परजने, देवो दुस्त अपार ॥ ५ ॥ अमें ओसरीये पा
 पपी, तुमें न ओसरो कोय ॥ मरण बीक राखो नही, छाती द
 पद उघु होय ॥ ६ ॥ पर उपदेश देवा पणुं, दाहापण राखो
 ठीक ॥ आप न जाये सासरे, दिये परार्पा शील ॥ ७ ॥
 निज अवगुण जोवो नही, पर अवगुण तुम लेय ॥ पापनी बांधी
 गांठदां, हींदो शीश परेय ॥ ८ ॥ चंदन भार गर्दम शिरे,
 जागे लोके दीप ॥ भारोदाह गर्दम ययो, पण चंदन स्वाद न
 स्वीय ॥ ९ ॥ निम मंथो तुं जाणने, तुलमा एह सभाब ॥ मुल
 उपमार जाण्यो नही, गर्दम सम ययो ठाव ॥ १० ॥ एह व
 चन महिपति वणां, सांभलि धमक्यो चित्त ॥ मनमां धीनो मंध
 बी, राजा केहना मिव ॥ ११ ॥ हित शीखामण देवतां, सा
 हानुं देवे दोष ॥ गोलो गर्दमने हणी, गायशुं राखे रोप ॥
 ॥ १२ ॥ महिपनिनुं मन ओलखी, सोल्यो मंभि तिवार ॥ हा
 स्वामी तुमें जे कही, मानुं वे निरधार ॥ १३ ॥ राजा के पर
 मेसल, जे बोले ते सत्त ॥ एहमें झूठ न संपने, दोमें छे दैवत्त ॥
 ॥ १४ ॥ सुखपी साकर पालीने, नृपने करघो मसन ॥ महिप
 तियें एण मंत्रीने, सनमान्यो मुवचम ॥ १५ ॥ सिरपाव देह
 धोलावियो, मंथीने निज ठाय ॥ राज काज शुभ चालवे, मद
 नवेग तिहां राय ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ दाल ६ ॥ घन भेतारज मुनिवरु ॥ ए देशी ॥
 एक दिन बेठो मालीये, नृप मदन वेग ॥ वसंतसिरी चित्त
 सांभरी, तम थयो उदवेग ॥ १ ॥ पिग विग काम बिटंबना,
 मोह जोवन जागे ॥ ए आंकणी ॥ मोहनी कुर्नेय जीततां, प
 सुं दोरेलुं लागे ॥ द्वि० ॥ २ ॥ तिण अवसरें एक मेहेतलो,
 फालमेन वे नापे ॥ नृपने नमि अनि हूकटो, बेठो आबिराम ॥

॥ १८ ॥ आगे बेरी कर चम्प्यो, बली करयकी सूत्रो ॥ आगे
 जुहारीन बली, दिलियो साथी जूत्रो ॥ धि० ॥ १९ ॥ आगे
 सर्प छेंडदिने, करयो पुंछयी बांदो ॥ आगे अग्नि झालमां, सिं
 य्यो घृत मांदो ॥ धि० ॥ २० ॥ तिम नृप हरिवल ऊपरें,
 धण रोप भराणो ॥ रे मंत्री हरिवल हणी, वस स्त्री पर आणो
 ॥ धि० ॥ २१ ॥ तव मंत्री कालसेन ते, कहे नृपने वाणी ॥
 स्वामी हरिवलने हने, जनमां जाय पाणी ॥ धि० ॥ २२ ॥
 पण एक स्वामी उपाय छे, तुम बुद्धि बतावुं ॥ हरिवलने तुम
 मोकलो, लंका गढ ठावुं ॥ ॥ २३ ॥ जलनिधिमैं जाती थका
 बहेसे पद बोलें ॥ तव नारी तुम मंदिरें, आवसैं रंगरोलें ॥ धि०
 ॥ २४ ॥ ठाकर चाकरनी इहां, साची खबर ते पढ्यो ॥ तुम
 आणा ते शिर धरी, छंका गढ चढ्यो ॥ धि० ॥ २५ ॥ ते
 माटे तेही तुमैं, हरिवलने पूछो ॥ एम कही घरे महेतलो, ग
 यो घाली छुंछो ॥ धि० ॥ २६ ॥ लम्बें बीजा उड्या
 सनी, कही छडी डाल ॥ आगल भवि तुमैं सांभलो, मां
 ठी बत रमाल ॥ धि० ॥ २७ ॥

॥ इहा ॥ इणि परें नृप मंत्रीसरु, एक मनो करि दोष ॥
 महिगति पहोना महलमां, मंत्री गयो घर सोष ॥ १ ॥ बीजे
 दिन रवि ऊगियो, भगज्यो राग विभास ॥ शकुनियें बांह पसा
 रीयां, कैरव कीय विकास ॥ २ ॥ घाउरुभां बलुगां जई,
 घावाने हपेण ॥ दोबा बेसे भाषिनी, जेहने छे घर धेण ॥
 ॥ ३ ॥ देउरु सघले बाजियां, झालरना झणकार ॥ तास
 शब्द भुणनां, थकां, रजनी नाठि निवार ॥ ४ ॥ सुलभ बो
 धां जावडा, मांडे निज स्तब्धर्म ॥ साधजन मुख मोमती.
 धांपी हे निनधर्म ॥ ५ ॥ मंगल वाजां बाजियां, बाज्यो गुहिर
 निशाण ॥ ए करणी परभावनी, नव ऊगे शुभ भाण ॥ ६ ॥

॥ स० ॥ तेंची हट्टे नवि जुवे रे. लज्जागा राहु कोय ॥
 ॥ स० ॥ १० ॥ तव कर जोटी मर्जी कहं रे. कालसेन ने दृ
 ॥ स० ॥ स्थायी जे कही वागता रे, सांभली दुभा मनुष्ट
 ॥ स० ॥ ११ ॥ पण विषय पंथ भाकरो रे. जलनिमें केप ज
 ॥ स० ॥ पण बटे सिद्ध न संपजे रे, भुजायी न तराय
 ॥ स० ॥ १२ ॥ गज पाखर जंबुकाशिर रे. नाखी तुमें राजान
 ॥ स० ॥ ते क्षिप्र निगयो कंहरा रे, रंघी थावा निदान ॥
 ॥ स० ॥ १३ ॥ मनकोटनी कटि उपर रे, सूकी गोलनी गुण
 ॥ स० ॥ गात्र विना केम उरोडे रे, जे करे गमा विहण ॥
 ॥ स० ॥ १४ ॥ निम ध्यामी लंका गडे रे, शक्ति विना कुण
 ॥ स० ॥ पूर्ण पराक्रमी जे हुं रे, ने जावा भंगमाय
 ॥ स० ॥ १५ ॥ के बडे लंका देवता रे, के विद्याधर होय
 ॥ स० ॥ के तपसी साधू जना रे, तो तरे जलनिभि तोय ॥
 ॥ स० ॥ १६ ॥ योजानो शो आशरो रे. जगनिनिना लहे ना
 ॥ स० ॥ दशरथगुत एक सांभग्यो रे, जलनिभे बांधी पाग
 ॥ स० ॥ १७ ॥ केवळी हथिलने सुषो रे, जे बेडो तुम
 ॥ स० ॥ जावे ए लंका गडे रे, बाहु छरीने उल्लास ॥
 ॥ स० ॥ १८ ॥ सबल पुरुष ए जाणिये रे, एहमां छे जग
 ॥ स० ॥ काज नृपार्थ सारणे रे, पुरणे मननी जगीश
 ॥ स० ॥ १९ ॥ उभि परे कुमति मंत्रिये रे, मृपेन विनिमि
 ॥ स० ॥ समष्टि शिरोमणि इण समे रे, दीते हरिवल
 ॥ स० ॥ २० ॥ ने निमृगो नृप निय वेळा रे, हरि
 ॥ स० ॥ दोश रई बाहुं ग्रहो रे, निम मुष्ट
 ॥ स० ॥ २१ ॥ राय विभीषणेन जई रे, तेडि
 ॥ स० ॥ मानगुं मुजने तुम तजो रे, जांविन
 ॥ स० ॥ २२ ॥ तव इविलु अः

मनहुं विमासे आज ॥ स० ॥ जो नाकारो इहां कहं रे, तो
 न रहे मुझ आज ॥ स० ॥ २३ ॥ लाजें कण्ठ पहरीये रे,
 लाजें दीजें दान ॥ स० ॥ लाजें पंचम बेसीये रे, लाजें वा
 मान ॥ स० ॥ २४ ॥ लाजें गढ़ कोट लांजिये रे, लाजें
 रालीये मत्त ॥ स० ॥ लाज बची मुझ चित्त जगें रे, कि
 कहं ना दिखे ज्ञत ॥ स० ॥ २५ ॥ इणिरें मनमां सोबीनेरे,
 सोल्यो इगिबल ताम ॥ स० ॥ लावु जइ लंकाधनी रे, तो हूं
 खरो मुझ स्वाम ॥ स० ॥ २६ ॥ भेलवु तुम लंकापति रे, तो
 मुझ देजो शावाम ॥ स० ॥ एम कही बंड़ु ग्रही रे, हरिबल
 आब्यो आवास ॥ स० ॥ २७ ॥ थइ निजपति मुख देखि
 ने रे, वसंतमेरी जगमाळ ॥ स० ॥ बीजा उल्लामनी प
 कही रे, लखिये सातमी हाळ ॥ स० ॥ २८ ॥

॥ दहा ॥ इगिबल कहं निज नारीने, सांभळ प्यारी मुझ ॥
 जावो छे लंका भणी, मागुं भागा तुझ ॥ १ ॥ विर चित्त करी
 गेहजो तुम, देनां दान मुयाज ॥ श्रील मुरगु पालीने, करतो
 निराल गात ॥ २ ॥ घरजो ध्यान नव पर नज, चउद पूज
 नु सार ॥ समझा निम साविध कर, भागे शिवमुखकार ॥
 ॥ ३ ॥ संरतो गुह दव एक मन, जेग बधारी जमे ॥ कीदी
 थी कुमर कम्भा, ओळखावी जिनगर्न ॥ ४ ॥ मीतम वचन
 ते साभधी, वसंतगिरी कहें पम ॥ शे कागण जातु पडे, ते कहें
 जाणु जेम ॥ ५ ॥ नव मांडी इकिगत करी, प्यारी भागव
 तेह ॥ तिग कागण जावुं पडे, सांभळ तु मसनेह ॥ ६ ॥
 विपनुं गमन ते सांभळी, कुमरी यड दिळगीर ॥ जाणे भाद्रव
 ह ज्य, वरसे आंसु नीर ॥ ७ ॥ कालजेको घाली बहो, प्र
 नम धुम निमनेह ॥ निशि दिन दिगें तुम बिना, बले मुरंगी रे
 ह ॥ ८ ॥ मचनु दुःख खमीये, प्रभु, पण तिगें न स्वमाय ।

विरहानलनी बाफ जे, पिपुं विण केम ओलाय ॥ ९ ॥ तपति
 मोतम नुपे, मन जाओ परदेस ॥ मन रुम बहसे मूकता, मगने
 बाले बेस ॥ १० ॥ नृपनं कारज पिपुं नुपे, महोदु लाव्या विंग ॥
 लंकारनिनो जाणयो, मिही गयी चंटनी विंग ॥ ११ ॥
 जो पितम बाओ नुपे, सो मुझ तेहो संग ॥ टेटु परेसुं तुम
 मणी, जोसुं लंका रंग ॥ १२ ॥

॥ हाल ८ थी ॥ आमणग योगी ॥ ए देही ॥ नव श्री
 नम करे मांमन प्यारी, मुझ सुं छे मोहनगरी रे ॥ सुंदरी सम
 नेही ॥ मुझ मुख देखि ह मुख पाउं, तुझ निशि दिन चितने
 ध्याउं रे ॥ सुं० ॥ १ ॥ मागयही छे तुं मुझ बाहाली, नि
 य पंदने गोरणी बाहाली रे ॥ सुं० ॥ तुं मुझ चित्रावेल समा
 नी, तुं मुझ बुद्धि निशानी रे ॥ सुं० ॥ २ ॥ नव गड ने मधु
 नी मोरबानी, मोतही दुगुं छानी रे ॥ सुं० ॥ लेख शिखर
 पयो मुझनु येयो, पयो मंदिर पुणे येयो रे ॥ सुं० ॥ ३ ॥
 अशनिम लाम्ब रह मुझ केगी, धमं पंगु कणि कहुं नुं फेरी रे
 ॥ सुं० ॥ मुझने दुकता मन नयी कहने, पंवे पावतां पम
 नयी बहेतो रे ॥ सुं० ॥ ४ ॥ पन मुं कराये नृपनी सेवा,
 काबी पदे पदनी देवा रे ॥ सुं० ॥ जो नृपनं बहो नवि कणि
 ये, सो नृपनी जद रुम बरिये रे ॥ सुं० ॥ ५ ॥ जेहन
 धनो रीखयो म्हादो, नम धनो धोनो ब्यादो रे ॥ सुं० ॥
 ए सेनाये गीत ते मनने, कान बरि जम बने मने रे ॥
 ॥ सुं० ॥ ६ ॥ ते नाटे तुं सुंदरी योगी, मुने भाणा रे दिने
 मोरी रे ॥ सुं० ॥ छीछ-जे जई भाविज बरेयो, नृपनं लमन
 ने पोरही रे ॥ सुं० ॥ ७ ॥ नव गनी करे मांमन प्यारी,
 गुन रेज गतावा ब्याग रे ॥ मोतम मननेही ॥ मुझ बसने नु
 ये गुरावे माग्या, भित्ता छे पुणे आहर्षा रे ॥ सुं० ॥ ८ ॥

यनगुं विगागे आज ॥ स० ॥ जो नाकारे इहां कमें रे,
 न रहे मुत्र काज ॥ स० ॥ २३ ॥ आज कण्ड पहेरीये
 आज दीजे दान ॥ स० ॥ लाजे पंगने वेसीये रे, लाजे
 दान ॥ स० ॥ २४ ॥ लाजे गड कोट लाजिये रे,
 गरीये गज ॥ स० ॥ लाज बरी मुत्र चितुं जमें रे,
 ददु ना दिरे सज ॥ स० ॥ २५ ॥ इजिये मनमा सोबीये,
 सोबीये इजिये ताप ॥ स० ॥ लाज गड लंकावणी रे,
 लगे मुत्र दान ॥ स० ॥ २६ ॥ भेलवु तुम लंकावनि रे,
 मुत्र देजो जना ॥ स० ॥ एम कही बांडु ग्री रे, इजि
 प्राये प्राण ॥ स० ॥ २७ ॥ थइ निजगति मुग
 ने रे, बमनागरी बजमाज ॥ स० ॥ बीजा उल्लामनी
 उही रे, लजिये मानमी दाज ॥ स० ॥ २८ ॥

[illegible]

વિરહાનહની રાફ જે, પિયું વિજ કેવ ઓહાય ॥ ૧ ॥ તેમટિ
મોતમ નુમે, ધન જામો પરદેશ ॥ ધન હિમ વહજે મુકનાં, મત્રને
પાલે વેશ ॥ ૧૦ ॥ નૃપનું કારજ પિયું નુમે, મહોટું લાઘ્યા રિંગ ॥
લંકાવતિનો જાણયો, જિહાં મયાં બંટનાં રિંગ ॥ ૧૧ ॥
જો મિત્રમ જાણો નુમે, તો મુજ નેશો મંગ ॥ દોહટ પરેશું તુમ
તળી, જોડું લંકા રંગ ॥ ૧૨ ॥

॥ દાહ ૮ થી ॥ આસનગ યોગી ॥ એ દેવી ॥ તર થી
તમ કારે માંધલ પ્યારી, મુજ તુ છે મોહનગ મી રે ॥ મુંદરી મમ
નેશી ॥ તુજ દુઃખ દેખિ હું મુલક પાડે, તુજ નિશિ દિન વિતને
ધ્યાતું રે ॥ મું० ॥ ૧ ॥ પ્રાગપરી છે તું મુજ વાહાલી, તિ
મ પંદને ગેહની વાહાલી રે ॥ મું० ॥ તું મુજ ચિતારેલ સમા
ની, તું મુજ શુદ્ધિ નિશાની રે ॥ મું० ॥ ૨ ॥ જવ થડ ને મધુ
ની મોહવાની, મોતરી તુણું છાની રે ॥ મું० ॥ લેવ જિગ્યત
પયો તુજનુ મેલો, ધયો મંદંધ વૃષ્ટે મેલો રે ॥ મું० ॥ ૩ ॥
મહોનિશ લાખલ શ્દે તુજ કેળી, ધનું ધનું કરી કટું ફેરી રે
॥ મું० ॥ તુજને મુકનાં મન નથી કરેતો, પંચે પાટનાં પગ
મપાં રહેતો રે ॥ મું० ॥ ૪ ॥ વળ મું કરાવે નૃપતાં મેવા,
કેમથી પદે પેટની ફેવા રે ॥ મું० ॥ જો નૃપનું કહ્યો નરિ કરિ
યે, તો નૃપનો જવ હિન થરિયે રે ॥ મું० ॥ ૫ ॥ જેહન
ને જોતિયો મારો, તમ ધરનો ધોનો વશારો રે ॥ મું० ॥
એ રંગ, ને શીત છે મયને, કાન વીરે જમ રહે મરહે રે ॥
મું० ॥ ૬ ॥ ને પાટે તું મુંદરી મોગી, મુજ ખાજા રે રિયે
તોરિ રે ॥ મું० ॥ ધોત્ર-તે જઈ આરિય રોષો, નૃપનું તુજો
ને પોશે રે ॥ મું० ॥ ૭ ॥ જવ રમનો રહે માંધલ પ્યારી,
તુમ રેત તમાના વયાગ રે ॥ ધોત્રન મયનેશી ॥ મુજ વતો
મે મુરારિ મમિયા, મિત્યા છો રૂપે આકર્યા રે ॥ મું० ॥

नें करी कह्यो रे, वेहनं मन बश करी लेमोरे ॥ घणी
 लामण दीज रे, तस अमृतफलरस लीज रे ॥ १७ ॥ व
 बयामणी बहेली रे, लेइ भावजो दी छतां पहेली रे ॥ १८ ॥
 ख मलामण दीधी रे, दोष दासीने विदाय कीधी रे ॥ १९ ॥
 दासी वण छाब ने लेई रे, पड़ोती हरिबल परे बेई रे ॥ २० ॥
 बेठी हरिबल नारी रे, मूकी छाब ते आगल सारी रे ॥ २१ ॥
 कहे दासी मधुरी बाणी रे, नृप मुकी ए तुमने जानीरे ॥ २२ ॥
 उपर छे घणो नेह रे, घणुं कुं कहिये गुणगेह रे ॥ २३ ॥
 दिनधी तुम घर भाव्योरे, तिण दिनधी तुम दिल् भाव्यो
 भलां भोजन जब तुम मीस्यां रे, तिण बेलायो नृप दिल्
 स्यां रे ॥ २४ ॥ देखा नृपारी सुधदाइरे, नृप चाहे तुमने
 दाइ रे ॥ एक लालच रहे तुम करीरे, निम सोमीने
 गिरे ॥ २५ ॥ तुम विरहें की नृप हरे रे, राज काज तं मूर्या
 रे ॥ जेम योगी मझने व्यावे रे, तेम नृप तुम नाम जपाव
 ॥ २६ ॥ इम रामे एकरी तुमने, मन मेल करो तुम
 ॥ सगिला सगिला मिल्यां जोडो रे, नृपनुं हूँ तान म तोडोरे
 ॥ २७ ॥ बाइ नून मोहंदाये पुण्यारे, नृपनुं यइ मोत सगाइरे
 ए बात विधाताये बेला रे, जाने पयसां साकर भेला रे ॥ २८ ॥
 तुम जो करो सांगनपणी रे, नृप आवे तुम परे रयगरी ॥ २९ ॥
 बाने छाम छे तुमनेरे, राजी की घोखो भमनेरे ॥ ३० ॥
 इम दामांजी सांभणी बाणीरे, नव कुमरी रोपे मरानीरे ॥ ३१ ॥
 ब लागे विछीनो चटकोरे, निम कुमरीने लागे भटकोरे
 ॥ ३२ ॥ हिवे सुगमो कुमरी व्यावे रे, नर सुखदा
 ने भावे रे ॥ एतो बीजा वझामनो डाल रे, लखे
 नवमी रमाल रे ॥ ३३ ॥

॥ दुहा ॥ हिवे कुमरी कोवे की, दे दामांजि मार ॥

निम जीवित नगै, नहदा पाटु प्रहार ॥ १ ॥ नाटी जीवित ले
 इने, चतुरा दाही जेह ॥ नृप आगल आवी बहे, सचली मांडी
 तेह ॥ २ ॥ नासंत भूमारे थड़, केनी कहं माहाभाम ॥ लहेजे
 भी देणे पटी, ए फल लयो तुम काम ॥ ३ ॥ स्वामी तुम'प
 रसादधी, जदियो कुंशीपाक ॥ साजो हलदर सेवहुं, तव हो
 शे सन चाक ॥ ४ ॥ स्वामी हरिबलनी मिया, 'दीठी वरी कु
 पात्र ॥ जाणे काँअचबेलही, घर सग्वी नहीं यात्र ॥ ५ ॥
 ते मांडे प्रभुजो मुणो, ए नावे तुम हाथ ॥ एहयां मनहु बाल जो,
 कर जोही कहू नाथ ॥ ६ ॥ एह वचन दासी तणां, सांभाल
 नृप बलहाय ॥ हा हा में ए हुं करहुं, इम नृप धोखो कराय ॥
 ॥ ७ ॥ श्री मनमें पागे रनां, देवे श्री करी बाल ॥ नृप कन्या
 परमादधी, व्याप्ते द्विज भसात ॥ ८ ॥ जाण्युं हनु वरा आय
 से, हरिबल केरी नारि ॥ पण साहायुं शणि नारिये, उतारहुं
 नृपवारि ॥ ९ ॥ हाणि अने दासी वहु, थड़ नृप चिते एम ॥
 एह दुख केहने शालहुं, टोटे दापो जेम ॥ १० ॥ इम नरपति
 शरण करे, सांभलि दामी बेग ॥ ते दिन वयारे आदशे, देखहुं
 ते सौ नेण ॥ ११ ॥ पोलि बीबी फिरि मोरुहुं, जेद विचक्षण
 होय ॥ एपद सगीला मानपी, भिनवी आगे सोय ॥ १२ ॥
 तव पटराणी निनमिया, भीतिमती मुण गेट ॥ नेहने नेही नृप
 कहे, सांभल तु ममनेह ॥ १३ ॥ कारण एक तुमहुं भवे,
 गुणग लही कहुं तुम ॥ हरिबल केरी जे मिया, मेलर आणी
 मुस ॥ १४ ॥ तव राणी कहे कंतने, मांमलजो माँहनाथ ॥
 भीति यथागे पलकमें, लेइ सांहुं तुम हाथ ॥ १५ ॥ एन करी
 जेदा तुम, बीहुं छवि निग दार ॥ चाली हरिबल मंदिरे, ग
 णी लेइ परिवार ॥ १६ ॥

॥ शकु १० श्री ॥ मूर्ती हिमनाना देगी ॥ हिने कुमरी अपरी

पेर, घेटी महेल मझार ॥ निज सखीयांशु परवगी, कारती के
 लि अंपार ॥ निज अवसर नृपराणी रे, जे गुणखाणी रे सार
 ॥ आवती दीठी रे मीठीयें, वसतसीरीयें निवार ॥ १ ॥ इ
 मरीये जाण्युं जे में इणी, दामीने काठी रे मोय ॥ क्रोध ब्रमे
 जे में इणी, तेहनी आवी ए लोय ॥ स्वीज्यो नृप तव जाणी रे,
 मुकी ए राणीने धाय ॥ इम कुमरी मन चितवी, लटपट मांख्यो
 उपाय ॥ २ ॥ तव कुमरी सनमुख जइ, राणीन भीडी रे बाय
 ॥ अगोअग मिलीने रे, चरणे नभे सह मांथ ॥ आगत स्वागत
 राणीनी, कुमरीयें कीधी रे जोर ॥ राणीनुं मन रीझवे, वसतमि
 री तिग ठोर ॥ ३ ॥ चंद्रवदनी दो बेडी रे, बाते एकज धान
 ॥ जगो स्वयंसी ऊतरी, रभा उग्वशी मान ॥ रूप अनूपम रे
 हुनां, हु कठ केनां वखाण ॥ जाणे कंठपे बादीयें, प्रगडी पुष
 प्रमाण ॥ ४ ॥ एहवी ए राज कुमारी रे, प्यारी दो गुणवंत ॥
 दासना सम्यो रे जोटी, मिलि करी वानडी संत ॥ वसंतमिरी
 शुभ सुंदरी, कहे पटगणीने आत ॥ मल्ले रे पयारयां राणीनी,
 कोटी सुधारयां रे काज ॥ ५ ॥ तुम आवे अम मंदिर, पारन
 हवी जी चंग ॥ अम मारिगु जे काय हुये, ते कहौ जी सुंग ॥
 तव गी कहे कुमरीने, छे एक तुमशु जी काग ॥ बरि
 कराने थापया, आवी छुं गृगधाम ॥ ६ ॥ एम करीने
 रे भापे रे, नवखो नवसरी हार ॥ बलां बीजां बहु
 मां, भुग भापे श्रीकाग ॥ तव कुमरीये जाण्युं जे, राणीयें मां
 ह्यो जी पाम ॥ जो नहि रागुं तो अगल, होवे भरोटो विना
 ग ॥ ७ ॥ नृपनी राणीने दुखवनां, पूरवे नहि इण ठान ॥ ते
 प्राणीने कमरीयें, सुअर राख्यां जी ताम ॥ मुखनी पिटात्रे क
 गो कहे, दुमनी राणीने नेह ॥ बडेन करीने थापो, ते अंज जा
 ण्यु जी तेह ॥ ८ ॥ ते मन जागजो राणीनी, वसंतमिरी जे

भोचाप ॥ ते नही बाँट जे आकरा, पवने कर्म दोलाय ॥ उग
 यणी दिशि मूकी जो, ऊगे पच्छिम भाण ॥ गसिहर जो अग्रि
 ग्रो, तो सनी न पके ठाण ॥ ९ ॥ पण नुं करीये रागां जी,
 अंत तमजनी काम ॥ नृपने जो अमे दुहरीये, ना वनी फोडेनी
 दाम ॥ ने जाणी अमे राखीये, राणीनी तुमनु प्याम ॥ आजधी
 राखीये तुमनु, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक गांधली
 विननी, राणीनी कहे तुम बात ॥ मे मत लीधुं छे मग्न, नामे
 तप विलसान ॥ ते तप छे एक मासनु, ने नव पूरुं रे धाय ॥
 तव नरपतिनी राणीनी, मननी दाम पृगय ॥ ११ ॥ इम स
 त्य राखवा कुमरीये, मुखयी साकर घोल ॥ दीयो दिवासो ग
 र्खाने, वपनाबी रंगराल ॥ तव हर्गस्त यइ राणीए, सांभली
 कुमरी बोल ॥ रागी जाणे मुग्न आव्यायो, कुमरीये राख्यो जी
 तोळ ॥ १२ ॥ अवमर लही कुमरीये, राणीने इपे वपाय ॥ अ
 शन वसन कर्मी रीसही, राणीने कीव विदाय ॥ राणीये पण
 नइ नृपने, यीम बघाई दीव ॥ आजधी एक मासांतरे, नृप तुम
 मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कुमरीये, मांडधुं महोटे मंडा
 ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी भिन्नछे मुजाग ॥ तिहां कों
 नायनी वेढा, मग्ननुं भजन करेय ॥ निधे मरुथे कुमरी, जीव
 ने धेये घरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें रागीनी सांभली, वाणी नूर
 हरखेन ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी मावड घांत ॥ नृप
 ना मनमे गंग, तरंग ज्युं बटको रंग ॥ जाणे माणसुं मामने,
 थंनरे कुमरीनुं चंग ॥ १५ ॥ सागर पर्योपयनां जे, कदां महा
 टां रे आय ॥ ने भरखा पण जीवने, भोगवतां चही जाय ॥
 नो गुं इणमे मासनुं, जावुं केनिक बाग ॥ आजने काळ करता,
 बहेगे नात विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आज्ञा राख्ये, मदनरेग
 उल्लाम ॥ निशिदिन रहें पगन थइ, ज्युं मद पीथ विलाम ॥

पैं, बेडी महेल मझार ॥ निज सखीपांशुं परबगी, करी के
 लि अपार ॥ तिण अवसर नृपराणी रे, जे गुणखाणी रे सार
 ॥ आवतो दीठी रे मीठीयें, वसतमीरीयें तिवार ॥ १ ॥ इ
 मरीये जाण्युं जे में हणी, दामीने काढी रे मोय ॥ क्रोध बने
 जे में हणी, तेहनी आवी ए लोय ॥ खीज्यो नृप तब जाणी रे,
 मुकी ए राणनि धाय ॥ इम कुमरी मन चितवी, लटपट मांड्यो
 छपाय ॥ २ ॥ तब कुमरी सनमुख जइ, राणोन भीडी रे बार
 ॥ अगोभग मिलीने रे, चरणे नभे सह माथ ॥ आगत स्वागत
 राणीनी, कुमरीयें कीधी रे जोर ॥ गणीनुं मन रीझवे, वसंतमि
 री तिग डोर ॥ ३ ॥ चंद्रवदनी दो बेडी रे, बातें एकण धन,
 ॥ मण्यो स्वर्गधी ऊतरी, रभा उग्वर्गधी मान ॥ रूप अतृपम रे
 हुनां, हु कल केतां बग्वाण ॥ जाणे कंदर्प बादीयें, मगडी पुन
 प्रमाण ॥ ४ ॥ एडवी ए राज कुमारी रे, प्यारी दो गुणवन ॥
 छाया मग्गी रे जोडी, मिलि करी बातडी संत ॥ पसंतसिरी
 शुभ सुग्गी, कहे पदराणोने आन ॥ मलं रे पगारघां राणीनी,
 कोटी गुधारणां रे काम ॥ ५ ॥ तुम भावे अम मंदिर, पावन
 हुवो जी चंग ॥ अम सारियु जे काम हुवे, ते कहो जी सुंग ॥
 तर गी कहे कुमरीने, छे एक तुमग जी काग ॥ बडिन
 करीने थापवा, भारी छुं गुणघाम ॥ ६ ॥ एम कहिने
 रे भापे रे, नवज्यो नवमरो हारे ॥ बलां बीजां पदु
 मां, भुगत भापे श्रीदाग ॥ तर कुमरीयें जाण्युं जे, राणीयें
 ल्यो जी पाम ॥ जो नरि रागु तो अगल, होवे महोरो नि
 न ॥ ७ ॥ नृपनी गणीने दुहवतां, पूजे नहि उग ठान ॥
 जागिने कमरीयें, भुवभ गल्यो जी नाम ॥ मगनी पिठात्रे
 जी वदे, पुननी गणीने नेद ॥ बडिन करीने थापो, ते अने
 लु जी तेड ॥ ८ ॥ ते मन जागनो राणीनी, वसंतमिरी जे

भो राय ॥ ने नही कोट जे आकरा, पवने कर्ग रोनाय ॥ उग
 मणी दिने मुकी जो, ऊगे पच्छिन माण ॥ मगिहर जो अग्रि
 छे, तो मनी न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण गुं करीये रागी नी,
 अने तमनाजी काम ॥ नृपने जो अमे दुइवीये, तो वनी कोटेनी
 दाम ॥ ने जाणी अमे राखीये, राणीजी तुमनु प्याय ॥ आजधी
 राखीये तुमनु, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभली
 विनती, राणीजी कहें तुम यात ॥ मे जन लीधुं छे मृगन, नामे
 तर विनयान ॥ ते तप छे एक मामनु, ते जइ पुरुं रे धाय ॥
 तव नरपतिनी राणीजी, मननी दाम पूगय ॥ ११ ॥ इम स
 त्य राखवा कुमरीये, मुखयो साकर घोल ॥ दीयो दिलासो ग
 स्तीने, चपनावी रंगराल ॥ तव इगस्ति यइ राणीए, सांभली
 कुमरी बोल ॥ रागी जाणे मुक्त आच्यानो, कुमरीये राख्यो जी
 तोळ ॥ १२ ॥ अबसर लही कुमरीये, रागीने हर्ष वपाय ॥ अ
 जन बसन कर्ग रीसवी, रागीने कीव विदाय ॥ रागीये पण
 जइ नृपने, शीघ्र बधाई दीर ॥ आजधी एक मासातरे, नृप तुम
 मनोरय मिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कुमरीये, मांडपुं मढोटे मंडा
 ण ॥ ते तप पूरण यइ रहे, कुमरी मिळसे सुजाग ॥ तिहां लगे
 नायजी वेढा, मभूनुं मजन करेय ॥ निधे मरुगे कुमरी, जीव
 ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इगिपरें रागीनी सांभली, राणी नृप
 इगस्ति ॥ भाग्य दिशा नृप जागी, भांगी भावउ घांत ॥ नृप
 ना मनमे गंग, तरंग ज्ये बरुओ रंग ॥ जागे माणगुं मामने,
 धनरे कुमरीनुं चंम ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कथां मढो
 टां रे आय ॥ ते मग्सा पण जीवने, भोगदनां चहो जाय ॥
 तो गुं इणमे मासनुं, जावुं केतिक बार ॥ आजने कारु करणी,
 बहेने नाग विचार ॥ १६ ॥ इगिपरें आज्ञा वासमे, मदनरेग
 उडाम ॥ निश्चिदिन रहे मगन यइ, ज्ये मद पीध निजाम ॥

भोचाप ॥ ने नही कोट जे आकरा, पबने कर्ग दोसाय ॥ उग
 मणी टिभि मुकी जो. ऊगे पच्छिम भाण ॥ मसिहर जो अग्रि
 झे, तो मती न चुके ठाण ॥ ९ ॥ पण शुं करीये रागी जी,
 अंत तमझी काम ॥ नृपने जो अमे दुहर्वाये, तो बर्ना फोडेनी
 ठाम ॥ ने जाणी अमे राखीये, राणीजी तुमशु प्यार ॥ आजधी
 राखीये तुमशुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभळो
 विनती, राणीजी कहूं तुम बात ॥ मे वन म्हीरुं छे मयत, नामें
 तप विलखान ॥ ते तप छे एक मामनू. ते जब पूरूं रे थाय ॥
 तब नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पूगय ॥ ११ ॥ इम स
 त्य राखवा कुमरीये, मुखी साकर घोळ ॥ दीयो दिवासो ग
 खीने, चपजावी रंगराल ॥ तब इगखित यद् गणीए, सांभळी
 कुमरी बोल ॥ रागी जाणे मुझ आख्यानी, कुमरीये राख्यो जी
 तोळ ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीये, रागीने हर्ष उपाय ॥ अ
 धन बसन कगी रीसही, गणीने कीय विदाय ॥ रागीये पण
 जद् नृपने, शीघ्र बघाई दीप ॥ आजधी एक मासांतरें, नृप तुम
 मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासतुं तप कुमरीये, मांडचुं मढोटे मंढा
 ण ॥ ते तप पूरण यद् रहे, कुमरी मिलेण मुजाग ॥ तिहां लों
 नापनी बेठा, प्रभुनं भजन करेय ॥ निश्चै मरुशे कुमरी, जीव
 ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें रागीनी सांभली, वाणी नूद
 इगखेत ॥ आग्य दिजा तुझ जागी, भांगी भावठ घांत ॥ नृप
 ना मनमे गंग, तरंग उचुं बढ्को रंग ॥ जाणे माणशुं मामने,
 अंतरे कुमरीनुं चंग ॥ १५ ॥ सागर पळ्योपमनां जे, नखां मढा
 टां रे आय ॥ ते सग्या पण जीवने, भोगवनां वही जाय ॥
 तो शुं इजमे मामनूं, जावुं केतिक बाग ॥ आजने काळ करती,
 बढे नाम विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आज्ञा रागमे, मदनवेग
 उझान ॥ निशिदिन रहे मगन धड, ज्युं यद् पीथ रिजाम ॥

भोराय ॥ ने नही कोट जे आकरा, पयने कर्म दोलाय ॥ उग
 मणी दिशि मकी जो, ठगे पच्छिम भाण ॥ मगिहर जो भीम
 प्रो, तो मनी न बुके ठाण ॥ ९ ॥ एण गुं कर्गये रागी मी.
 अने तमशनी काम ॥ नृपने जो अये दुहवीये, तो बनी कोटनी
 दाम ॥ ने जानी अये रागीये, राणीजी तुमहु प्याय ॥ आजभी
 रागीये तुमहु, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ एण एक मांभली
 विनती, रागीनी कहुं तुम घान ॥ मे जन लीधुं छे मृगन, नामे
 नव विरूपान ॥ ने तप छे एक मासनु, ने जद पुरुं ने थाय ॥
 तव नरपतिनी राणीनी, मननी दाम पुगय ॥ ११ ॥ इम स
 त्य राखवा कर्मरीये, मुखी साकर घोल ॥ टीवी दिनासो ग
 स्ताने, उपजावी रंगसाल ॥ नर हरम्वन यह राणीए, मांभली
 कृमी घोल ॥ रागी जाणे मुल आख्यानी, कर्मरीये रागीये जी
 तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कर्मरीये, रागीने हर्ष उपाय ॥ अ
 धन बसन कही गेली, रागीने कीव विदाय ॥ रागीये एण
 जट नृपने, भीम कपाई टीव ॥ आजभी एक मासांतरे, नृप तुम
 मनोग्य सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कर्मरीये, मांडधु महीटे मंडा
 ण ॥ ते तप पुरण यह रहे, कृमरी भिन्नछे सुजाग ॥ निहां कों
 नायजी वेदा, मभुनं मजन करेय ॥ निधे मरुभे कृमरी, जीव
 ने धैय धरेय ॥ १४ ॥ इगिपरें रागीनी मांभली, राणी नृप
 इग्वंत ॥ भाग्य दिशा नृप जागी, भांगी भारउ घान ॥ नृप
 ना मनमे मंग, तरंग उरुं उठळो रंग ॥ जांग माणनुं मासने,
 अंतरे कृमरीनुं चंम ॥ १५ ॥ सागर पन्योपमनां जे, कथां मटा
 टां ने आय ॥ ने मगखा एण जीवने, भोगवतां चही जाय ॥
 तो गुं इणये मासनु, जाहुं कोतिक बार ॥ आजने कारु करनी,
 बरेसे नाग विचार ॥ १६ ॥ इगिपरें आशा नागये, मदनयेग
 उडाम ॥ निशिदिन रहे मगन यह, ज्यु मद पीध विनाम ॥

भोदाय ॥ ने नही कोट जे भाकरा, पवने कर्म होमाय ॥ उग
 मणी दिव्य मूर्ती जो. ऊगे पच्छिम भाण ॥ मगिरर जो श्री
 द्वे, तो मनी न सुके ठाण ॥ ९ ॥ पण नुं करीये राजां जी.
 अने तमसनी काम ॥ नृपने जो अये दृढरूपे, तो धनी फोडनी
 ठाय ॥ ने जाली अये राखीये, राणीजी तुमनु प्याय ॥ भागधी
 राखीये तुमनुं, बहेनवणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक गांधर्व
 विनती, राणीजी कहें तुम वात ॥ मे व्रत स्वीयुं छे मृगत, नामे
 तव विलक्षण ॥ ते तप छे एक मासनु. ते जर पूरुं हे थाय ॥
 तव नरपतिनी राणीजी, धननी हाम पुगय ॥ ११ ॥ इम स
 ह्य राखवा कुमरीये, सुखी साकर पाल ॥ दीवो दिव्यालो म
 स्वीने, उपनाई रंगराल ॥ तव हर्गस्त यह राणीए. सांभली
 कुमरी होत ॥ रागी जाणे मुक्त आप्पागो, कुमरीये राख्यो जी
 तोख ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीये, रागीने हर्ष उपाय ॥ अ
 क्षन बसन कही रीसही, राणीने कीय रिदाय ॥ राणीये पण
 जइ नृपने, जोग बधाई दीव ॥ आनधी एक मासांतरे, नृप तुम
 मनोग्य सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तव कुमरीये, मांडपु मरोटे मंडा
 ण ॥ ते तव पूरण यह रहे, कुमरी भिन्नसे मुनाग ॥ निहां ऊगे
 नाथजी वेश, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निधे पच्छे कुमरी, जीव
 ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इतिपरें राणीनी सांभली, बाणी नू
 दग्वंत ॥ भाग्य दिव्या तुम जाली, भांगी भावत घांत ॥ नृप
 ना मनमे मंग. तरंग उपे दृढको रंग ॥ जाणे माणनुं सामने,
 धंतरे कुमरीनुं वंग ॥ १५ ॥ सागर पक्षोपमनां जे. कथां मंडा
 टां रे भाय ॥ ते मग्खा पण जीवने, भोगरतां बही जाय ॥
 तो नुं इणये मायनुं, जातुं कोतक बार ॥ आजने काठ करती,
 बरेसे नाग विचार ॥ १६ ॥ इतिपरें भावा रागमे, मदनरेग
 उडाम ॥ निश्चिदिन रहे मगन यह. ज्यु यह वीथ विनाम ॥

भोगाय ॥ ने नही बोट भे आकरा, पयने कर्ग दोलाय ॥ उग
 पणी शिशि मुकी ओ. ऊगे पण्डित भाण ॥ गगिहर जो धाप्र
 हरे, मो मर्ती न पूके टाण ॥ ९ ॥ पण नुं कर्गये रागी भी,
 अने मयशोती काम ॥ नृपने जो अमे दृष्टीये, मो बनी पोंटरी
 काम ॥ ने जाणी अमे रागीये, रागीनी तुमनु प्याय ॥ भागर्था
 रागीये तुमने, बोनपणुं निम्धार ॥ १० ॥ पण एक मासमां
 विनकी, रागीनी कर्ग तुम बाण ॥ मे मन मीपुं छे मग्नन, नावे
 तर विद्वान ॥ ने नप छे एक मासनु. ने नद पूरुं रे थाय ॥
 तर नरपतिनी रागीनी, मननी काम पुगय ॥ ११ ॥ इम म
 स्य रागवा कृमरीये, सुखधी साकर धोळ ॥ दीयो दिव्यासो ग
 र्थाने, उपजावी रंगवाल ॥ तर हरविन यह रागीए, सांभरी
 कृमरी धोळ ॥ रागी जाणे मुन्न भाव्यानी, कृमरीये राख्यो जी
 तोळ ॥ १२ ॥ अवसर नही कृमरीये, रागीने इपे उपाय ॥ अ
 नन बगन कर्ग रागी, रागीने बीर विदाय ॥ रागीये पण
 नद नृपने, रागी बपारि दीर ॥ भागर्था एक मासांतरे, नृप तुम
 मनोरथ मिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तर कृमरीये, मांडधु मरोटे मंटा
 ण ॥ ने नप पुण थर रहे, कृमरी मिनये मुनाग ॥ निहां कों
 नायनी वेडा, मभुतुं भजन करेय ॥ निधे मरुते कृमरी, जीर
 ने धेये धरेय ॥ १४ ॥ इगिरये रागीनी सांभरी, बाणी नू
 इगिरये ॥ भाग्य दिजा तुम जागी, भागी भावः सांभ ॥ नृप
 ना मनये मंग, तरन उषुं बहरीये रंग ॥ जांग भावर्ग मासने,
 अंतरे कृमरीये धंग ॥ १५ ॥ सागर पक्षोपमनां जे, कथां मटा
 टां रे भाय ॥ ने मग्ग्या पण जीवने, भोगरनां बही जाय ॥
 तो नुं इणने मासनुं, जागुं वैलिक बाण ॥ भागने काठ करनी,
 बटेमे नाम विचार ॥ १६ ॥ इगिरये आशा वामने, मदनमेग
 उल्लाम ॥ निमिदिन रहे मगन थर, उषुं मद पीय विद्वाम ॥

भोलाय ॥ ने नहीं कोट जे आकरा, पवने कर्ग दोलाय ॥ उग
 मणी दिगि मुकी जो, ऊगे पच्छिन माण ॥ मगिहर जो भ्रमि
 श्रे, तो मनी न पुरे ठाण ॥ ९ ॥ पण नुं करीये रागां जी,
 अने तपसांजी काम ॥ नृपने जो अमे दृढवीये, तो बनी फांटेजी
 ठाम ॥ ने जानी अमे राखीये, राणीजी तुमसु प्यार ॥ आजधी
 राखीये तुमसुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक मांभलो
 विननी, राणीजी कहूँ तुम बात ॥ मे प्रन श्रीधुं छे मृगत, नामे
 तप विहरान ॥ ने तप छे एक मासन, ने जब पूरुं रे धाय ॥
 तब नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पूगय ॥ ११ ॥ इम स
 त्य राखवा कुमरीने, मुखयी साकर घोल ॥ दीयो दिनामो ग
 स्त्रिने, उपमावी रंगराल ॥ तब हर्गस्त्रि यद् गणीए, सांभची
 कुमरी घोल ॥ रागी जाणे मुम आच्यानो, कुमरीये राख्यो जी
 लोळ ॥ १२ ॥ अबसर लही कुमरीये, रागीने हर्प उपाय ॥ अ
 शन बसन कर्ग रीझही, रागीने कीव विदाय ॥ रागीये पण
 जइ नृपने, शीघ्र बपार्ही दीव ॥ आजधी एक मासांतरे, नृप तुम
 मनोरथ मिद्ध ॥ १३ ॥ मासन तप कुमरीये, मांढसुं मढोटे मंडा
 ण ॥ ते तप पूरण यद् रहे, कुमरी मिलथे मुजाग ॥ निहां लो
 नायजी बेडा, मभुनें मजन करेय ॥ निभे मरुथे कुमरी, जीव
 ने धैय धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें रागीनी सांभ ही, राणी नृप
 हर्गस्त्रि ॥ आग्य दिशा तूझ जागी, भांगी भावठ घांत ॥ नृप
 ना मनमे रंग, नरंग उधुं वृत्तयो रंग ॥ जाणे माणसुं मासने,
 धनरे कुमरीसुं चंग ॥ १५ ॥ सागर वन्योपमनां जे, कशां मढा
 टां रे आय ॥ ने मग्गवा पण जीवने, भोगवतां वही जाय ॥
 तो नुं दृष्टमे मासन, जावुं केतिक बार ॥ आजने काळ करतां,
 नरेने नाम विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वाममे, मदनमे
 उल्लाम ॥ निशिदिन रहे मगन थड, ज्युं यद् पीध रिलास ॥

भोलाय ॥ ते नदी कोट ने आकरा, पवने कर्ग टोलाय ॥ उग
 मणी दिगि मुकी जो, ऊगे पच्छिम भाग ॥ गमिहर जो भ्रमि
 हरे, तो सर्ती न चुके ठाण ॥ ९ ॥ पण गुं करीये राजा जी.
 अंत समझां काम ॥ नृपने जो अमें दुहवीये, तो बनी फोदेनी
 ठाम ॥ ने जाणी अमें राखीये, राणीजी तुमहु प्यार ॥ आजधी
 राखीये तुमहुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभली
 विनती, राणीजी कहूं तुम बात ॥ में वन लीधुं छे मयत, नामें
 तर विस्मान ॥ ने तप छे एक मासनु, ते जर पूरुं रे थाय ॥
 तब नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पूगय ॥ ११ ॥ इम स
 रप राखवा कुमरीये, मुखी साकर घोल ॥ दीयो दिनासो ग
 स्तीने, उपजावी रंगराल ॥ तब इग्वित थइ गणीए, सांभली
 कुमरी घोल ॥ राणी जाणे मुझ आप्यानी, कुमरीये राख्यो जी
 तोळ ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीये, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ
 धन वसन करी रीझवी, गणीने कीव बिदाय ॥ राणीये पण
 मइ नृपने, शीघ्र बघाई दीर ॥ आजधी एक मासांतरें, नृप तुम
 मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कुमरीये, मांढरुं यहीटे मंडा
 ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मिलिसे मुजाग ॥ निहां ऊगे
 नायजी वेडा, प्रभुतुं मजन करेय ॥ निभे मऊभे कुमरी, जीर
 ने धैर्य घरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांभली, वाणी नू
 इग्वित ॥ भाग्य दिक्षा नृप जाणी, भांगी भारड घांत ॥ नृप
 ना मनमे मंग, तरंग उयें वळ्ळो रंग ॥ आजे भाणसुं घामने,
 अंतरें कुमरीनुं वंग ॥ १५ ॥ मागर पळ्योपमनां जे, नखां महां
 टां रे आय ॥ ते समस्ता पण जीवने, भोगवनां चही जाय ॥
 तो गुं इणमें मासनुं, जातुं केतिक बार ॥ आजने काळ करती,
 बहेभे नास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा चागमें, मदनवेग
 उड्याम ॥ निश्चिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीथ रिलाम ॥

भोजाय ॥ ते नही कोट जे आकरा, पवने कर्ग दोलाय ॥ उग
 मणी दिशि मुकी जो, ऊगे पच्छिम भाण ॥ मसिहर जो अग्नि
 द्वे, तो सती न चुके ठाण ॥ ९ ॥ पण नुं करायें राणी जी,
 अंतें तमनजी काम ॥ नृपने जो अमें दुहवीयें, तो बली फोडेनी
 ठाय ॥ ने जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमनुं प्यार ॥ आजर्था
 राखीयें तुमनुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक मांभली
 विनती, राणीजी कहुं तुम बात ॥ में मन लीधुं छे भूयन, नामें
 तव विलसान ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जब पूरुं रे थाय ॥
 तब मरपतिनी राणीजी, मननी हाम पूगय ॥ ११ ॥ इम स
 त्य राखदा कुमरीयें, मुखयी साकर घोल ॥ दीवो दिलासो ग
 स्वीने, उपजावी रंगरोल ॥ तब इग्विन थड गणीए, सांभली
 कुमरी बोल ॥ रागी माणे मुन्न आप्यानो, कुमरीयें राख्यो जी
 सांभ ॥ १२ ॥ अबसर लही कुमरीयें, रागीने हर्ष उपाय ॥ अ
 धन वसन करी रीझही, गणीने कीव निदाय ॥ रागीयें पण
 जइ नृपने, शीघ्र बचाई दीव ॥ आजर्था एक मासांतरें, नृप तुम
 मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीयें, मांडवुं मरोटे मंडा
 ण ॥ ते तप पूरण थड रहे, कुमरी मिळवें मुजाग ॥ निहां ऊगे
 नापनी वेढा, मभुनुं भजन करेव ॥ निधे मरुथे कुमरी, जीव
 ने धेये धरेव ॥ १४ ॥ इजिपरें रागीनी मांभली, राणी नूर
 इग्वेत ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी भारट घांन ॥ नृप
 ना मनमे गंग, तरंग उचुं बरुओ रंग ॥ जागे मालधुं मामने,
 अंतरे कुमरीनुं चंग ॥ १५ ॥ सागर पर्योपपनां जे, कदां मरो
 टां रे आय ॥ ते सरखा पण जीवने, भोगवतां चहो जाय ॥
 तो भुं इणमे मासनुं, जावुं कोतक बाग ॥ आजने काळ करती,
 बरेमे नात विचार ॥ १६ ॥ इजिपरें आशा चागमें, मश्नरेग
 उलाग ॥ निशिदिन रहे मगन थड, ज्युं मद पोष रिजाग ॥

भोऽप ॥ ते नहीं कोट जे आकरा, पवनें कर्ग दोलाय ॥ उग
 मणी दिगेन घुकी जो, ऊगे पच्छिन भाण ॥ समिहर जो अग्रि
 झे, तो सती न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण नुं करीये राणी जी,
 अंतें तमझंजी काम ॥ नृपने जो अमें दुइवीये, नो वनी फेडिजी
 ठाम ॥ ते जाणी अमें राखीये, राणीजी तुमहुं प्यार ॥ आजधी
 राखीये तुमहुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभळो
 विनती, राणीजी कहूँ तुम वान ॥ में वन श्रीधुं छे सुग्रत, नामें
 तप विम्वरान ॥ ते तप छे एक मामनु, ते जब पूरुं रे धाय ॥
 तब नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पूगय ॥ ११ ॥ इम स
 त्य राखवा कुमरीये, मुखयी साकर घोल ॥ दीवो दिलासो ग
 खीने, चपजाबी रंगरोल ॥ तब हरखित थइ गर्णीए, सांभळी
 कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुझ आख्यानो, कुमरीये राख्यो जी
 तोळ ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीये, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ
 शन वसन कर्ग रीसही, गर्णीने कीव विदाय ॥ राणीये पण
 जइ नृपने, शीघ्र वषाई दीव ॥ आजधी एक मासांतरे, नृप तुम
 मनोरय सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीये, मांडवुं मढोटे मंडा
 ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मिलये सुजाग ॥ तिहां लो
 नायजी वेदा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निधें मळभे कुमरी, जीर
 ने धेय धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी भांभळी, वाणी नूर
 इखंत ॥ भाग्य दिशा नृप जागी, भांगी भावठ घांत ॥ नृप
 ना मनमें गंग, तरंग उचुं उचुंओ रंग ॥ जागे भाणमुं मामने,
 धंतरे कुमरीनुं चंग ॥ १५ ॥ सागर वल्योपमनां जे, कक्षां महां
 टां रे आय ॥ ते सरखा पण जीवने, भोगवतां वही जाय ॥
 तो नुं इणमें मामनुं, जावुं केनिक बार ॥ आजने काळ करता,
 बहेजे नाम विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वासमें, मदनमेग
 उज्जाम ॥ निशिदिन रहें भगन थइ, ज्युं थइ पीथ ॥ १७ ॥

भोलाय ॥ ते नही कोट जे आकरा, पवने कर्ग डोलाय ॥ उग
 धनी दिनि मुकी जो, ऊगे पच्छिम भाण ॥ समिहर जो अग्रि
 झे, तो सती न चुके ठाण ॥ ९ ॥ पण नुं करीये राणी जी,
 अते तमशंजी काम ॥ नृपने जो अमे दृढीये, नो वर्ना फेडेनी
 ठाय ॥ ते जाणी अये राखीये, राणीजी तुमनु प्यार ॥ आजधी
 राखीये तुमनुं, घडेनपनुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभलो
 विनती, राणीनी कहुं तुम बात ॥ मे वन लीधुं छे सुप्रत, नामे
 तप विल्लयान ॥ ते तप छे एक मासनु, ते जर पूरुं रे थाय ॥
 तब नरपतिनी राणीजी, धननी हाम पूगय ॥ ११ ॥ इम स
 ह्य राखवा कुमरीये, मुखधी साकर घोल ॥ दीयो दिलासो ग
 स्तीने, चपनादी रंगराल ॥ तब हगलित थड गणीए, सांभली
 कुमरी घोल ॥ रागी जाणे मुक्त आप्यानी, कुमरीये राख्यां जी
 तांळ ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीये, रागीने हर्ष उपाय ॥ अ
 दन वसन कर्ग रीझशी, गणीने कीव निदाय ॥ रागीये पण
 तड नृपने, शीघ्र बघाई दीव ॥ आजधी एक मासांतरे, नृप तुम
 मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीये, मांड्युं महोटे मंदा
 ण ॥ ते तप पूरण थड रहे, कुमरी पित्रशे सुजाग ॥ तिहां छगे
 नायकी वेठा, मधुतुं भजन करेय ॥ तिथे मरुशे कुमरी, जीव
 ने धैये धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें रागीनी सांभली, बाणी नू
 हगलन ॥ भाग्य दिक्षा नृप जागी, भांगी भावठ घांन ॥ नृप
 ना मनमे गंग, तरंग ज्युं चकळो रंग ॥ जाणे माणशुं मामने,
 धनरे कुमरीनुं चंग ॥ १५ ॥ सागर पर्योपमनां जे, कक्षां महो
 टां रे आय ॥ ते सरखा पण जीवने, भोगरनां बरी जाय ॥
 नो शुं उणमे मासनुं, जातुं केतिक बार ॥ आजने काळ करती,
 बरेसे नास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा बागमे, मदनवेग
 उल्लाम ॥ निशदिन रहे मगन थड, ज्युं मद सीध रिलाम ॥

भोलाय ॥ ने नही कोट जे आकरा, पयने कर्ग दोनाय ॥ उग
 यणी दिनेय मूली जो. ऊगे पच्छिम भाण ॥ नमिहर्ग जो श्रीप्र
 द्ये, तो मनी न पूरे ठाण ॥ ९ ॥ पण गुं कर्गये रागी नी,
 अने नमस्ती काम ॥ नृपने जो अमे दुहर्गये, तो धनी कोटेनी
 दाम ॥ ने जाणी अमे राखीये, राणीजी तुमनु प्याग ॥ आजधी
 राखीये तुमनु, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक गांभनी
 विननी, राणीजी कटुं तुम बाण ॥ मे प्रन लीपुं छे गुप्तन, नावे
 तप दिम्बरान ॥ ने तप छे एक मामनु, ने नर पूरुं रे थाय ॥
 तब नरपनिनी राणीजी, मननी दाम पृगाय ॥ ११ ॥ इम स
 त्य राखवा कुमरीये, मुखधी साकर घोल ॥ दीयो दिन्नासो रा
 खीने, उपजाई रंगराल ॥ तब हर्गस्वत थइ राणीए. सांभनी
 कुमरी बोल ॥ रागी जाणे मुझ आप्यानी, कुमरीये राखी नी
 तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीये, रागीने हर्ष उपाय ॥ अ
 धन बमन कगी राखी, रागीने कीय विदाय ॥ रागीये पण
 जइ नृपने, शीघ्र बपाई दीय ॥ आजधी एक मासांतरे, नृप तुम
 मनोग्य सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कुमरीये, मोहधु मरोटे मंदा
 ण ॥ ने तप पूरण थइ रहे, कुमरी भिन्नसे सुजाग ॥ निहां लगे
 नायनी नेठा, ममनुं मजन करेय ॥ निधे मरुधे कुमरी, जीर
 ने पैये धरेय ॥ १४ ॥ इनिपरे रागीनी सांभनी, वाणी नृप
 हर्गस्वत ॥ भाग्य दिन्ना तुझ जागी, भांगी भावट घांत ॥ नृप
 ना मनमे गंग, तरंग उये बटल्यो रंग ॥ आज माणशुं मामने,
 अंतरे कुमरीनुं चंग ॥ १५ ॥ सागर पत्थोपमनी जे, कथां महां
 टां रे भाय ॥ ने मग्गवा पण जीवने, भोगवतई यही जाय ॥
 तो गुं इणवे मासनुं, जागुं कोनरु बार ॥ आजने काळ कर्ता,
 बहेने नास विचार ॥ १६ ॥ इनिपरे भाशा राखमे, मदनरेग
 उडाम ॥ निश्चिदिन रहे मगन थइ, ज्यु मद पीथ दिन्नाम ॥

भोलाय ॥ ने नही कोट जे आकरा, पवने कर्ग होलाय ॥ उग
 मणी दिगि मूकी जो, ऊगे पच्छिम भाण ॥ मसिहर जो अग्रि
 झे, तो मती न चुके ठाण ॥ ९ ॥ पण नृं करीये रागी जी,
 अने तमशंजी काम ॥ नृपने जो अमे दृढवीये, तो बनी फोटेनी
 टाम ॥ ने जाणी अमे राखीये, राणीजी तुमशु प्यार ॥ आजधी
 राखीये तुमशुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक मांभलो
 विनती, राणीजी कटुं तुम बात ॥ मे मन लीधुं छे मृगत, नामे
 तप विद्वान ॥ ने तप छे एक मामनुं, ते जब पूरुं रे धाय ॥
 तब नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पुगय ॥ ११ ॥ इम स
 त्य राखवा कुमरीये, मुखयो साकर घोळ ॥ दीयां दिलासो ग
 खीने, उपजावी रंगराल ॥ तब दृग्स्तिर यह गणीए, सांभली
 कुमरी धोल ॥ रागी जाणे मुझ आय्यानो, कुमरीये राख्यो जी
 तोळ ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीये, रागीने हर्ष उपाय ॥ अ
 नन बसन कगी रीझवी, रागीने कीव विदाय ॥ राणीये पण
 जइ नृपने, शीघ्र बघाई दीन ॥ आजधी एक मासांतरे, नृप तुम
 मनोरय सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीये, मांड्यु मढोटे मंदा
 ण ॥ ते तप पूरण थड रहे, कुमरी भिन्नसे मुजाग ॥ निहां लो
 नायजी वेडा, मभुनुं मजन करेय ॥ निधे मऊशे कुमरी, जीव
 ने धेये धरेय ॥ १४ ॥ इतिपरै रागीनी सांभली, वाणी नृ
 दृग्स्तिर ॥ भाग्य दिना तुम जागी, भांगी भावड घांन ॥ नृप
 ना मनमे गंग, तरंग ज्युं बह्यो रंग ॥ जागे माणशे मामने,
 अंतरे कुमरीशुं चंग ॥ १५ ॥ रागर पत्न्योपमनां जे, कदां मढो
 टां रे आय ॥ ते मरखा पण जीवने, भोगवतां बही जाय ॥
 तो शुं द्रणमे मामनुं, जावुं केतिक बाग ॥ आजने काठ करती,
 बहने नाम विचार ॥ १६ ॥ इतिपरै आशा वासमे, मदनवेग
 उद्दास ॥ निश्चिदिन रहे मगन थड, ज्युं मद पीध ॥ १७ ॥

भोदाय ॥ ते नही कोट जे आकरा, पवने कर्ग दोलाय ॥ उग
 मणी दिशि मूकी जो, ऊगे पच्छिम भाण ॥ ममिहर जो अग्रि
 झे, तो सती न चूके दाण ॥ ९ ॥ पण गुं करायें राणी जी,
 अंतें तमगंजी काम ॥ नृपने जो अमें दृढवीये, तो बली फोडेजी
 ठाम ॥ ते जाणी अमें राखीये, राणीजी तुमझु प्यार ॥ आजधी
 राखीये तुमझु, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभलो
 विनती, राणीजी कहूं तुम बात ॥ में व्रत लीयुं छे मद्यत, नामें
 तर विरहान ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जब पूरूं रे धाय ॥
 तब नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पूगय ॥ ११ ॥ इम स
 त्य राखवा कुमरीये, मुखधी साकर घोल ॥ दीयो दिलसो ग
 स्तीने, चपमावी रंगरोल ॥ तब हगवित थइ गणीए, सांभली
 कुमरी बोल ॥ रागी जाणे मुझ आच्यानो, कुमरीये राख्यो जी
 तोळ ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीये, रागीने हर्ष उपाय ॥ अ
 शुन वसन कर्ग रोझशी, रागीने कीय विदाय ॥ राणीये पण
 नइ नृपने, शीघ्र बचाई दीन ॥ आजधी एक मासांतरें, नृप तुम
 मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कुमरीये, मांड्यु महोटे मंडा
 ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मिल्हें मुजाग ॥ तिहां को
 नायजी वेढा, मझुं भजन करेय ॥ निधें मरुं कुमरी, जीव
 ने थेंय घरेय ॥ १४ ॥ इगिपरें रागीनी सांभली, वाणी नू
 हलखंत ॥ भाग्य दिशा तुझ जागी, भांगी भावट छांत ॥ नृप
 ना मनमे गंग, तरंग उंचु बळखो रंग ॥ जागे माणझुं मामने,
 अंतरे कुमरीशुं चंग ॥ १५ ॥ मागर पण्योपमनां जे, कदां महो
 टां रे आय ॥ ते सगुवा पण जीवने, भोगवनां बरी जाय ॥
 तो गुं उणमें मासनु, जावुं केतिक बार ॥ आजने काळ करता,
 बरेछे बात विचार ॥ १६ ॥ इगिपरें आज्ञा वासमें, मदनवेग
 उल्लाम ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीथ निराम ॥

भोलाय ॥ ने नही कोट भे आकरा, पवने कर्ग दोलाय ॥ उग
 मणी दिगि मूकी जो, ऊगे पच्छिम भाण ॥ मणिहर तो अधि
 श्रे, तो मनी न चुके ठाण ॥ ९ ॥ एण नुं करीये राजा मी,
 अने मयशंजी काम ॥ नृपने जो अमे दृढवीये, तो बनी फोडजी
 दाम ॥ ने जाणी अमे राखीये, राणीजी तुमनु प्याम ॥ आजधो
 राखीये तुमनु, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ एण एक मांभली
 विननी, राणीजी कहं तुम बात ॥ मे जन लीधुं छे मयन, नामे
 तर विद्वान ॥ ने तप छे एक मासनं, ने जर पूरुं रे धाय ॥
 तब नरपतिनी राणीजी, मननी दाम धुगय ॥ ११ ॥ इम स
 स्प राखवा कुमरीये, मयवी साकर घोल ॥ दीवो दिलामो रा
 खीने, जपनावी रंगराल ॥ तर इग्नित यह गणीए, सांभली
 कुमरी बोल ॥ रागी जाने मुम आल्यानो, कुमरीये राखीये जी
 तोळ ॥ १२ ॥ अबसर लही कुमरीये, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ
 शन वसन करी गेहरी, राणीने कीव विदाय ॥ रागीये एण
 मइ नृपने, शीघ्र बपारि दीव ॥ आजधो एक मासांतरे, नृप तुम
 मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कुमरीये, मांढपुं महोटे मेढा
 ण ॥ ने तप पूरण यह रहे, कुमरी मिलेछे सुजाग ॥ तिहां सगे
 नायजी वेदा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निधे मरुधे कुमरी, जीव
 ने धैर्य घरेय ॥ १४ ॥ इतिपरं रागीनी सांभली, वाणी नृप
 इच्छे ॥ भाग्य दिक्षा तुम जागी, भांगी भारउ घांन ॥ नृप
 ना मनमे मंग, तर्ग श्युं बहल्यो रंग ॥ आजि माणनुं मासनं,
 धेनेरे कुमरीनुं संग ॥ १५ ॥ मागर पक्षीपमनां जे, कथां महा
 टां रे आय ॥ ने समस्त एण जीवने, योगदान बही जाय ॥
 तो नुं उणमे मासनं, जातुं केनिक बाग ॥ आजने काठ करतो,
 बहेने नाग विचार ॥ १६ ॥ इतिपरं आज्ञा वामने, मदनवग
 उल्लाम ॥ निश्चिदिन रहे मगन यह, ज्युं मइ पीथ पिलास ॥

भोलाय ॥ ते नही कोट जे आकरा, पवनें कर्ग होलाय ॥ उग
 मणी दिशि मूकी जो. ऊगे पच्छिम भाण ॥ मसिहर जो अग्नि
 झे, तो सती न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण नुं करीये राणी जी.
 अंतें तपगुंजी काम ॥ नृपने जो अमें दुहवीये, तो वर्नी फोडेजी
 ठाय ॥ ते जाणी अमें राखीये, राणीजी तुमणुं प्यार ॥ आजधी
 राखीये तुमणुं, बडेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभळी
 विनती, राणीनी कहे तुम वात ॥ में व्रत लीयुं छे मयत, नामें
 तप विलपान ॥ ते तप छे एक मासनुं, तें जव पूरूं रे थाय ॥
 तव नरपतिनी राणीनी, मननी दाय पूगय ॥ ११ ॥ इम स
 त्य राखवा कुमरीये, मुखयी साकर घोल ॥ दीवो दिवासो ग
 स्वीने, उपनावी रंगरोल ॥ तव हरस्वित थड गणीए. सांभळी
 कुमरी बोल ॥ रागी जाणे मुग्न आप्यानी, कुमरीये राख्यो जी
 तोळ ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीये, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ
 शन वसन कर्ग रीझवी, राणीने कीव विदाय ॥ राणीये पण
 जइ नृपने, शीघ्र वषाई दीर ॥ आजधी एक मासांतरे, नृप तुम
 मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तव कुमरीये, मांड्यु मरोटे मंदा
 ला ॥ ते तप पूरण थड रहे, कुमरी मिलसें मुजाग ॥ तिहां लों
 नायजी वेढा. प्रभुनुं मजन करेय ॥ निधे मरुथे कुमरी, जीव
 ने धैर्य घरेय ॥ १४ ॥ इगिपरें राणीनी सांभळी, राणी नूर
 हर्षत ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी भारट घांत ॥ नृप
 ना मनमें गंत, तरंग उंचुं उदळ्यो रंग ॥ जाणे माणसूं पामने,
 अंतरे कुमरीसुं चंन ॥ १५ ॥ गागर पक्ष्योपमनां जे. कदां महां
 टां रे आय ॥ ते सग्व्या पण जीवने, भोगरतां चही जाय ॥
 तो नुं इणमें पामनुं, जातुं केतिक बार ॥ आजने वाळ करुनी,
 बरेसे नात विचार ॥ १६ ॥ इगिपरें आज्ञा जागमें, मदनवेग
 उडाम ॥ निशिदिन रहे मगन थड, ज्युं मद पोथ दिवाम ॥

खारो सागर रे, उछके जल्ले असमान ॥ ते देखी धीवर घगुरे,
 दग्ग्यो गइ तस नान रे ॥ प्र० ॥ ९ ॥ जो फिरी पाजो पर
 भणी रे, जाउं तो न रहे मान ॥ चीहं छही हूं आवियो रे, कांउं
 अजाण्युं काम रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ नामें ग्रही ज्युं छुंदरी रे,
 मूहे तो अंप थाय ॥ भग्नगयी जीव संहरे रे, ए दृष्टांत बनापरे
 ॥ प्र० ॥ ७ ॥ बली चरकनीये ग्रहो रे, मुल्यमां बागिय
 बोर ॥ आयुं पाछं न ऊतरे रे, करे पस्तावो जोर ॥ प्र० ॥
 ८ ॥ इम धीवर शुरे घगुं रे, सागर कांउं उभाय ॥ धीवर
 जाण्युं आवी बन्यो रे, बाय न दीनो न्याय रे ॥ प्र० ॥ ९ ॥
 किहां गयो माहरो इण सये रे, माणवत्तभ मुझ इष्ट ॥ समरपा
 मार करे घगुं रे, टाले सचलाई रिष्ट रे ॥ प्र० ॥ १० ॥
 इम चिमवनीं ततस्त्रिगे रे, आण्यो सागर देव ॥ कहे सुर श्री तुं
 दिना कां रे, मूहं लंका तुझ हंवर ॥ प्र० ॥ ११ ॥ शुं व
 छ तुझने इहा कणे रे, आवहुं थपुं हो केम ॥ सुर कहे कां भ
 झ मांदिने रे, जाण्युं जाये जमे रे ॥ प्र० ॥ १२ ॥ तव हरि
 बल कहे देवने रे, सांभलो तानजी मुझ ॥ नृप हेंते बिंदु छवीरे,
 आण्यो कहं ह तुझ रे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ ते सांभली जलपति
 पयोरे, देव स्वरुगी अश्व ॥ हरिवल ते अश्वे चढी रे, जसां
 तरी लघो दिश्व रे ॥ प्र० ॥ १४ ॥ प्रभुजी भल्ले आन्या तु
 मे नाय ॥ सुर तहनीं ग्रही बाय ॥ प्र० ॥ मुझ शान थयो
 तुम हाय ॥ प्र० ॥ तर हूं थयो मडोयो मनाय रे ॥ प्र० ॥
 १५ ॥ ए आंकरी ॥ लंका भागमें मूहने रे, देव भयो परगट
 काम पडे तुं संभारने रे, मुहने करी गहगट रे ॥ प्र० ॥ १६ ॥
 कहने सुर मयो रे, पडोमो ते निज ठाम ॥ हरिवल लंका
 ने रे, मनमें लघो आराम रे ॥ प्र० ॥ १७ ॥ तेने प्र
 १८ ॥ झलकनी रे, ह्यमय लंका पीठ ॥ जेइनी जनमये माभ

१ रे, नेहरी जनेरे डीठ रे ॥ ५० ॥ १८ ॥ नंदन बन सप
 णिदरा रे, देखी घरो सुदत्त ॥ परिमल पसरपो सिंदु निभे
 ॥ कुमन ननां त्रिहां बह रे ॥ ५० ॥ १९ ॥ घंसा गुलाब
 ॥ केतकी रे, योगरा मालती जेह ॥ जाने मुरवाडी कुली रे, ह
 ॥ देव नितेरे नेह रे ॥ ५० ॥ २० ॥ अब कंदेव ने मुरतक
 ॥ मुरतना मोहन बेल ॥ हेम रजतनां ओपरी रे, पमरी सिंदु
 ॥ देवे रेह रे ॥ ५० ॥ २१ ॥ नागचह्नी शायना रे, बांढ
 ॥ आनि मोहन ॥ केसि जंवेरी फालसां रे, दाहिम एक मोहनरे
 ॥ ५० ॥ २२ ॥ जानो फल जावंतरी रे, नज ने तमाल ने पम
 ॥ एके तखरे नीरजे रे, चानुगजाक नव रे ॥ ५० ॥ २३ ॥
 देव कुमुद ने पलपी रे, मुंदर केसर छोड ॥ निमनां पिमनां
 ॥ बागोली रे, देव बदाय अखोड रे ॥ ५० ॥ २४ ॥ पृणी
 ॥ श्रीपाल भेलदी रे, सीताफल सह हू ॥ खारक रापण कस
 ॥ दां रे, सिंदु जांघ दूध रे ॥ ५० ॥ २५ ॥ इस अनेक ने जा
 ॥ तिनी रे, बनमध भार अहार ॥ भोगी जनने कारण रे, नगद
 ॥ धई संतार रे ॥ ५० ॥ २६ ॥ बासो हू मंगरक रे, धरि
 ॥ दां भट्टनोप ॥ रंजपुरी ने मारमा रे, जखमोदा कर मोप
 ॥ रे ॥ ५० ॥ २७ ॥ इन दहिबन मोनो बं रे, के
 ॥ कावन मुरमान ॥ लखि धीना जलमनी रे, पमनी ॥
 ॥ ग्यारमी डाल रे ॥ ५० ॥ २८ ॥

॥ दुरा ॥ संकापरिमर बाटिका, मोरे अपि रत्नोत्तम ॥
 ॥ जाने नंदनरन नली भविनी प्रगटि नजीक ॥ १ ॥ बनक
 ॥ रपणने मरुतना, मोया मोहेन अलंन ॥ खडोमरतो श्रमदु ध
 ॥ शी, बागिनि निप उज्ज्व ॥ २ ॥ नग नगी रिताबरी, किय
 ॥ र अमर बाज ॥ मरने मरे डोठे निनी मोरे मोन पैमान ॥
 ॥ ३ ॥ मपुगी धानि भागमने, थइ रवि दानो दान ॥ दहिबन

न जे कोय ॥ तब तुम भाग्यबलें कही, बीहुं में छन्युं सोय ।
 ॥ ७ ॥ ते नृप भागालेइने, हु आब्यो छुं आहि ॥ लंकापति
 तेइया रिना, किम जरण त्यांदि ॥ ८ ॥ कुममासरी बरु
 कह, माधवो मझरी वान ॥ लंकापति मदिरा बरें, उंयने के
 मृग जान ॥ ९ ॥ ते मांयो किम बावशे, आपगे जावुं गेह ।
 श्रेष्ठानि केन जायवु, कडिग कसो तुमै पद ॥ १० ॥ जो प्र
 तप मयन कसो, जावु बीभावण पाम ॥ देवनपी एक खडग छे
 जावु न नइ नाम ॥ ११ ॥

॥ दाल १४ बी ॥ यमरा डोवा ॥ ए देखी ॥ तब हा
 व १५ कस नागने रे, जाऊ उतावलां त्यांदि ॥ मोमन प्यारी ।
 जारना नो, सम रीन रे खडग जे चंद्रहास आहि ॥ मो० ।

॥ लावो १६ गुमग जइ लावो, तुमै डोवम करसो यपी
 । मो १७ आक ॥ देनाय शक्ति दिन पंचमी रे, लगन
 र अराय । मो० ॥ तो गमे मुमने मानमै रे, महनोग रे
 राय । मो १८ । १ मांइना वि खडगनी रे, श्रेष्ठानीनी जे
 ना० ॥ लाव बेने निन बगेना रे, ते रिं लावना तेइ ।
 । मो० १९ ॥ यण जमर बदनायी चड रे, जगमे होमू हो

॥ मो० ॥ खडगना दण पदे १, ने मन कर जो कोय ॥ मो०
 २० ॥ कसना हाय ने कोनइ १, जमर न कीजे करण ॥ मो० ।

॥ हा २१ मेनायमा १ उता रवा दो पण ॥ ॥ २२ ॥ ते म
 कामा कावने १ भाषां ने दृष्टान ॥ मो० ॥ इम श्रीवा

॥ स्वामीनी १ बाग नानो मीन ॥ मो० ॥ २३ ॥ रिं
 कुवरा मद निडा कमे रे, तब रिमोपग उहांदि ॥ मो० ॥ मो

॥ निशने सुनो म्हा रे, मदिरा छाकनी मांदि ॥ मो० ॥ २४ ।
 कस रिहल करिने ब्रह्म १, मगर जे छे चंद्रहास ॥ मो० । २५

॥ जमर कोने नानि म्हा रे, आरी रंगम पाम ॥ मो० ॥ २६

ज्यो स्वर्गा आ खडगनी रे, जे कहि सहिनाणी एह ॥ मो० ॥
 देवनमी स्वर्ग स्वर्गनी रे, ऊलसं मच्छो बिदेह ॥ मो० ॥
 ॥ ९ ॥ हिवे सानग्री इपनी रे, मेळवे आवागेह ॥ मो० ॥ सार
 रयण ने सौपती रे, पियुने जे कोठ भरिय ॥ मो० ॥ १० ॥
 तुंबी जलमाये ग्रही रे, दंपती चाल्या दोय ॥ मो० ॥ आव्या
 जे लंका बरी रे, लहे मनोबंछित सोय ॥ मो० ॥ ११ ॥ स
 परपो सागर देवता रे, मच्छोय पर उजमाल ॥ मो० ॥ आ
 ब्यो सुर पण देवता रे, करुणावंत कृपाल ॥ मो० ॥ १२ ॥
 किहां मूर्छे हिवे तुमने रे, सुर बोल्या तनकाल ॥ मो० ॥ मुको
 स्वाभी मुमने रे, निज नगरी विशाल ॥ मो० ॥ १३ ॥ अ
 न चडावी दो जणा रे, मृग्या नगर नजीक ॥ मो० ॥ बिन
 व्यु होगे तुम तणु रे, सुर कोहे जाणनो ठीक ॥ मो० ॥ १४ ॥
 एम करीने ते गयो रे, नाखी जे निज धान ॥ मो० ॥ मन
 बंछित सफलुं धपुं रे, इंपतिपृण्य नियान ॥ मो० ॥ १५ ॥ नग
 रीनी जे बाटिका रे, तेहमे उतारो कोट ॥ मो० ॥ दंपति परे
 गदगाटिका रे, जाणे मनोग्य सिद्ध ॥ मो० ॥ १६ ॥ हिवे
 माली संप्या समे रे, आव्यो निज घर हेत ॥ मो० ॥ ग्रग्या
 खानी दृष्टिये रे, आनी ते नजरें रेत ॥ १७ ॥ किहां गई प्या
 री, मो मन प्यारी ॥ ए आंकणी ॥ हल । लतो जेतो फिरे रे,
 सपळे मंदिर मय्य ॥ कि० ॥ पुत्री न दीठीं शुं करे रे, पलि
 पयो जोवा सझ ॥ कि० ॥ १८ ॥ बलि नवि दीदी तुंबी रे,
 जे भरीं भट्टन तोय ॥ कि० ॥ ले गई साथें तुंबी रे, कोइक
 पुरुषने जोय ॥ कि० ॥ १९ ॥ पगळु जोवा नीकल्यो रे, पग
 पग जेतो घाट ॥ कि० ॥ पगळीपनो पग अटकल्यो रे, नव
 मयो तेहने उच्चाट ॥ कि० ॥ २० ॥ पग जोयो नळवि म
 नी रे, पुत्री गड करि नाथ ॥ कि० ॥ आराधिक ने भीमनारे,

भूमि पदया दोष हाथ ॥ कि० ॥ २१ ॥ आंतो रंतो ते व
 र्यो रे, भाव्यो ते निज घेर ॥ कि० ॥ पुत्री विरहे ते धव्यो,
 गुं दिवे कबं ते पेर ॥ कि० ॥ २२ ॥ पुत्री तुंबी गत पद रे,
 नाणे गइ रण खेत ॥ कि० ॥ रंडानी रंडा मई रे, टपसुं पण
 गइ लेत ॥ कि० ॥ २३ ॥ रांक तणे घेर सुरमणी रे, रं
 कटो केतो वार ॥ कि० ॥ पूरब भवनी बेरणी रे, दे गइ मो
 हो खार ॥ कि० ॥ २४ ॥ पुत्री परजे जागतो रे, पामरुं म
 हांडू राज ॥ कि० ॥ होंन धणी मन भागतो रे, माणशु पुत्री
 राज ॥ कि० ॥ २५ ॥ तेहमें एके न संपजो रे, फोक
 कजेती कीच ॥ कि० ॥ देवना मनमां जी भजी रे, एको वात
 न सीध ॥ कि० ॥ २६ ॥ पण पुत्री पर घरे मई रे, बसति
 गाणे मंसार ॥ कि० ॥ एक एकने देइ वरे रे, पुत्री पर पर
 वार ॥ कि० ॥ २७ ॥ ते में खोटी आदी रे, लोभे खोयो
 वार ॥ कि० ॥ तो किम आवे पाथी रे, खोप्यो ते व्यवहार ॥
 मो० ॥ २८ ॥ नीतिनी चाल में नहि गशी रे, कीषो अनीति
 विचार ॥ मो० ॥ तो किम रहे ए पदमणी रे, रांक घरे मुम
 सार ॥ मो० ॥ २९ ॥ जेहना मंदध ने के गयो रे, छाना करी
 ने सोच ॥ मो० ॥ जे पार्तु इतु ने धपु रे, जो दिवे करवो जो
 व ॥ मो० ॥ ३० ॥ मालीये एम मन वाल्यापु रे, भावीनां प्रयो
 वळ ॥ मो० ॥ भातम कुळ मालीये रे, काडी नाळपु गळ ॥
 मो० ॥ ३१ ॥ मगां राबंदि नागने रे, रान उतागी नाम ॥ मो० ॥
 प्राप्तिये वात विमाने रे, नेदी भाव्यो आवाम ॥ मो० ॥
 ॥ ३२ ॥ सपटा विरोग ने भांगियां रे, उपन्यो रग रमाळ
 ॥ मो० ॥ पुग्ग सहज जागीयां रे, भांगिया दुग्ग जमाळ ॥
 ॥ मो० ॥ ३३ ॥ दिवे हरिबळनी जे पद रे, सांवळो पुग्ग
 विमाळ ॥ मो० ॥ बीजा उल्लामनी ए कही रे, लगे
 खोदयो हाळ ॥ मो० ॥ ३४ ॥

॥ घुरा ॥ दिवे हरिबल रजनीसमे, बाढ़ेय कीध ठाय ॥
 कुमुमिरी मूक तिहां, पहोतो ते निजधाम ॥ १ ॥ वसंतसिरी
 पेढेली मिया, जोते तेहनुं चरिय ॥ मुझ ऊपर पण केहवुं, राखे
 मनह पवित्र ॥ २ ॥ इय जाणी निज मंदिरे, आय्यो रजनी म
 प्य ॥ तस्करनो परे सांभले, देई कान ने शुद्ध ॥ ३ ॥ तिण
 अवसर जे विरोहणो, वसंतसिरी ते बाल ॥ पांयु भाव्यो मामे
 तरे, तेहनी थइ चकचाल ॥ ४ ॥ तब एक पंखी सूवयो, पा
 न्यो छे घग्माहि ॥ तस आंगल केहे विगहणी, वसंतसिरी जे
 वछाहि ॥ ५ ॥ रे पंखी मुझ पीपुदो, गयो लंका शुभ काज ॥
 अवधि कही एक मामनी, ते थइ पूरी आज ॥ ६ ॥ केशरभ
 र पिपा कहचले, छांड गर्यदभखमाहि ॥ जलभाव रयण पोका
 रियो, मो भख भावत नाहि ॥ इजीअ लगण भाव्यो नही, ना
 न्यो को संदेश ॥ जाह निठर पेढेली गयो, मुसन बाले पेग ॥
 ॥ ७ ॥ तो दीहा किन निर्गम, किन कगी राखुं शील ॥ भदनवे
 ग ते भूयणी, केहे पडियो कुशील ॥ ८ ॥ आज लगण तो
 माहल, में पण राखुं एह ॥ पण ते अवधि पूरी थइ, कुमानि चुक
 जे तेह ॥ शुक्रवाक्य ॥ दीवसुता सून तामरिपु, ता त्रिय बाहनाहा
 ॥ सो सुंदर तुझमें नाहि, कीयो कौन विचार ॥ ९ ॥ ते
 माटे तुं सुडला, जा मुझ प्रीतम पास ॥ संदेशो मुझ घरतणो,
 जने कहें ताम ॥ १० ॥

॥ डाल १५ मी ॥ विज्ञानीनी ए देवी ॥ सुहाजी हो अभी
 रस पाउ तुझने रे ॥ सु० ॥ चखुं दादिय द्राव ॥ सुहा सयण
 बाढ ॥ ए आंजणी ॥ सुहा जीहो चांच भरावुं जुरमे रे ॥ सु० ॥
 देउ चली आंवा साख ॥ सु० ॥ १ ॥ सु० ॥ संदेशो मुझ
 दाखवो रे ॥ सु० ॥ येखव तुं मुझ जीव ॥ सु० ॥ सु० ॥ गाइ
 न हं गुन माइग रे ॥ सु० ॥ आदिन मुखा सजीव ॥ सु० ॥

॥ २ ॥ सु० ॥ बूधे भरीश तुष्ट पेटने रे ॥ सु० ॥ देख
 ने लांच ॥ सु० ॥ सु० ॥ जे हुं थोलुं ते सहो रे ॥ सु० ॥
 जे करीने साच ॥ सु० ॥ ३ ॥ सु० ॥ हुं कर जोटी वीनपुं रे
 सु० ॥ मांयल माहरो वात ॥ सु० ॥ सु० ॥ सघला पंसीमे करीरे
 ॥ सु० ॥ उत्तम ताहरी जात ॥ सु० ॥ ४ ॥ सु० ॥ सह पंसी
 निरसेहो रे ॥ सु० ॥ तुं छे चतुर सुजाण ॥ सु० ॥ सु० ॥
 रूपे तु रलियामणो रे ॥ सु० ॥ मीठी ताहरी बाण ॥ सु० ॥ ५ ॥
 ॥ सु० ॥ जीर्णी ताहरी पांखदा रे ॥ सु० ॥ चांच राती तु
 भंग ॥ सु० ॥ सु० ॥ रुही ताहरो आंखदा रे ॥ सु० ॥
 राती केशू रग ॥ सु० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सोने मढावुं
 ही रे ॥ सु० ॥ बूधे पखालु पंख ॥ सु० ॥ सु० ॥ हार
 ठगु गले मोतीना रे ॥ सु० ॥ लाल टकानो अटक ॥ सु० ॥
 ॥ ७ ॥ सु० ॥ विरहिणी नारी तुं देखीने रे ॥ सु० ॥
 दूपा धरे मनमोडे ॥ सु० ॥ सु० ॥ संदेशो मुझ नाहने रे
 ॥ सु० ॥ तुझ कहेजे उछांहे ॥ सु० ॥ ८ ॥ सु० ॥ मानिक
 तुझ उपगारदो रे ॥ सु० ॥ थाडच नही गुण चोर ॥ सु० ॥ सु० ॥
 कांधो गुण जाणे नही रे ॥ सु० ॥ माणस नही ते दोर ॥ सु० ॥
 ॥ ९ ॥ सु० ॥ ऊठाने तु पंखीया रे ॥ सु० ॥ तुं मन करे
 हील ॥ सु० ॥ सु० ॥ कहेजे मुझ संदेशदो रे ॥ सु० ॥ मि
 शं होये नाड रंगील ॥ सु० ॥ १० ॥ सु० ॥ भवला तु
 घर एकली रे ॥ सु० ॥ छे विरहिणीने वेश ॥ सु० ॥ सु० ॥
 मरि मरि श्रमर पड रे ॥ सु० ॥ यद् नारी नरवेश ॥ सु० ॥
 ॥ ११ ॥ सु० ॥ मीतमना विरहायको रे ॥ सु० ॥ मुखा न
 टोमि कांय ॥ सु० ॥ सु० ॥ पण तंबोली पान ज्युं रे ॥ सु० ॥
 दिन दिन पीयां होय ॥ सु० ॥ १२ ॥ सु० ॥ पियु विरह
 कनि नागिरे रे ॥ सु० ॥ तानियां नेल तंबोल ॥ सु० ॥ सु०

सार्ग दीपां पटोपां रे ॥ सु० ॥ नजीपां सखीतुं द्रकोत्त ॥
 सु० ॥ ११ ॥ सु० ॥ विष्ट विष्ट त्रिणगार पटोत्तां रे ॥ सु० ॥
 संगे अंगार ममान ॥ सु० ॥ सु० ॥ संदन नृश भगीठिपो रे
 ॥ सु० ॥ नागिजी नागर पान ॥ सु० ॥ १४ ॥ सु० ॥ पि
 पु विरहे घटी नामदो रे ॥ सु० ॥ दास ने परमन होय ॥ सु०
 ॥ सु० ॥ भिण परने म्मिज आमजे रे ॥ सु० ॥ विष्ट विष्ट ए
 मति जौय ॥ सु० ॥ १५ ॥ सु० ॥ नयने नावे निद्रही रे
 ॥ सु० ॥ भारे न भस्त्र ने पान ॥ सु० ॥ सु० ॥ नाह बिना पेली म
 गुं रे ॥ सु० ॥ ऊरगि केनु सयान ॥ सु० ॥ १६ ॥ सु०
 पूरव पापना योगपी रे ॥ सु० ॥ णनी री नमवार ॥ सु० ॥
 सु० ॥ भजोवन विष्ट पर नही रे ॥ सु० ॥ तम एन मपो
 बरवार ॥ सु० ॥ १७ ॥ सु ॥ ए संदिर ए मानिया रे ॥
 सु० ॥ विष्ट बिना शून्य भागार ॥ सु० ॥ सु० ॥ रस कम
 सार्ग छेरजा रे ॥ सु० ॥ मगि ते विष्ट पटार ॥ सु० ॥ १८ ॥
 सु० ॥ यौवन करवत पार ज्युं रे ॥ सु० ॥ निरदिशी नारीने
 रोय ॥ सु० ॥ सु० ॥ नाहबिष्टां कामिनो रे ॥ सु० ॥ एम
 एम पामे ते दोष ॥ सु० ॥ १९ ॥ सु० ॥ काऊने कड मे
 ली मपो रे ॥ सु० ॥ निशिदिन रही रे पुन्याय ॥ सु० ॥
 सु० ॥ नेह मुपारम निबिंदे रे ॥ सु० ॥ ओन्हे विष्ट पर भाव
 ॥ सु० ॥ २० ॥ सु० ॥ ने दिन बनारि देवगुं रे ॥ सु० ॥
 करुणा मननी रे जान ॥ सु० ॥ सु० ॥ शान्तजीवन मुद्र दे
 रानि रे ॥ सु० ॥ काँवे श्रीनरु माव ॥ सु० ॥ २१ ॥
 सु० ॥ दिनहर पहेनां ऊवने रे ॥ सु० ॥ जो मोनय परे भाव
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ वो सामगनी ऊवने रे ॥ सु० ॥ श्रीनरुं ने जुगना
 प ॥ सु० ॥ २२ ॥ सु० ॥ जो काटि नान्नी ऊवने रे ॥ सु० ॥
 ओ नरु निमि प्रभाव ॥ सु० ॥ सु० ॥ पेट ब्यागी न्याः पदे रे

हू बीनी भेद ॥ २ ॥ मैं तुमने पहिवां कही, ते संभारो नाथ ॥
 नृपने मोदिर दाखव्यं, दीपक लेइ निज हाथ ॥ १ ॥ ते बात
 आवो आगळें, जव तुमैं चाल्या लंक ॥ तव नृप मुझ कैट पदयो,
 जार्णाने निःशंक ॥ ६ ॥ भेदेमंतो ज्वट भइ, गज शिर नारो धू
 ल ॥ निम नृप दासी मोकली, करवा मुझ अनुकूल ॥ ७ ॥

॥ दाल १६ मी ॥ एतो नयदीगे मोती अजव बन्यो ॥ ए
 देशी ॥ एतो दासी मुझ कने मोकली, एतो लेइ मूलण साच ॥
 सोइव मोरा हे ॥ एतो शुवा रे चंदन भरगजा, एतो सीं सा भ
 रिया काच ॥ सा० ॥ १ ॥ सांभजो भीतम माइरा ॥ एतो
 देवा मुघने लांच ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ एतो, मीठी साकर
 मूत्रटी, एतो मीठा मेवा द्राख ॥ सा० ॥ एतो छाव भरी बली
 मोकली, एतो मीठी आंवा माख ॥ सा० ॥ १ ॥ सां० ॥
 एतो जरतानी शालू मलां, एतो आप्यां नव नवां चीर ॥ सा० ॥
 जाणे चाया मुरनारी तणां, एतो सोहं नेजमें हीर ॥ सा० ॥
 ॥ १ ॥ सां० ॥ इत्यादिक लेइ भेटणां, एतो मूव्यां चेटी साय
 ॥ सा० ॥ को चेटी मुझ आवीने, तुम भेट करे भुनाय ॥ सा०
 ॥ ४ ॥ सां० ॥ एतो दासी करे बली मुझने, तुमैं सांभलो ह
 भिन्न नार ॥ सा० ॥ एतो नृप राखे तुम ऊपरें, एकंगो यइ घ
 णो प्यार ॥ सा० ॥ ५ ॥ सां० एतो जे दिन तुम घरे आयि
 यां, एतो भोजन करवा सार ॥ सा० ॥ एतो ते दिनयी तुमैं
 चित्त बर्यां, मनयी न विसारे लिगार ॥ सा० ॥ ६ ॥ सां० ॥
 एतो ते ते दिनयी तुमैं घणूं, मिलवानी गले हंथ ॥ सा० ॥
 एतो एहमे जूड न जाणजो, तुम सत्य करि कहूं सून ॥ सा०
 ॥ ७ ॥ सां० ॥ एतो नव समझी हूं चित्तमां, नृप जाण्यो छंड कु
 भान ॥ सा० ॥ एतो विष्ट मुझ रीज चढी घणों, उठीने मे दी
 धी लात ॥ सा० ॥ ८ ॥ सां० ॥ एतो कुंदीपाक करघो यगाः

॥ सु० ॥ के मरुं सही विष खाय ॥ सु० ॥ २३ ॥ सु० ॥
 फेन विना शं जीववुं रे ॥ सु० ॥ कंत विना किशुं हेन ॥ सु० ॥
 ॥ सु० ॥ कंत विना शं मानवु रे ॥ सु० ॥ कंत विना शी सेक
 ॥ सु० ॥ २४ ॥ सु० ॥ ब्रह्म मर छाती फाटती रे ॥ सु० ॥
 रही नयीं शकती मेह ॥ सु० ॥ सु० ॥ विरहानलनी बाफमां रे
 ॥ सु० ॥ द्राक्षा रही छुं तेह ॥ सु० ॥ २५ ॥ सु० ॥ विर
 हिणी एम विलपे वणु रे ॥ सु० ॥ वसंतसिरी ससनेह ॥ सु० ॥
 ॥ सु० ॥ नयणें आंमु रेहती रे ॥ सु० ॥ जाणे उयुं भाद्रव मेह
 ॥ सु० ॥ २६ ॥ सु० ॥ वसंतसिरी एम पाठये रे ॥ सु० ॥
 शरुने मंदेशा निराग ॥ सु० ॥ सु० ॥ नारीनुं वृष सांभरी
 ॥ सु० ॥ बाल्यो मच्छां निराग ॥ सु० ॥ २७ ॥ सु० ॥ सो
 लां किवाड गहेलीयां रे ॥ सु० ॥ सूखी मननी राह ॥ सु० ॥
 सु० ॥ ऊल्लवियो पति आवियो रे ॥ सु० ॥ हर्षे उपाख्यां कि
 वाह ॥ सु० ॥ २८ ॥ सु० ॥ निजगतनुं मुख देखतां रे ॥
 सु० ॥ कामिनि हर्ष भगाय ॥ सु० ॥ सु० ॥ हर्ष विनोद जे उ
 पनो रे ॥ सु० ॥ पुस्तकें लिखियां न जाय ॥ सु० ॥ २९ ॥
 सु० ॥ मन बल्लही रे ॥ सु० ॥ ए पंचवदन्तमी डाल ॥ सु० ॥
 ॥ सु० ॥ बेधकने मध्ये बीजा उल्लासनी रे ॥ सु० ॥ कही शुभ
 राग रसाल ॥ सु० ॥ ३० ॥

॥ वृहा ॥ दिवे श्रीराम घरे आवतां, बाध्यो नवलो नेह ॥
 सु० माग्य पामा द्रव्या, भविष्ये वृथा मेह ॥ १ ॥ नर पल्लव पर
 अगना, वसंतसिरी गुगगेह ॥ मेम मरोवर श्रीलतां, वानी बांध
 यो देह ॥ २ ॥ दुंपति दोरंगे भिल्यां, मुख भर कीरी यात ॥
 दुःख दोहग हूँ गयां, मगरी ने मुख प्रात ॥ ३ ॥ कटे नारी
 विष्ट सांभरी, वृथी वृष्ट समनेह ॥ तुम चान्या लंकाभनी, पान

एता पालये, एता सांभनी शुठ उपदेश ॥ सा० ॥ एता हरि
 जन्मी परे पापेश, एता भरोमर मुख विशेष ॥ सा० ॥ १० ॥
 सा० ॥ एता मोरय दुद्ध परंपरा, तम गार्दीये ही सुदि ॥
 सा० ॥ एता गार भकम्बर सुधवी, एता मेळम्यो मृगत छंद
 ॥ सा० ॥ ११ ॥ सा० ॥ एता तस शिष्य पंडित सोहता,
 वि विजय करिराय ॥ सा० ॥ एता तम शिष्य वनरूप जग
 रपो, एता पंडित धारि मराय ॥ सा० ॥ १२ ॥ सा० ॥
 एता तम शिष्य कुशल विजय गजि, कमल विजय तस भ्रात ॥
 सा० ॥ एता तम शिष्य लहरीविजय कवि, एता दान क्रियाये
 मराय ॥ सा० ॥ १३ ॥ सा० ॥ एता तम शिष्य केदार
 भयर दो, एता तमयां कम शिष्य ॥ सा० ॥ एता मूरज पे
 र मनी परे, दोय बंवर तेज दोरेन ॥ सा० ॥ १४ ॥ सा० ॥
 एता तस पद एकज विवर, एता म्यान्विजय वजराज ॥
 सा० ॥ दोले दामे पुरो करयो, एता पीमो वलाम रताज
 ॥ सा० ॥ १५ ॥ सा० ॥ इति श्री जीवदत्ताचार्ये हरिविजय
 वर्णनामे सैवानन्दनामधनार्द्रः संपूर्ण ॥ २ ॥

॥ इति ॥ आनि सुवानपणे मय, वदन रहे निदिद्राम ॥
 केवलज्ञान मकार्थी, देवर विजय जगीत ॥ १ ॥ ग्यादि व
 एता मेमने, निदिद्रिनि वदो न्याय ॥ तम पद वंकर ह नये,
 वाचनेद्वाराय ॥ २ ॥ वचनाद्वयम वरमनी, वदिनन वरिष
 न मेर ॥ नवपदार वदिने मदा, वरती माता मेर ॥ ३ ॥
 वरम वदत ननु तेरनी, वाचा विद्या सोय ॥ दुध गार्दी एता
 सां मरा, दुध वन वंजित होय ॥ ४ ॥ दोरीवद केदार कदर
 नां, वरम कमल ननि दाम ॥ तम माविष हरितल मनी,
 वनरूप पीमो वलाम ॥ ५ ॥ उमदना दुम वावनी, होरे वदन
 वाय ॥ म्यान्वी मेरे नावनी, जाणे वद संवाद ॥ ६ ॥

नेन हग्विलने देगे, दो नृप धंश लवे हो० ॥ दो० ॥ का
 मेमो रंग देखाही, कोरे मुखी घणु हो० ॥ कोरे० ॥ इन्द
 र देह आठर, दे नृप घेसणु हो० ॥ दे० ॥ ५ ॥ प्रम
 रागन कीर, घणो हग्विल तणा हो० ॥ घ० ॥ दुँउ मेर
 ममाचार, नृप हरिवल भणी हो० ॥ नृ० ॥ कोरे हग्विल
 नृप लेका, गद भणि किम मया हो० ॥ ग० ॥ गद किम
 ण केण, ममाचार किम मया हो० ॥ म० ॥ ६ ॥ म
 रिवल ते स्वदग, कोरे मेउ भेटणु हो० ॥ क० ॥ म
 पे मोरान्यु, ए तुम पेटणु हो० ॥ प० ॥ दिंद हग्विल ने
 सांभलो, ग्यामी तुम भणु हो० ॥ ग्या० ॥ म
 साया, इरा रद तुम पणु हो० ॥ इरा० ॥ ७ ॥ के
 मागन आटा साटा मे मणा हो० ॥ कां० ॥ मे
 करो, लान्यो गण मणा हो० ॥ ला० ॥ म
 रेना, पुरी मजानधी हो० ॥ पु० ॥ म
 लागे मजानधी हा० ॥ ला० ॥ ८ ॥ म
 देनी सोजन रघो हो० ॥ मे० ॥ म
 र म उ रघो हो० ॥ मे० ॥ म
 ॥ ९ ॥ पारने गिने को, कोरे म
 ॥ १० ॥ विर गिनेय दल दुग, कोरे म
 माला पर्यादाव न, दीमे दल को
 मोर पने ने, दिनादा दल को
 भयमान, गिना रघे दल को
 भयानो मेह, उरु दीने दल को
 भय, ने दल को दल को
 देगी बिहापणी मे० ॥ ११ ॥
 पयो हो० ॥ १२ ॥

कामने हो० ॥ तु० ॥ कठिण करयो तिहां मन, संमारी
 मने हो० ॥ स० ॥ पोछ केम बलाय जे, कामे नीकल्यो
 ॥ का० ॥ मरण कबूल करयो पण, पाछो नवि
 हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उचमना ज बोल्, ते मनदत
 ग्या हो० ॥ ते० ॥ ते पाछा किम ओमरे, पंचमें
 हो० ॥ पं० ॥ पचनी सामे बोल् जे बोि यो ते ठलें हो० ॥ ने
 ते मननार्गी जीवतां, मूआमां भलें हो० ॥ मु० ॥ १३ ॥
 बयण चुकां ते मानवी, लेखे नवि गणे हो० ॥ ले० ॥
 भव परभव कार, गयो तस जिन भणे हो० ॥ ग० ॥ इम
 र्णाने स्वामी, तुमाग काजने हो० ॥ त० ॥ घाल्यो जलमे
 जीव, कठिण करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ बरिठ पण
 इतिबल कौतुक, नी नृप भागलें हो० ॥ नी० ॥ कल्पित बात
 करी कहे, ते सहु सांभले हो० ॥ ते० ॥ भलमें गयो ज
 आयो, ते हु मन मवगी हो० ॥ ते० ॥ तब एक राखस आ
 ब्यो ने, माहामा जल नरी हो० ॥ सा० ॥ १५ ॥ चंचो
 नो जाणीये मम ए, नाद प्रमाण उयु हो० ॥ ता० ॥ लांरो
 होड ते जाणीये बसममान उयु हो० ॥ व० ॥ दता लोडा क
 ल, करं करी कलमलो हो० ॥ क० ॥ अवली सरली दोद
 दौंगे धवी झलफली हो० ॥ टी० ॥ १६ ॥ जाने आंगो दो
 वही, भूंदी दंगर दंगी हो० ॥ भू० ॥ माथुं महोदु ने जाणीये
 इत्यले पुंमरी हो० ॥ इ० ॥ माथे कावग केन, ते जाणीये
 आंगगं हो० ॥ ने० ॥ दंगली समा दान, ते विग्या भा
 ग हो० ॥ नेवि० ॥ १७ ॥ नादममा दा दाथ ने, गायम झो
 ना हो० ॥ ग० ॥ अंगुलीना नम्य जाणीये, पावटा लोड
 हो० ॥ पा० ॥ पेट नो जाणीये, उदो, कूयो अदनो हो०
 ॥ क० ॥ थंम नमान दो चमन, ने गायम भेदनो हो० ॥ ने०

॥ १८ ॥ काक केंकाळ ममान, भयंकर भैरवो हो० ॥ भ० ॥
 नाग यमनो बंश, मगड्यो ओवनो हो० ॥ घ० ॥ घोषा
 नमनी झाल ने, दुखपी काडतो हो० ॥ घु० ॥ करतो मट्ट
 पाव, ने का हो पणतनो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ म्हा
 माव ज्ये मंध, मेराय दुर्वातनो हो० ॥ गं० ॥ उडग्यो
 निकडे आशर मे, मे दिन मानतो हो० ॥ ते० ॥ पडवो वि
 हायलो गसत, ने गाशयो मित्यो हो० ॥ ने० ॥ एरु मो तज
 वि सोतो, गसत देखा ज्यो हो० ॥ ग० ॥ २० ॥ ध्ये दव
 जाणियो ज्ञानो, पुजे आदियो हो० ॥ घ० ॥ विवार्नारव्यो
 पंदरतो जगादियो हो० ॥ घ० ॥ गज्यत काय मजात मे,
 नर बुद्धिको हो० ॥ मे० ॥ पानो रहिते सोलाप्यो, गज
 मने छे किरो हो० ॥ ग० ॥ २१ ॥ आचो मामा जहा,
 भाजेल दुवने करे हो० ॥ भा० ॥ पो अंधदान ने यामा,
 भाजेलने भक्ति पोर हो० ॥ भा० ॥ करतो तुझ नमादर्या, व
 डि ए उकरी हो० ॥ घु० ॥ गजो थरो नर गजम, पानो
 मजो भरो हो० ॥ वा० ॥ २२ ॥ पुजे गजस भाजेत, न
 रतो विरो धरो हो० ॥ ग० ॥ दिन न आग्यो जडपिये, न
 हज को वरी हो० ॥ ने० ॥ नर हरिदल वरे माग, हज
 मेहा मनो हो० ॥ ह० ॥ टाग्यो माग्य मागे, कात छे
 विरो परो हो० ॥ वा० ॥ २३ ॥ जग छे नृ काज, श्री
 प्रजापति हो० ॥ टी० ॥ नर गजम वरे भाजेत, हंस ने,
 कातो हो० ॥ टी० ॥ मीरी वाटे पोरे, पला नृ नृ
 हो० ॥ घ० ॥ ज्यो नृ आदयो भाजेत, मेरासे जग हो०
 ॥ मे० ॥ २४ ॥ ज्यो नृ नृ गजम, सोले हो पलो हा०
 पो० ॥ दिन नृ पुरे भाजेत, मेरासे जग हो० ॥ मे० ॥
 मेरासे मितने काव, न मेह वरी धरे हो० ॥ ने० ॥ २५ ॥

॥ १८ ॥ काल कंकाल समान, भयंकर भैरवो हो ॥ भ० ॥
 जागे यमनो बंधव, मगद्वे अभिनयो हो ॥ प्र० ॥ कोपा
 नलनी झाल ते, मुखी काढतो हो ॥ मु० ॥ करतो महद
 राम, ते कर दो पछाडतो हो ॥ ते० ॥ १९ ॥ मूआ
 साप ज्युं गंध, गंधाय दुर्वाननो हो ॥ मं० ॥ उदग्धी
 निकले आधार जे, ते दिन सातनो हो ॥ ते० ॥ एहवो बि
 हामणो राक्षस, ते साहामो मिल्यो हो ॥ ने० ॥ एरु तो नल
 धि बाजो, राक्षस देखी छल्यो हो ॥ रा० ॥ २० ॥ सौ तव
 जाणियो जूनो, पूज आरियो हो ॥ पु० ॥ विवर्न/वच्चो
 पररणो जगाटियो हो ॥ य० ॥ राग्यनुं काम सदाया में,
 तव बुद्धिकरी हो ॥ मे० ॥ मानो कदिने बोलाव्यो, राग
 सने हो किरी हो ॥ रा० ॥ २१ ॥ आवो मामा जुहार,
 भाणेज तुमने करे हो ॥ वा० ॥ सो अंधदान ते मामा,
 भाणेजने भलि परो हो ॥ भा० ॥ स्वामी तुझ प्रसादयी, व
 दि ए ज्जाली हो ॥ नु० ॥ रात्रो थयो तव गायस, वाणी
 मुगी भली हो ॥ वा० ॥ २२ ॥ पूछे राखस भाणेज, तुं
 हों किदां यकी हो ॥ तुं० ॥ किन तू आण्यो जलधिमें, ते
 हों करे वही हो ॥ ने० ॥ तव हगिबल करे मामा, मुझ
 हों तनो हो ॥ मु० ॥ दागवो माग्य माहरे, काट छे
 हों घणो हो ॥ का० ॥ २३ ॥ जावुं छे नृप कारज, श्री
 उतावजे हो ॥ श्री० ॥ तव राखस करे भाणेज, दीसे नं,
 यलो हो ॥ दी० ॥ दीयां वादे चावे, नगा तुं ए ननुं
 ॥ च० ॥ द्यो तुझ आशरो भाणेज, संकामे जवुं हो
 ॥ २४ ॥ सुमी ले तुझ राखस, धोले दी छां हो
 ॥ किन तुझ पुरवे भाणेज, संका मड जनां हो ॥ २५ ॥
 निपजे क्षाम, त तद करी शके हो ॥ ते० ॥

कामने हो० ॥ तु० ॥ कठिण करगो तिहां मन, संपागो
 मने हो० ॥ सं० ॥ पोलु केम बलाय जे, कामे नीकन्यो
 ॥ का० ॥ मरण कबूल करगो पण, पाछो नहि
 हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उत्तमना ज बोल्, ते मनदन
 रपा हो० ॥ ते० ॥ त पाछा किम ओमरे, पंचमे
 हो० ॥ पं० ॥ पचनी माने बोल् जे बो यो ने टले हो० ॥ मे०
 ते नगनागी जीवना, मुआपां भले हो० ॥ मु० ॥ १३
 वयण लुहा त मानवी, लेखे नहि गणे हो० ॥ ले० ॥
 मर पाभर कार, गयो तम जिन भणे हो० ॥ ग० ॥ इन
 नीने म्वापी, दुमाग कामने हो० ॥ तु० ॥ घान्यो
 नीर, कटि करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ यदि
 इगिबल कौतुक, नी नुर भागले हो० ॥ नी० ॥ १५
 करी कोरे, ते मरु सांभले हो० ॥ ने० ॥ सलने गयो
 भागो, ते न मन सबरी हो० ॥ ने० ॥ तब एरु राख
 क्या ने, माहाया जक तरी हो० ॥ मर० ॥ १६ ॥ व
 ना जार्णो मेम ए, ताद मनाय उरु हो० ॥ ता० ॥ १७
 हाट ने जार्णो वसगमान उरु हो० ॥ व० ॥ दना सोडा
 ल, को करी कलमटा हो० ॥ क० ॥ अरली माली दी
 दीये वनी प्रकफली हो० ॥ दी० ॥ १८ ॥ जाने भांगो
 उरी, सुदी देग दगी हो० ॥ सु० ॥ पाण मशरु ते जार्णो
 हटपटे गुमगी हो० ॥ ह० ॥ पावे कारग केन, ते न
 कायग हो० ॥ ने० ॥ देगली मना दीन ते रिग्या
 म हो० ॥ ने० ॥ १९ ॥ तादमा दा हाथ ने मारग
 ना हो० ॥ म० ॥ अनुदीना नम जार्णो, पापदा जे
 हो० ॥ प० ॥ वेद ते जार्णो, उरी, कुरा प्रदना
 ॥ २० ॥ शव मनाय दो घम ने मारग भदनी हो०

॥ १८ ॥ काल कंचाल समान, भयंकर भैरवो हो० ॥ भ० ॥
 राजे यमनो वंद्य, मनइये अभिनयो हो० ॥ म० ॥ क्रीडा
 मनी झाल ते, मययो काइनो हो० ॥ मु० ॥ करतो अदृष्ट
 तप, ते कर दो पछाहतो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ मूढ
 तप ज्युं गंध, गंधाय दुवोनो हो० ॥ गं० ॥ उदग्या
 नेकले आहार जे, ते दिन सातनो हो० ॥ ते० ॥ एवो वि
 त्तमनो राक्षस, ने साठयो विल्यो हो० ॥ ने० ॥ एक तो मज्ज
 ये बीजो, राक्षस देखी छल्यो हो० ॥ रा० ॥ २० ॥ ह्ये तव
 हाणिपो जूनो, पूर्वज आनिपो हो० ॥ पु० ॥ विवानीवर्यो
 रंजणो जगादियो हो० ॥ प० ॥ राग्यंतुं काम मयारा में,
 तव बुद्धिकरी हो० ॥ मे० ॥ मायो कहिन बोलाव्यो, राख
 तने छे फिरी हो० ॥ रा० ॥ २१ ॥ आवो मामा जुदाग,
 भागेज तुमने करे हो० ॥ भा० ॥ तौ भेददान ते मामा,
 भागेजने भलि परे हो० ॥ भा० ॥ स्तार्या तुझ मसादयो, व
 दि ए उकरी हो० ॥ बु० ॥ राजा थयो तव गावस, वाणी
 मणी भली हो० ॥ वा० ॥ २२ ॥ पुंछे राखस भागेज, तुं
 दरो किदां थकी हो० ॥ ते० ॥ किन तु आग्यो मलधिमैं, ते
 तुम करे वही हो० ॥ ते० ॥ तव हृदिमळ करे मामा, मुझ
 हेका तयो ही० ॥ म० ॥ दाग्यो दाग्य मादरे, काय
 निदां पयो हो० ॥ का० ॥ २३ ॥ जातुं छे नृप कारज, श्री
 ध दयावयो हो० ॥ श्री० ॥ तव राखस कहे भागेज, दीसे तं
 चारयो हो० ॥ दी० ॥ मोपरे बदे चोरे, नगा तुं ए नवे
 हो० ॥ च० ॥ दयो तुझ आग्यो भागेज, लेकामे जुहुं हो०
 ॥ ले० ॥ २४ ॥ सुमी ने तुझ राखस, पाले दो उतां हो०
 पो० ॥ किन तुझ पुरवे भागेज, लेका गद जतां हो० ॥ २५ ॥
 गोपी निपजे काम, ने नेह करी शके हो० ॥ ने० ॥ वल्यो

कामने हो० ॥ तु० ॥ कटिण करथो तिहां मन, संभारी
 मने हो० ॥ सं० ॥ पोछ केम बलाय जे, कामे नीकल्यो ॥
 ॥ का० ॥ मरण कबूल करथो पण, पाछो नवि
 हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उत्तमना ज चोल, ते मनदत
 रथा हो० ॥ ते० ॥ ते पाछा किम ओमरे, पंचमे
 हो० ॥ पं० ॥ पचनो सामे बोल जे बोले यो ते टले हो० ॥ ने०
 ते नरनारी जीवनां, मूआमां भले हो० ॥ मु० ॥ १३
 वयण चुकां ते मानवी, लेखे नवि गणे हो० ॥ ले० ॥
 भव परभव कार, गयो तस जिन भणे हो० ॥ ग० ॥ इम
 णीने स्वामी, तुमाग काजने हो० ॥ तु० ॥ घाल्यो
 जीय, कटिग करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ बडि
 इन्बल कौतुक, नी नृप आगले हो० ॥ नी० ॥ कपिल
 करी कंदे, ते सह सांभले हो० ॥ ने० ॥ सलमे गयो ज
 आघो, ते तु मन सबरी हो० ॥ ते० ॥ तब एक राखस
 ध्यां ने, माहामां जल तरी हो० ॥ सह० ॥ १५ ॥ बं
 नो जाणीये मम ए, ताद वमाण ज्यु हो० ॥ ता० ॥ लां
 होड ते जाणीये वंशममान ज्यु हो० ॥ व० ॥ दता सोडा
 ल, करे करी कलमलो हो० ॥ क० ॥ अवली मवली दां
 दीये घरी मलफली हो० ॥ दी० ॥ १६ ॥ जाणे आंखीं दौ
 वडी, भेडी टुंगर दरी हो० ॥ भू० ॥ माथे महोद ते जाणीये
 हलपले धूमरी हो० ॥ ह० ॥ माथे कावग केज, ते जाणीये
 हांगरां हो० ॥ ते० ॥ दंताली समा दांत, ते विगला मा
 रा हो० ॥ नेवि० ॥ १७ ॥ तादममा दा दाथ ते, राखस श्रो
 ना हो० ॥ रा० ॥ अंगुलीना नख जाणीये, पावडा लोतना
 हो० ॥ पा० ॥ पेट तो जाणिये, चडो, फुपो मूदनो हो०
 ॥ रु० ॥ थंम नमान दो चरण, ने गायम भदनो हो० ॥ ने०

॥ १८ ॥ बरु संज्ञा न समान, भयंकर भैरवी हो ॥ भ
 न जाने पदनों बंद, प्रगल्भ अभिनयो हो ॥ प्र ॥ य
 नननी कान ने, सम्यक् कान्ठो हो ॥ दु ॥ बरु
 हास, ने कर हो पछाटनो हो ॥ ने ॥ १९ ॥ य
 मास कर्ष मंथ, मंगल दुर्भाग्यो हो ॥ मं ॥ उद
 निकले भासा भे, ने दिन गावनो हो ॥ ने ॥ पद
 हासलो गायन, ने गायनो गायनो हो ॥ ने ॥ उद
 वि बंजो, गायन केनी जन्मो हो ॥ ग ॥ २० ॥ य
 जाणियो कृपे, पूर्ण आविरो हो ॥ पु ॥ विद्वान्प्रव
 पदनों गगादियो हो ॥ प ॥ गायन बाम गगाद
 मर कदिवरी हो ॥ ने ॥ बानो बाने बानाव्यो गाय
 गने से कियो हो ॥ ग ॥ २१ ॥ आरों बाम गगाद
 भागेत हने करे हो ॥ भा ॥ गगादी हने गगादधी, व
 भागेने भवि करे हो ॥ भा ॥ गगादी हने गगादधी, व
 दि र पदनी हो ॥ पु ॥ गगादी हने गगादधी, व
 गुणो भरी हो ॥ ग ॥ २२ ॥ गगादी हने गगादधी, व
 गगादी हने गगादधी हो ॥ ग ॥ २३ ॥ गगादी हने गगादधी, व
 गगादी हने गगादधी हो ॥ ग ॥ २४ ॥ गगादी हने गगादधी, व
 गगादी हने गगादधी हो ॥ ग ॥ २५ ॥ गगादी हने गगादधी, व
 गगादी हने गगादधी हो ॥ ग ॥ २६ ॥ गगादी हने गगादधी, व
 गगादी हने गगादधी हो ॥ ग ॥ २७ ॥ गगादी हने गगादधी, व
 गगादी हने गगादधी हो ॥ ग ॥ २८ ॥ गगादी हने गगादधी, व
 गगादी हने गगादधी हो ॥ ग ॥ २९ ॥ गगादी हने गगादधी, व
 गगादी हने गगादधी हो ॥ ग ॥ ३० ॥ गगादी हने गगादधी, व

कामने हो० ॥ तु० ॥ कटिण कश्यो तिहां मन, संभारी
 मने हो० ॥ सं० ॥ पाछे केम बलाय जे, कायें नीरुन्यो
 ॥ का० ॥ मरण कयुल कश्यो पण, पाछो नरि
 हो० ॥ पा० ॥ १० ॥ उचमना ज बोल्, ते मनदत न
 रण हो० ॥ ने० ॥ न पाछा किम ओमगे, पंचम
 हो० ॥ ने० ॥ पचनी गाले बोल् ज बोि यो ने दले हो० ॥ ने०
 ने नरनारी जीवतां, मुआयां भले हो० ॥ मु० ॥ ११ ॥
 कयण लुहा न मानरी, लेखे नरि गणे हो० ॥ ले० ॥ १२
 भर पम्भर कार, गयो म जिन भणे हो० ॥ ग० ॥ इन
 जीन म्यामी, गुपारा कामने हो० ॥ गु० ॥ पाल्यो ज्ञां
 जीव, कटिण करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ यदि हा
 हस्तिवल् कीटक, नी नृप भागने हा० ॥ नी० ॥ कनित्त हा
 करी कट, ते मट् मयिभले हो० ॥ ने० ॥ सलने गयो न
 भायो, ते न मन मयरी हो० ॥ ने० ॥ नव पद रायम क
 क्या ने, मादामा तक नरि हो० ॥ मा० ॥ १६ ॥ हरे
 ना जार्गीये मम प ताट प्रमाण ज्य हा० ॥ ता० ॥ १७
 हाट ने जार्गीये वनममान ज्य हो० ॥ व० ॥ दना मोहा
 न हा हा कलमला हा० ॥ क० ॥ भरली मयली हो
 दीने पने प्रकटरी हो० ॥ दी० ॥ १८ ॥ ताने भागीने
 उरो, उरो दगा दगी हो० ॥ दु० ॥ माय मया ने तार्गीये
 दयने नृमगी हो० ॥ नृ० ॥ माये कारना कंठ न मयने
 कयण हो० ॥ ने० ॥ दीने दी मया दीन नरि, दा भव
 मा दीने नरि ॥ १९ ॥ तादामा दा हाय न मायम दि
 ना हो ॥ २० ॥ नृदीना नम जार्गीये, पावरा
 हो ॥ २१ ॥ नेट ने जार्गीये, बटो, कबो दगा
 ॥ २२ ॥ नम मयन दी जार्गीये ने मायम भवो ॥ २३ ॥

। १८ ॥ काल कंकाल समान, भयंकर भैरवो हो० ॥ भ० ॥
 रागे यमनो वंश, मनद्वयो अभिनवो हो० ॥ म० ॥ क्रोधा
 लीनो शाल ने, मृत्तयो काटनो हो० ॥ मु० ॥ करतो मट्ट
 रम, ते कर दो पछाटनो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ मूआ
 तप उषं मंध, मंशय दुर्वातनो हो० ॥ मं० ॥ उदग्धी
 नेकले आशर जे, ते दिन मातनो हो० ॥ ते० ॥ एहवो बि
 तमनो रासस, ते सादापो मिल्यो हो० ॥ ने० ॥ एक तो जल
 वे बीजो, रासस देखी उल्यो हो० ॥ रा० ॥ १० ॥ धो तव
 गाणिपो जूनो, पूरज आकियो हो० ॥ पु० ॥ विवर्णावन्वो
 रपरणो जगादियो हो० ॥ प० ॥ राग्यन्तु काम मधारा में,
 तव बुद्धिकरी हो० ॥ मे० ॥ मामो कहिन बोलाव्यो, राग्य
 तने हो किरी हो० ॥ रा० ॥ २० ॥ भावो मामा जुहार,
 भाणेन तुमने करे हो० ॥ भा० ॥ वो अभेदान ते मामा,
 भागेनने भलि परो हो० ॥ भा० ॥ स्वार्थो तुझ मसादर्थी, बु
 द्धि ए उकार्यो हो० ॥ बु० ॥ राती थपी तव गत्वस, वाणी
 सुगी भली हो० ॥ वा० ॥ २१ ॥ पूज गत्वस भागेन, तुं
 ह्यो किदां पकी हो० ॥ तुं० ॥ दिन तू भाव्यो जलपिये, ते
 ह्यो कहे बही हो० ॥ ने० ॥ तव इगिबल कहे मामा, मुझ
 लंका तग्यो हो० ॥ मु० ॥ दाखरो माग्य मादरे, कान छे
 जिदां घग्यो हो० ॥ का० ॥ २२ ॥ जातु छे नृप कारज, दी
 ध उतावयो हो० ॥ दी० ॥ तव राखस कहे भागेन, दीसे न,
 राख्यो हो० ॥ दी० ॥ दीयां बादे चारे, जगा नृप नहुं
 हो० ॥ च० ॥ दयो तुझ आउरो माणेन, लंकामे जवुं हो०
 ॥ ले० ॥ २४ ॥ चूर्मी न्ह तुझ गग्यम, पोले दी उतां हो०
 पो० ॥ दिन तुझ पूरे भागेन, लंका गद जनां हो० ॥ ले० ॥
 नेहपो निपज काम, ने नेह करी शकें हो० ॥ ले० ॥ चर्च्यो

कामने हो० ॥ नु० ॥ कटिण कग्थो निहां मन, संभारी
 मने हो० ॥ स० ॥ पोज केम बलाय जे. कांभे नीरुथो
 ॥ का० ॥ मण कबुल कग्थो पण, पाछो नहि
 हो० ॥ पा० ॥ १० ॥ उनमना ज बोल्, ते मनरुन
 रग हो० ॥ ते० ॥ न पाछा हिम ओमरे, पंचमे
 हो० ॥ पं० ॥ पचनी मांभे बोल् ज बोहि गो ते टलें हो० ॥ वे०
 ते नरगारी जीउतां, मुआमां भलें हो० ॥ मु० ॥ ११
 वयण चुतां न मानवी, लेखे नहि गणे हो० ॥ ले० ॥
 मव पम्भर कार, गयो -म जिन भणे हो० ॥ ग० ॥ इन
 गीन ध्वामी, गुमाग कामने हो० ॥ न० ॥ पान्यो
 नीव, कादि १ रुगी लाजन हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ बहि
 इग्वल कौक, नी नृप भागलें हो० ॥ नी० ॥ कान्ति
 करी कद, ते मद्रु मांभलें हो० ॥ ने० ॥ मलने गयो
 भायो, ते २ मन मवगी हो० ॥ ने० ॥ नव रुद्र राम
 स्या ने, मादामा जळ नही हो० ॥ मा० ॥ १७ ॥ उरो
 मो जालीये मन न नाट वनाग उरु हा० ॥ ना० ॥ जी
 हाट ने जालीये वनममान उरु हो० ॥ व० ॥ देवा लेहा
 ल, कर रुंग कळमला हो० ॥ क० ॥ भवली माली
 दीये यही वलकली हो० ॥ दी० ॥ १६ ॥ जाने भांगी
 उरो, नेदी रुंग रुंगी हो० ॥ मु० ॥ माथ मद्रु ने जाली
 रुंगलें पुंमरी हो० ॥ रु० ॥ माथे वावनी रुंग न जाली
 रुंगलें हो० ॥ ने० ॥ देवा दी मद्रु दीन नारुला
 रुंगी १ नेवि० ॥ १७ ॥ नाटमा दा हाव न गाम
 ना हो० ॥ ना० ॥ भवलीना नव जालीये, पारदा जाल
 हो० ॥ प० ॥ पेर मो जालीये, उरो, कबो रुंगलें
 ॥ रु० ॥ १८ ॥ देव मजान दी जाल ने गाम मद्रु १

॥ १८ ॥ काक कंचाक समान. भयंकर भैरवो हो. ॥ ५० ॥ को
 जागे यमनो बंधव. प्रगट्यो अभिनयो हो. ॥ ५१ ॥ को
 नमनी झाले, मगधो काटो हो. ॥ ५२ ॥ को
 राम, तं कर दो पण्डितो हो. ॥ ५३ ॥ को
 मार ज्यं मंध. मंगय दुर्वातनो हो. ॥ ५४ ॥ को
 निकले भासा जे, ते दिन भावनो हो. ॥ ५५ ॥ को
 रामजो रासग, ते माहासो मित्यो हो. ॥ ५६ ॥ को
 वि बांधो. रासग देवो दण्डो हो. ॥ ५७ ॥ को
 माणियो जूनो. पुंन आरियो हो. ॥ ५८ ॥ को
 पराणो नगादियो हो. ॥ ५९ ॥ को
 तर बुद्धिचरी हो. ॥ ६० ॥ को
 मने हो फिरी हो. ॥ ६१ ॥ को
 भागेत हने करे हो. ॥ ६२ ॥ को
 भागेतने भनि परे हो. ॥ ६३ ॥ को
 दि ए उकरी हो. ॥ ६४ ॥ को
 मुनी भरी हो. ॥ ६५ ॥ को
 रां रिं यरी हो. ॥ ६६ ॥ को
 एर करे करी हो. ॥ ६७ ॥ को
 मंडा नरो हो. ॥ ६८ ॥ को
 रिं परो हो. ॥ ६९ ॥ को
 एर करे हो. ॥ ७० ॥ को
 गरनो हो. ॥ ७१ ॥ को
 ॥ ७२ ॥ को
 ॥ ७३ ॥ को
 ॥ ७४ ॥ को
 ॥ ७५ ॥ को
 ॥ ७६ ॥ को
 ॥ ७७ ॥ को
 ॥ ७८ ॥ को
 ॥ ७९ ॥ को
 ॥ ८० ॥ को

कामने हो० ॥ नृ० ॥ कटिण करयो तिहां मन, संपासी
 मने हो० ॥ सं० ॥ पाछे केम बलाय जे, कामे नीकल्यो हो०
 ॥ का० ॥ माण कबूल करयो पण, पाछे नहि
 हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उचमना ज बोल्, ते मनदत न
 रया हो० ॥ ते० ॥ न पाछा किम भोसरे, पंचम उचम
 हो० ॥ पं० ॥ पचनी माने बोल् ज बोहि यो ते टले हो० ॥ ने०
 ते नरनाग जीवना, मुआमा भले हो० ॥ मु० ॥ १३
 बाण चुता न मानही, लेखे नहि गणे हो० ॥ ले० ॥ १
 भव परभर कार, गयो -म जिन भणे हो० ॥ ग० ॥ इन
 जीने म्यामी, नुमाग कामने हो० ॥ नृ० ॥ पान्यो ज
 नीर, कटिण करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ बहिष्क
 इक्कल कोक, नी नृप भाग्ये हो० ॥ नी० ॥ कल्पित
 करी कहे, ते मरु माभले हो० ॥ ने० ॥ मलने गयो
 भायो, ते न मन मवगी हो० ॥ ने० ॥ नव एरु रामम
 र्या ने, मादामा जल नही हो० ॥ मा० ॥ १५ ॥ वं
 नो जागीये सम प नाद प्रमाण उय हो० ॥ ना० ॥ १
 होत न जागीये बजममान उय हो० ॥ व० ॥ दना मोहा
 ल, हर हर कलमला हो० ॥ क० ॥ अरुही मरली दे
 दौये वने प्रलफली हो० ॥ दी० ॥ १६ ॥ जाने भागी
 उदा, वंदी दगदगी हो० ॥ मु० ॥ माय मराह ने जागे
 इदपले पुमगी हो० ॥ इ० ॥ माये कावना केन न जा
 दायग हो० ॥ ने० ॥ देवाही मना दीन नारदा ३
 मा हो० ॥ नेहि० ॥ १७ ॥ नादमा दा हाथ ने गाय
 ना हो० ॥ ग० ॥ अहुहीना नम जागीये, दादा जे
 हो० ॥ व० ॥ नेह नो जागीये, बरो, कयो प्रह
 १८ ॥ १८ ॥ अम ममान दो चरण ने गायम मदनो हो०

॥ १८ ॥ काल कंचाल ममान. भयंकर भैरवो हो० ॥ भ०
 नाणे यमनो बंगर. मनद्वो अभिनरो हो० ॥ म० ॥ क्रो०
 नननी झाल ते, मुखी काढतो हो० ॥ मु० ॥ करतो अट्ट
 हाम, ते कर दो पछाटतो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ मू०
 साप ज्यं गंध, गंधाय दुर्वातनो हो० ॥ गं० ॥ उदरधी
 निकले आहार जे, ते दिन माननो हो० ॥ ते० ॥ एवो वि
 हामणो राक्षस, ते साढापों मिरवो हो० ॥ ते० ॥ एक तो जल
 वि बाजो, राक्षस देखी घन्या हो० ॥ रा० ॥ १० ॥ झें तव
 भाणियो जूनो. पूर्वज आवियो हो० ॥ पु० ॥ विवानीयचो
 पररणो जगाटियो हो० ॥ च० ॥ राख्यन काम सवारा मे,
 तव बुद्धिकरी हो० ॥ मे० ॥ माभो कहिने बोलाव्यो. राख
 सने हें फिरी हो० ॥ रा० ॥ २० ॥ आरो मामा जुहाव,
 भाणेज तुमने करे हो० ॥ मा० ॥ पो अभेदान ते मामा,
 भाणेजने भलि परो हो० ॥ भा० ॥ स्वामी तुझ नसादधी, व
 दि ए उक्तरी हो० ॥ बु० ॥ गनी धयो तव राखस, वाणी
 मुगी भली हो० ॥ वा० ॥ २१ ॥ पूछे राखस भाणेज, तुं
 हरां किडां यकी हो० ॥ तुं० ॥ किन न आव्यो जलधिमें, ते
 ह्म करे वरी हो० ॥ ते० ॥ तव ह्मिबल करे मामा, मुझ
 संका तजो हो० ॥ म० ॥ दाखरो माग्य भादरे, काग छे
 निहां घणो हो० ॥ का० ॥ २२ ॥ जातुं छे नृप कारज,
 वतावडो हो० ॥ छी० ॥ तव राखस कडे भाणेज, दीसे
 राख्यो हो० ॥ दी० ॥ भायां वादे चावे. चगा तुं ए न
 ॥ २३ ॥ चूर्मी ले तुझ राखस, पोले दी छनां हा०
 ॥ २४ ॥ किम तुझ पूर्व भाणेज, संका गद जनां हो० ॥ २५ ॥
 पो निपजे काम, ते तेह करी शके हो० ॥ ते० ॥ वांधो

। १८ ॥ काल कंकाल मयान, भयंकर धैरवो हो० ॥ भ० ॥
 नागे यमनो धंवर, प्रगट्यो अभिनवो हो० ॥ भ० ॥ क्रोधा
 रत्ननी झाल ते, हृन्वधी काढनो हो० ॥ मु० ॥ करतो अट्ट
 तप, ते कर दो पणटतो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ मृआ
 राप ज्युं मंध, मंगय कुर्वानो हो० ॥ मं० ॥ उदग्धी
 नेकले आहार जे, ते दिन मातनो हो० ॥ ते० ॥ पटवो वि
 त्तमणो राक्षस, ते साक्षमो मित्यो हो० ॥ ने० ॥ एक तो जल
 पे बाजो, राक्षस देखी ज्यो हो० ॥ रा० ॥ २० ॥ ध्ये नव
 शणियो जुनो, पूर्वज आरियो हो० ॥ पृ० ॥ शिवान्तर्या
 मणो जगाटियो हो० ॥ य० ॥ राग्यन काम सदाश भे,
 एष्टिकरी हो० ॥ मे० ॥ नामो कहिने बोलाव्यो, राग
 जन हो किरी हो० ॥ रा० ॥ २१ ॥ आवो मामा जुदाग,
 शगेज नुमने करे हो० ॥ भा० ॥ यो अंधदान ते मामा,
 शगेजेने भक्ति परे हो० ॥ भा० ॥ स्वामी तुष्ट नमाट्यो, वृ
 ष्ट ए उकरी हो० ॥ वृ० ॥ राजा धयो नव गजस, बाणी
 हुणी भरती हो० ॥ बा० ॥ २२ ॥ पुंते गजस भागेज, नुं
 दां सिदां परी हो० ॥ नु० ॥ दिन नु आर्यो जलधिमे, ते
 प्र करे धरी हो० ॥ ने० ॥ नव दग्धिन करे मामा, शुभ
 ईका मने हो० ॥ इ० ॥ दास्यो नाग्य नाहरे, कान छे
 नेदां पनो हो० ॥ का० ॥ २३ ॥ जाडु छे नृप कारज, श्री
 व उदारवो हो० ॥ श्री० ॥ तव शायम कट भागेज, दीमे ते,
 तारयो हो० ॥ दी० ॥ भीयां बाटे पोर, चना नृ ए नवे
 ति० ॥ च० ॥ द्यो नृप आर्यो भागेज, स्त्रेका मे जनुं हो०
 ॥ नं० ॥ २४ ॥ प्रमी ने नृप राग्यन, पोले दी उतां हो०
 हो० ॥ दिन दृष्ट एवे भागेज, स्त्रेका गट जनां हो० ॥ नं० ॥
 मरपी निपजे काम, ते तेद करी अके हो० ॥ ने० ॥ शानो

कामने हो० ॥ तु० ॥ कटिण करघो तिहां मन, स
 मने हो० ॥ सं० ॥ पोछे केम बलाय जे. कापे नीकसो
 ॥ का० ॥ मरण कबूल करघो पण, पाछो नहि
 हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उचमना जे बोल, ते मनर
 रथा हो० ॥ ते० ॥ ते पाछा किम ओसरे, पंचमे
 हो० ॥ पं० ॥ पचना साभे बोल जे बो यो ने टले हो० ॥
 ते नग्नागे जीवतां, मूआमां भले हो० ॥ पु० ॥ १३
 वयण चुकां ते मानवी, लेखे नाबे गणे हो० ॥ ले० ॥
 भव परभव कार, गयो तस जिन भणे हो० ॥ ग० ॥
 णीने स्वामी, तुमारा कामने हो० ॥ तु० ॥ घाल्यो
 जीव, कटिण करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ बि
 हरियल कौतुक, नी नृप आगले हो० ॥ नी० ॥ का
 करी कहे, ते सह सांभले हो० ॥ ते० ॥ सलमे
 आयो, ते हु मन संबरी हो० ॥ ते० ॥ तब एक
 व्यां ने, माहाया जल तरी हो० ॥ सा० ॥ १५ ॥
 तो जाणीये मस ए, ताढ प्रमाण ज्युं हो० ॥ ता० ॥
 होठ ते जाणीये बंशसमान ज्युं हो० ॥ वं० ॥ दना
 ल, करे करी कलमलो हो० ॥ क० ॥ अवली सरली
 दीये धमी झलफली हो० ॥ दी० ॥ १६ ॥ जाने
 उडी, भूंदी हुंगर दगी हो० ॥ भू० ॥ माथे महोडुं ते
 हलपले घुंसरी हो० ॥ ह० ॥ माथे कावग केस, ते
 झांसरां हो० ॥ ते० ॥ दंताली समा दांत. ते बिग
 रा हो० ॥ तेवि० ॥ १७ ॥ ताढममा दा टाय ते
 ना हो० ॥ रा० ॥ अंगुलीना नख जाणीये, पावडा
 हो० ॥ पा० ॥ पेट तो जाणिये, चडो, कूपो धुनो
 ॥ कू० ॥ थंभ नगान दो चरण, ते गायस भुदनी हो०

॥ डाल २ जी ॥ भट्टियाणीनां देसी ॥ हिवे गजस कर
 जेदी हो कहे आलस छोदी रायने, एतो लंकापनि अवधार ॥
 ॥ जव सायर कंठे हो उपकंठे छेक ते जायने, मुस बलियो आगार
 ॥ हिवे० ॥ १ ॥ तव एक पंथी बेंठो हो में दीठो निग्रंथी पणे,
 ए तो सायर पेले पार ॥ हुं गयो जव ते साहामो हो ते पण क
 हि मामो मणे, तमें आवो मामा जुहार ॥ हिवे० ॥ २ ॥ में
 पण एछियुं तेहने हो तुं केहने भगैसे इहां रथो, तर बोल्थो पंथी
 सार ॥ राय विभीषण केरुं हो छे शरणं भेळुं मुस कथो, ए तो
 भाणेज बोल्थो विचार ॥ हिवे० ॥ ३ ॥ तुम दक्षिणनो अर्थी
 हो करि करथी छारनी पोडकी, मुस पांथी दांथी एह ॥ कहे रा
 खस तुम सयणे हो तुम नयगे मुकि ए पोडकी, ए तो भेट करी में
 नेह ॥ हिवे० ॥ ४ ॥ इम राखस गयो कहिने हो ए तो वही
 ने फिगी निज यानकें, तव चितवे विभीषण चित ॥ विस्मय पा
 म्यो मनमें हो राय जनमें छोदी जागरे, ए तो राखसनां पोडकी
 दीत ॥ ५ ॥ एम दग्गिऊ कहे नृपने हो यणे यरनें भस्म करे
 गद्दी मुस छांटे अमृत गोप ॥ ए आंकुणी ॥ विद्यावल्ल करी गुज्जो हो
 मुस कांथो जीवता देखतां, निगे दीयो फिरि अचतार ॥ सन
 मान्यो मने स्वामी हो घणुं अनरजायां पेखतां, मुस की गो बहु उप
 गार ॥ ए० ॥ ६ ॥ लंकापनि मुस पूछे हो ए हो छे ते काया
 वही, मुस गांढो कहे विगतांत ॥ तव में लंकापानेने हो कदि
 यनमें मांढेने मगी, एतो आपगा घरनी बात ॥ ए० ॥
 ॥ ७ ॥ बीशालापुर नगरी हो छे सयगी सर्वथा देगमें, एतो
 महोर्थ एण्य पवित्र ॥ मदनवेग तिहां राया हो मन्वदाया सयला
 नरेशमें, एतो मोहो प्रजामें छन ॥ ए० ॥ ८ ॥ अंगनने पर
 पावा हो जस पावा चित् दिशिमें प्रभु, एतो पांढ्यो उच्छर रंग
 ॥ निम का.ग नृप मने हो मन येने नव रासुं विभु, एतो नेदी

मनमें पापीयो, हरिबल सुनि नस बाण ॥ ४ ॥ दिनकर दे
खा धक ज्युं, रजनांपति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्युं
त्यं बल सचिव ते जार ॥ ५ ॥ पण शुं कर पढ्यो एकरो,
जोर न चाले कोथ ॥ जेडना दीहा पावरा, तस अरि अंशज
होय ॥ ६ ॥ कर क्रम थोड वांसे थयो, हरिबलने ते दृष्ट ॥
छलनाके छलवा मणी, कालसेन उच्चिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन
बेढो मालाये, मदनवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आविरो,
बेढो प्रगमी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालसेन
कीराड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाल राड ॥ ९ ॥
॥ हाळ १ जी ॥ इण सरोवरार्यां पाल, आंग दाय राड
ला ॥ ललना ॥ ए देशो ॥ द्विये हरिबलनां वयण, वलाण ते
नृप करे ॥ १० ॥ खाती त्यागी निकलंक वं, शर सुभट सी
॥ १० ॥ जो परधान त एकलो, नंका गढ मयो ॥ १० ॥
माहयं काज सुवारवा, बरी भस्म थयो ॥ १० ॥ १ ॥ का
ढयो आपणे टो जेण, मिथीने खोवती ॥ १० ॥ टोडे पाणीपे
वेगनी, खम काडी हनी ॥ १० ॥ पण ते साहायु जागी. नंका
देडने ॥ १० ॥ आठ्यो आपणे मंदिर, टंका देडने ॥
१० ॥ २ ॥ ता में जाण्यो ए पूण, भाग्य बरी वगो ॥ १० ॥
जामाता थड भाप्यो ए, नंका गढतगो ॥ १० ॥ पाठ्यो सड
नाणी रडगनी, नृपनृ मत्त करी ॥ १० ॥ नंका पतिनां माहरी,
टो राकी सरभरी ॥ १० ॥ ३ ॥ बुद्धि अकठ पगपंच ए, में
दींगे मही ॥ १० ॥ मदनवेगें यत्रि आगळ, वात ए मरि
कही ॥ १० ॥ काश्मेनन पगयो, मांडी माथा लगे ॥
१० ॥ प्रगटी आठ ते मांभनी, जागी अगो अगे ॥ १० ॥
॥ ४ ॥ भोऱ्यो मंगे नाम, कडे रींगे धनी ॥ १० ॥ यत्रि नुम अकठ
ज नगपति, हरिबलनां करी ॥ १० ॥ नु नुमे जाण म्यागी.

ए दुर्गती कथा ॥ २० ॥ मानो सयतु धोतु ते, दूष करी मना ॥
 ॥ २० ॥ ६ ॥ भारे दिग असंबंधने, अणयदीयां बरी ॥
 ॥ २० ॥ गननुं कनिंग तेषांहे, गन तेरनी करी ॥ २० ॥ अंधे
 दीयो पंद भनायसना रातदी ॥ २० ॥ निम इग्विचनी ए मा
 ननो, नृप हुम बातदी ॥ २० ॥ ६ ॥ हुं जाणी मभ वयण,
 रगान करो तुम ॥ २० ॥ ए दर्भानां सयल, धरिष लहं अ
 मे ॥ २० ॥ जे परदेसां लोक ते, दीसे एदरा ॥ २० ॥ ना
 दह घेदक जागे, बादीगर जेहवा ॥ २० ॥ ७ ॥ कूट करद
 वरपंथ, करां कला केरवे ॥ २० ॥ कल्पित बात फरी, कदी
 पे करी येमरे ॥ २० ॥ परगामे परदेसी, किर पद छेला ॥
 २० ॥ मोदा मोदी के घणा, घोरी बेलमा ॥ २० ॥ ८ ॥
 रंगी परनमें बातो, करे मदीदी करी ॥ २० ॥ दिगे दिग चना
 हे मे, लोक जाणे वरी ॥ २० ॥ सारी जडी करे मे, सुवे न
 मगादीये ॥ २० ॥ शान बांलापु पाटे मे, बदन विगादीये
 ॥ २० ॥ ९ ॥ ते पाटे तुमेश्यामि, गरी करी माननो ॥
 ॥ २० ॥ कानदीमां डिगार ए, हरिदल जाननो ॥ २० ॥
 दिहां मंदा मिहां मंदा, पनिनी एषिकां ॥ २० ॥ अगभिमनी
 ए बात, पदी एने एषिका ॥ २० ॥ १० ॥ ए नो कोदक
 ते, एने करी बातदी ॥ २० ॥ एरप्यो नारी ए वयम, मयम
 गरी ॥ २० ॥ नान न्हिये निज आन, बजारवा भनयदी ॥
 २० ॥ किरां ए लंकापतिनी, दुर्वा मती पदी ॥ २० ॥
 ॥ ११ ॥ श्री हृनिचनें म्याद, पदी हनी एषनी ॥ २० ॥
 गतिरे रंथ, मगाइ ए दुष्पनी ॥ २० ॥ नर
 गन रिज्जेद, गला बर मरिचने ॥ २० ॥ भाव्यं वा
 ने, रातनो मे अणदिने ॥ २० ॥ १२ ॥ ए दगानो
 नो, हर हने बागनो ॥ २० ॥ निम इग्विचनी हनी

मनमें पासीयो, हरिवल सुजि तम बाण ॥ २ ॥ दितकर दे
सा पुरु ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर दोय जसम सु.
सं वल मनिह ते जाग ॥ ९ ॥ पग सुं कर पड्यो एकदो.
जोर न चाले कोण ॥ जेहना दीक्षा पावग, तम अरि अत
होय ॥ ९ ॥ कर करन चोइ वामि थयो, हरिवलने ते दृष्ट ॥
छलनाके छलना भणी, कालमेन उचिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिव
बेडो माळीये, मदनयेग ते राय ॥ कालसेन निहां आरिओ.
बेडो वगपी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालमेन
कीराड ॥ हरिवलने नृःख दाखया, नृःने घाल गड ॥ ९ ॥

॥ हाठ २ जी ॥ इण मंगोरापांगि पाल, आंसा दोय गा
ला ॥ "छना छ दशा ॥ दिडे हांगवनां वरण, गलाग ते
नृः दे ॥ १० ॥ लां १ व्यागी निकलक के, गा सुनद मे
॥ १० ॥ जो पग्धान न छकला, "का गद गयो ॥ १० ॥
मादक कात मुशग्या, वडी भम्म थयो ॥ १० ॥ १ ॥ का
दया आरंग दा भण, पिने सोरनी ॥ १० ॥ ५ ॥ हां पाणी
बेगी, स्वय कादी हवी ॥ १० ॥ ५ ॥ वण ने गागु लां. ला
देने ॥ १० ॥ ५ ॥ आर्या आरग मंदिर, टका देने ॥
१० ॥ ५ ॥ ना मं जाग्यो छ वरण, भाग्य दी गयो ॥ १० ॥
जानावा यद आर्या छ, "का गदगयो ॥ १० ॥ ५ ॥ आर्या म
नागी गदगनी, नृःगु हव करी ॥ १० ॥ ५ ॥ का पानना मादनी,
दो गला मग्मगी ॥ १० ॥ ५ ॥ ५ ॥ कटि भक ५ पंथ ए. न
दोशे मरी ॥ १० ॥ ५ ॥ मदनगे मोर भाग, गा छ मरी
करी ॥ १० ॥ ५ ॥ का मेनन पग्या, मादी वाया दों ॥
१० ॥ ५ ॥ वगरी आर ने मदननी, जगो भगा भग ॥ १० ॥
५ ॥ ५ ॥ बेल्या दयो नाम, कटि गीने वनी १० ॥ मंदिर भग वद
दे जाग्यो, हरिवल करी ॥ १० ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

धुमनेरी कन्या ॥ २० ॥ मानो सधनु धोलु ते, दूष करी यन् ॥
 ॥ २० ॥ ६ ॥ मारें दिंग असंबंधने, अणयदीयां वरी ॥
 ॥ २० ॥ गजतुं कर्म्म तेमांहे, गज तेरनी कनी ॥ ल० ॥ अंधे
 नेदो चंद्र अणयसनी रातडी ॥ ल० ॥ निम हरिबलनी ए मा
 नो, नृप तुम बावडी ॥ ल० ॥ ६ ॥ गुं जाणी यभ वपण,
 त्याग करी तुम ॥ ल० ॥ ए द्रुमोनां सयल, चरित्र लहं अ
 रं ॥ ल० ॥ ने परदेशी लोक ते, दोसे पहवा ॥ ल० ॥ ना
 क चेदक जागे, वार्दीगर जेहवा ॥ ल० ॥ ७ ॥ कूट कपट
 रापंथ, करां कला केलवे ॥ ल० ॥ कल्पित वात फरी, करी
 पै कही मेलवे ॥ ल० ॥ परगामें परदेशी, फिर थड छेळसा ॥
 ल० ॥ मोडा मोडी करे यणा, धोवीं बेलसा ॥ ल० ॥ ८ ॥
 बेसी परजमें बातो, करे महोटी करी ॥ ल० ॥ दिंग दिंग बला
 वे ने, लोक जाणे सरी ॥ ल० ॥ साची मृती करे ते, मुखे न
 छगादीये ॥ ल० ॥ शान बोलाय्युं चांटे ते, बदल विगाडीये
 ॥ ल० ॥ ९ ॥ ने माटे तुम स्वापि, सही करी मानजो ॥
 ॥ ल० ॥ कनडीमां शिरदार ए, हरिबल जाणजो ॥ ल० ॥
 रिहां लंका रिहां लंक, पतिनी पुत्रिकां ॥ ल० ॥ अणमिलनी
 ए वान, घडी एणें पुत्रिका ॥ ल० ॥ १० ॥ ए तो कौशक
 धूर्त, पणे करी वातडी ॥ ल० ॥ परण्यो नारी ए उत्तम, यूप्यम
 जावडो ॥ ल० ॥ नाम लिपे निज आय, बवारवा अणयडी ॥
 ॥ २० ॥ किहां ए लंकापतिनी, पुत्री गती पडी ॥ ल० ॥
 ॥ ११ ॥ धीं हृनिमानें सोड, पडो हनी पुष्पनी ॥ ल० ॥
 मेकारनिपे वीप, सगाइ ए पुरुषनी ॥ ल० ॥ नवक
 ल नाग विच्छेद, गवा जर सहिल्लें ॥ ल० ॥ भाय्युं का
 कौशने, राजसो ने अणमिलें ॥ ल० ॥ १२ ॥ ए उलाणो
 गोपनी, नृप तुम धारजो ॥ ल० ॥ निम हरिबलनी बाजो

मनमें पासोपास, हरिवन्ध मुजि जम बाध ॥ ३ ॥ दिनकरः
 स्वां धरु ज्युं, रजनोपति ज्युं चोर ॥ जलधर देवि जसम सुं.
 मं बल मनिय ते जाय ॥ ५ ॥ पग सुं कर पड्यो पकरो.
 जोर न चाले कोय ॥ जेइना दीडा पावरा, तस अरि अंश
 होय ॥ ६ ॥ कर क्रम दोइ बांभि थयो, हरिवन्धने ते ह्यु ॥
 छटनाहे छतरा भणी, कालमेन उच्छिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन
 बेडो माल्ही, मदनरेग ने राय ॥ कालसेन निहां आरियो.
 बेडो प्रगमी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाम्यो चाडियो, कालमेन
 कीराड ॥ हांरवन्धने दुःख दाखरा, नृपने घाल राड ॥ ९ ॥

॥ श्लोक १ जी ॥ इण मरोइरायणि पाल, आंता होय रा
 ला ॥ पलना प दना ॥ दिडे हांरवन्धनां वरण, बन्धान ने
 नृप कोर ॥ १० ॥ खांरि ल्यामी निहल्लक के, शर सुभट मों
 ॥ ११ ॥ जो पग्धान त पक्या, अंका गड गयो ॥ १२ ॥
 माइरु काज मुग्या, बडी भम्भ थयो ॥ १३ ॥ १ ॥ का
 इया प्राण दा जण, मिथने खीरनी ॥ १४ ॥ दोड पगीरि
 बेगनी, मय काडी हनी ॥ १५ ॥ पण ने गाथा पारी अंका
 देडने ॥ १६ ॥ भाव्या प्राण माइर, टंका देडने ॥
 १७ ॥ २ ॥ ना मं प्राण्यो प वृष्ण, भाव्य ही पगे ॥ १८ ॥
 जानावा यड भाव्यो प, अंका गडगयो ॥ १९ ॥ प्राण्यो मा
 नागी मरगनी, नृपना मय करो ॥ २० ॥ अंका पतिना माइरी,
 दो गडी मरगनी ॥ २१ ॥ ३ ॥ कृदि अक पग्यार प, मे
 दोरी मरी ॥ २२ ॥ मदनरेगो मोर आता, राय प मरी
 करी ॥ २३ ॥ का-मेनने पग्या, मांरी पाया दो ॥
 २४ ॥ वगरी प्राय ने माइनी, जामो प्रगा प्रग ॥ २५ ॥
 ॥ ४ ॥ कोल्यो मयो नाम, कडे मीने हनी ॥ २६ ॥ मोरि मय प्रक
 ये प्राण्यो हांरवन्ध करी ॥ २७ ॥ ५ ॥ नृपना मा

ए भूतनी कंग ॥ २० ॥ मानो सयलु धोलु ते, दूय करी भन्ना ॥
 ॥ २० ॥ ६ ॥ मारे हिम असंबंधने, अणघडीयां बरी ॥
 ॥ २० ॥ गजनुं कंग तेमहि, गज तेरनी कडी ॥ ल० ॥ अंधे
 दीयो चंद्र अनावसनी रातडी ॥ ल० ॥ ६ ॥ तिग हरिवल्लनी ए मा
 ननो, नृप तुम बानडी ॥ ल० ॥ ६ ॥ तुं जाणी मभू बंयण,
 बग्याण करो तुम ॥ ल० ॥ ए दंभीनां सयल, चरित्र लहुं अ
 मे ॥ ल० ॥ जे परदेशी लोक ते, दीसे एहवा ॥ ल० ॥ ना
 डक चेडक जागे, बादीगर जेहवा ॥ ल० ॥ ७ ॥ कूड कपड
 परंपर, करां कला केलवे ॥ ल० ॥ कल्पित बात करी, कडी
 ये कडी बेलवे ॥ ल० ॥ परगामें परदेशी, फिरे पद छेल्सा ॥
 ल० ॥ मोटा मोटी करे घणा, घोषी बेलसा ॥ ल० ॥ ८ ॥
 बेसी परजमें यातो, करे महोदी करी ॥ ल० ॥ दिंगे दिंग चला
 वे ने, लोक जाणे खरी ॥ ल० ॥ साची जुडी करे ने, मुखें न
 लगादीये ॥ ल० ॥ श्वान बोलाय्युं चाटे ते, बदन विगादीये
 ॥ ल० ॥ ९ ॥ ते माटे तुमें स्वाभि. सही कर्ग माननो ॥
 ॥ ल० ॥ कनडीमां गिरदार ए, हरिबल जाणनो ॥ ल० ॥
 किहां लंका किहां लंक, पतिनी पुत्रिका ॥ ल० ॥ अणमिलनी
 रवान, घडी एणें पुत्रिका ॥ ल० ॥ १० ॥ ए सो कोदक
 न, पणे करी बातडी ॥ ल० ॥ परण्यो नारी ए उत्तम, मध्यम
 तडी ॥ ल० ॥ नाम लिये निज आप, बवारवा अणघडी ॥
 ल० ॥ किहां ए लंकापतिनी, पुत्री रली पडी ॥ ल० ॥
 ११ ॥ शी हुनियांन खोट, पढो हती पुष्पनी ॥ ल० ॥
 पतिये कीध, सनाद ए पुरुषनी ॥ ल० ॥ नबर
 गग विच्छेद, गया जर महिलें ॥ ल० ॥ आव्युं का
 ने, राजसरे ने अणमिलें ॥ ल० ॥ १२ ॥ ए उस्ताणो
 डी, नूर तुमें थारनो ॥ ल० ॥ निग हरिवल्लनी बानां

मनमें पारोयो, हरिवल मुनि नम वाण ॥ २ ॥ दिनकर
 हां एक ज्युं, रजनीरानि ज्युं चोर ॥ जलधर देवि जयाम ज्युं,
 स्यं वल मभिर ते जाग ॥ ९ ॥ पग श्रुं कर पड्यो पड्यो,
 जोर न चाले कोर ॥ जेडना दीडा पावरा, नस और अंग
 होय ॥ ९ ॥ कर करन धोइ बांधे ययो, हरिवलने ते दृष्ट ॥
 छटनाके छटना भणी, कालमेन उच्छिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन
 बेडो मालीये, यदनवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आविरो,
 बेडो मगमी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालमेन
 कीराड ॥ हरिवलने दुःख दाखया, नृपने घाल राड ॥ ९ ॥

॥ हाळ १ जी ॥ इण मरोरारायणि पाळ, आंरा दोंय रा
 ला ॥ १० ॥ पटना ॥ दिडे हांयनां वयण, यवाण ते
 नृप कोर ॥ १० ॥ ग्या ॥ म्यागी निकळक रं, शर मुनद मो
 ॥ १० ॥ जो पग्धान त पडला, नका गड गयो ॥ १० ॥
 माडक काज मुग्या, बरी भय्य थयो ॥ १० ॥ १ ॥ हा
 दया आवणे टा जग, मिनीने मीरनी ॥ १० ॥ दोडे पाणीने
 बेगी, स्वय कारी हनी ॥ १० ॥ पण ते गादा मुग्या, नका
 देडने ॥ १० ॥ माड्या आवण माडेर, टंका देडने ॥
 १० ॥ २ ॥ ना में जाण्यो प गुण, माय्य वी पयो ॥ १० ॥
 जानाना थड आव्यो प, नका गडगो ॥ १० ॥ १ ॥ माड्यो मा
 नगी मडगनी, नृपगु वन करी ॥ १० ॥ नका पतिना माडगी,
 दो गडी मग्मगी ॥ १० ॥ ३ ॥ वृद्धि भद्र पग्मगी प, में
 दोशे मरी ॥ १० ॥ यदनवेगे मोर आर, राय प मरी
 करी ॥ १० ॥ का-मेनने पगवा, मांडी माया री ॥
 १० ॥ २ ॥ मगरी शर ते मायनी, जगो जगा भगे ॥ १० ॥
 ॥ १ ॥ वेल्या मये नाम, कडे मीने वनी ॥ १० ॥ मांडी मु
 ये नगरी, हांयनां वनी ॥ १० ॥ नृपने गा

धूम्रती कथा ॥ २० ॥ मानो सचतु धोलु ते, दूध करी भग ॥
 २० ॥ ६ ॥ पाई दिंग असंबंधने, अणघडोयां बगी ॥
 २० ॥ गजनुं कांदिग तेमांहे, गज तेरनी कनी ॥ २० ॥ अघे
 जो चंद्र अणवसनो रातही ॥ २० ॥ तिम इस्विकनी ए मा
 जो, चप तुम बातही ॥ २० ॥ ६ ॥ तुं जाणी प्रभु वंषण,
 नाग करो तुम ॥ २० ॥ ए दंभीनां सयल, परित्र लहं अ
 ॥ २० ॥ जे परदेशी लोक ते, दीसे एहवा ॥ २० ॥ न
 ह चेदक जागे, बादीगर जेहवा ॥ २० ॥ ७ ॥ कृद कपट
 रंपव, करां कला केलवे ॥ २० ॥ कल्पित बात करी, कही
 कही मेनवे ॥ २० ॥ परगामें परदेशी, फिरे यह छेहसा ॥
 २० ॥ मोटा मोटी करे यणा, पोबी बेहसा ॥ २० ॥ ८ ॥
 ती परजमें बातो, करे महोटी करी ॥ २० ॥ दिंगे दिन घला
 ने, लोक जाणे सगी ॥ २० ॥ सार्वी जूडी करे ते, पुणें न
 हगारीये ॥ २० ॥ भान बोलापुं चोटे ने, बदल विगारीये
 ॥ २० ॥ ९ ॥ ने माटे तुम स्वापि, सही करी मानतो ॥
 २० ॥ कनदीमां छिरदार ए, इरिबल जानतो ॥ २० ॥
 द्यां लंका किहां लंक, पनिनी पुत्रिका ॥ २० ॥ अणमिलनी
 ए वात्र, यही एणे लुभिका ॥ २० ॥ १० ॥ ए नो कोइक
 र्ण, पगे करी बातही ॥ २० ॥ परण्यो नारी ए उत्तम, मध्यम
 भातही ॥ २० ॥ नाम लिये निज आप, बघारवा भगवही ॥
 २० ॥ किहां ए लंकापनिनी, एही रली पही ॥ २० ॥
 ॥ ११ ॥ शीं टुनियाने सोट, पटो हनी पुरुषनी ॥ २० ॥
 लंकापनिये वीष, सगाइ ए पुरुषनी ॥ २० ॥ नवक
 ल नाग विच्छेद, गया जव महिले ॥ २० ॥ आयुं का
 कोटाने, राजसो ने अणमिले ॥ २० ॥ १२ ॥ ए उताणो
 गांधरी, नृप तुम शरजो ॥ २० ॥ निम इस्विकनी धानी

मनमें पायीयो, हरिवल भुजि तम बाण ॥ ४ ॥ दिनका
 गा पुरु ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर देवि जगम ज्युं
 लं वल रात्रि ते जाग ॥ ५ ॥ पग भुं कर पड्यो एकरो
 जोर न चाले कोय ॥ जेइना दीहा पावरा, तम और आज
 होय ॥ ६ ॥ कल कल बोइ बांमे थयो, हरिवलने ते हट ॥
 छत्राके छत्रा भणी, कालमेन उचिहट ॥ ७ ॥ एक दिन
 बंदो मार्यो, मदनरेग ते राय ॥ कालसेन निहो आरिगे,
 बंदो प्रगमी पाय ॥ ८ ॥ कानं लाग्यो नाइयो, कालमेन
 कीराड ॥ हांरबलने दुःख दायरा, नृपने घाल गड ॥ ९ ॥
 ॥ हाक ३ जी ॥ इग मगोरार्याणि पाळ, ओता टोप रा
 ला ॥ १० ॥ ज दशा ॥ दिने हांरबलनां वरण, गवण ते
 नृप हो ॥ १० ॥ ग्या ॥ त्याणी निकलक ते, जग सुभट मों
 ॥ १० ॥ जो पगवान न पक्या, नंका गड मयो ॥ १० ॥
 माइक बाज सुगव्या, बंदी भय्य थयो ॥ १० ॥ १ ॥ का
 हयो आगने दा जग, मिनीने मोरती ॥ १० ॥ दोहे पार्श्वी
 बेगी, स्वय काटी हनी ॥ १० ॥ पग ते माया, पार्श्वी जग
 डेहने ॥ १० ॥ आठवा आगम मंदिर, टंका डेहने ॥
 १० ॥ २ ॥ ना मं जाग्यो ज वृण, भाग्य ही मयो ॥ १० ॥
 जानावा घड भाग्यो ज, नंका गड मयो ॥ १० ॥ १ ॥ पार्श्वी मा
 नार्मी स्वडगनी, नृपन भन कगी ॥ १० ॥ २ ॥ का पार्श्वी माइगी
 दो गडी मग्गगी ॥ १० ॥ ३ ॥ बुद्धि अहं पार्श्वी ज, मं
 दोहे मयो ॥ १० ॥ मदनरेगें मोव आग, पार्श्वी ज मं
 बंदी ॥ १० ॥ कालमेनने पगरी, पार्श्वी माया री ॥
 १० ॥ ४ ॥ जगरी आग ते माननी, जगरी प्रगा अग ॥ १० ॥
 १ ॥ ५ ॥ कोट्यो संघो नाय, कडे मंमि बनी ॥ १० ॥ पार्श्वी ज
 ते जगरी, हरिवलना कडे ॥ १० ॥ ६ ॥ नृपन जग

ए पुनर्नारी करी ॥ २० ॥ मानो सखतुं धोलु ते, दूध करी भरी ॥
 ॥ २० ॥ ५ ॥ मारे दिग असंबंधेन, अणघडीयां बरी ॥
 ॥ २० ॥ गजनुं कर्ण तेपाहे, गज तेरनी कली ॥ २० ॥ अंधे
 दीदी चंद्र अनावसनां रातदी ॥ २० ॥ तिय हरिवन्दना ए मा
 ननो, नृप तुम बानदी ॥ २० ॥ ६ ॥ गुं जाणी मम वयण,
 बग्याण करो तुम ॥ २० ॥ ए दंभीनां सयल, चरित्र लहं अ
 मे ॥ २० ॥ जे परदेशी लोक ते, दीसे एहवा ॥ २० ॥ ना
 दक वेदक जागे, बादीगर जेहवा ॥ २० ॥ ७ ॥ कूट कपट
 पापेच, करी कला केलवे ॥ २० ॥ कल्पित बात करी, कही
 कही बेलवे ॥ २० ॥ परगापे पन्देशी, फिर यह उलसा ॥
 ॥ २० ॥ मोदी मोदी करे यणा, घोरी बेलसा ॥ २० ॥ ८ ॥
 ती परनमें बानो, करे मोदी करी ॥ २० ॥ दिग दिग बला
 ने, लोक जाणे सरी ॥ २० ॥ सार्ची जूडी करे ते, मुत्रे न
 गादीये ॥ २० ॥ नान बोलायुं चांद ते, बदन बिगादीये
 ॥ २० ॥ ९ ॥ ने माटे तुम स्वापि, सरी करी मानजो ॥
 २० ॥ करदीयां शिरदार ए, हरिबल जानजो ॥ २० ॥
 होरां मंका किहां लंक, पनिनी पुत्रिकां ॥ २० ॥ अणमिलनी
 : पात, घडी एणे पुत्रिका ॥ २० ॥ १० ॥ ए तो कोइक
 नि, एणे करी बातदी ॥ २० ॥ परण्यो नारी ए वचय, मध्यम
 ततदी ॥ २० ॥ नाम किये निज आग, बघारवा अणघडी ॥
 ॥ २० ॥ किहां ए लंकापतिनी, पुत्री रली पडी ॥ २० ॥
 ॥ ११ ॥ श्री दृनियाने खोट, पदी हती पुनर्नारी ॥ २० ॥
 देकापतिने कोप, सगाइ ए पुरुषनी ॥ २० ॥ नवक
 न नाग विष्टेइ, गया जड महितले ॥ २० ॥ आच्युं का
 कोशने, राजसेर ते अणामिले ॥ २० ॥ १२ ॥ ए उताणी
 गोपदी, नृप तुम पारजो ॥ २० ॥ निम हरिवन्दनी बानो

मनमें पाशियां, हरिवल सुजि जम बाग ॥ २ ॥ दिनकर
 स्वा धरु ज्युं, रजनोपति ज्युं चोर ॥ जलधर देगि जवाम ज्युं.
 स्यं यल सधिय ते जाग ॥ ५ ॥ पग कुं कर पड्यो एरुयो.
 जोर न चाले कोर ॥ जेइना दीक्षा पावरा, तस अरि आग
 होय ॥ ९ ॥ कर क्रम धोइ बांसे ययो, हरिवलने ते दृष्ट ॥
 छलनाके छत्रा मणी, कालमेन उच्छिष्ट ॥ ७ ॥ एरु रि
 बेडो मार्याये, मदनरेग ते राय ॥ कालसेन निहां आरियो,
 बेडो मगमी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालमेन
 कीराड ॥ हरिवलने दुःख दाखरा, नृपने धांल राड ॥ ९ ॥

॥ हाळ २ जी ॥ इण मगेरायांगि पाळ, ओरा दोंय रा
 ला ॥ १० ॥ ए दना ॥ दिरे हांम्यनां वयण, नखाण ने
 नृप कर ॥ १० ॥ त्या 'ा त्यामी निरुल्लक के, गर मुभट मो
 ॥ १० ॥ जो पग्यान न एरुला, अंका गड मयो ॥ १० ॥
 मादग कान मुग्या, बडी भम्य ययो ॥ १० ॥ १ ॥ का
 इयो आरणे दा भग, दिधीने मीयती ॥ १० ॥ दोड पागीये
 बेगी, स्वम काडी इती ॥ १० ॥ पण ने माता गु. मी. अंका
 छेडेने ॥ १० ॥ भाव्या आपण मंदिर, टंका छेडेने ॥
 १० ॥ २ ॥ ना में जाण्यो ए पुण, भाग्य री घयो ॥ १० ॥
 जानाता घड भाव्यो ए, अंका गडनगो ॥ १० ॥ १ ॥ भाव्यो मड
 नामो मडगती, नृपगु वन करी ॥ १० ॥ २ ॥ का पतिना मागी,
 दो गडी मगमी ॥ १० ॥ ३ ॥ बद्धि अरु पंपेन ए. मी
 दोश मडी ॥ १० ॥ मदनरेगें मीर आर, राय ए मीर
 बडी ॥ १० ॥ का-मेनने पगयो, मंदी माया री ॥
 १० ॥ १ ॥ गडी आर ने मीरनी, जागो भगा भगे ॥ १० ॥
 १ ॥ १ ॥ काव्यो मीर नाम, कडे मीर बनी ॥ १० ॥ मीर मुन अरु
 मीर नाम, दोश मडी ॥ १० ॥ १ ॥ मुन मुन नाम, मीर

मनमें पापोंयो, हरियल सुजि जम बाण ॥ ३ ॥ दिनकर
 खा धक ज्युं, रजनांपात ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास लुं
 त्यं बल सचिव ते जाग ॥ ५ ॥ पग भुं करे पढ्यो एकरी,
 जोर न चाले कोय ॥ जेठना दीहा पावरा, तस अरि अंधन
 होय ॥ ६ ॥ कर क्रम धोइ बांसे थयो, हरिवलने ते छट ॥
 छलताके छलवा भणी, कालसेन बच्चिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन
 बेठो मालाये, मदनवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आविषो,
 बेठो प्रगमी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालसेन
 कीराड ॥ हरिवलने दुःख दाखवा, नृपने घाल राड ॥ ९ ॥

॥ डाल २ जी ॥ इण सरोवरोंपारी पाल, आंग दोंप रा
 ला ॥ ललना ॥ ए देशी ॥ दिवे हरिवलना वयण, नखाण ते
 नृप करे ॥ १० ॥ ग्वाणी त्यागी निकलक बे, शर सुभट से
 ॥ १० ॥ जो परधान त एकलौ, नंका गड गयो ॥ १० ॥
 माहं काज सुवारवा, बन्नी भस्म थयो ॥ १० ॥ १ ॥ का
 द्यो आपणे दो जणे, मिथीने खीवती ॥ १० ॥ दोहे पाणीये
 वेगधी, खम काठी हनी ॥ १० ॥ पण ते साहायु लड़ी, नंका
 छेड़ने ॥ १० ॥ आव्यो आपणे मंदिर, नंका छेड़ने ॥
 १० ॥ २ ॥ ता में जाण्यो ए पूण, भाग्य बी पगो ॥ १० ॥
 जामाता यड आव्यो ए, नंका गडतणो ॥ १० ॥ आव्यो सड
 नाणी खडगनी, नृपगु मत करी ॥ १० ॥ नंका पतिना माहरी,
 दो राकी सरभरी ॥ १० ॥ ३ ॥ बुद्धि अकल पगपंच ए, में
 दीठे सही ॥ १० ॥ मदनवेगे मंत्रि आगल, वात ए मंत्रि
 कही ॥ १० ॥ कालसेनने पगया, मांडी माथा लगे ॥
 १० ॥ प्रगटी झाड ते मांभनी, जागी अंग अगे ॥ १० ॥
 ॥ ४ ॥ बोण्यो मंत्रो ताम, कहे रींथे यनी ॥ १० ॥ भडि तुम अकल
 ने नगपति, हरिवलना करी ॥ १० ॥ जे तुमें जाग स्वाणी.

[धूम्रनी कन ॥ २० ॥ पानो सघनु घोनु ते, दूध करी भन ॥
 ॥ २० ॥ ६ ॥ मागे दिग असंबंधने, अणघडीयां वरी ॥
 ॥ २० ॥ गजनुं कांभ तेभाहे, गज तेरनी कडी ॥ २० ॥ अंबे
 तिरो चंद्र अणवमनो रातडी ॥ २० ॥ तिम हरिवन्दनी ए मा
 रनो, नुप नुप वातडी ॥ २० ॥ ६ ॥ शुं नाणी मभ वंयण,
 त्वाण करो नुपे ॥ २० ॥ ए दंभोनां सपल, चरित्र लहं अ
 ने ॥ २० ॥ जे परदेसी लोक ते, दासे एदग ॥ २० ॥ ना
 क चेदक जागे, बादागर जेवा ॥ २० ॥ ७ ॥ कूट कपट
 सरंभ, करी कला केलवे ॥ २० ॥ कल्पित वात करी, कडी
 पे कडी केलवे ॥ २० ॥ परगामे परदेसी, फिरे यद् छेदसा ॥
 २० ॥ मोहा मोहा करे पणा, घोषी बेलमा ॥ २० ॥ ८ ॥
 पंसी परजमे वातो, करे महोत्री करी ॥ २० ॥ दिंग दिंग घडा
 बे ने, लोक जागे खरी ॥ २० ॥ साची जुवां करे ने, मुलें न
 लगादीये ॥ २० ॥ श्वान घोलाव्युं चाटे ने, बदन पिगादीये
 ॥ २० ॥ ९ ॥ ते माटे नुपे स्थाभि. सही कर्गी पाननो ॥
 ॥ २० ॥ करडीनां गिरदार ए, हरिवल जाणनो ॥ २० ॥
 शिर्हा लंका किहां लंक, पनिनी पुत्रिकां ॥ २० ॥ अणभिलनी
 ए वात, घडी एगे पुत्रिका ॥ २० ॥ १० ॥ ए तो कोइक
 पुत्र, पुत्र करी वातडी ॥ २० ॥ परण्यो नारी ए वत्तम, मध्यम
 जातडी ॥ २० ॥ नाम लिये निज आय, बवारवा अणघडी ॥
 ॥ २० ॥ किहां ए लंकापतिनी, पुत्री रली पडी ॥ २० ॥
 ॥ ११ ॥ श्री कृनिगाने खोट. पडी हती पुत्रपती ॥ २० ॥
 लंकापतिने कांथ, समाइ ए पुत्रपती ॥ २० ॥ नबक
 न नाग विष्टेइ, गया जव महिले ॥ २० ॥ आज्ये का
 कोडने, रातमरे ने अपामिने ॥ २० ॥ १२ ॥ ए जलाणा
 गोपनी. नुप नुपे पारजो ॥ २० ॥ निम हरिवन्दनी वातो

मनमें पापोयो, हरिवल सुधि नस बाण ॥ ४ ॥ दिनकरे
 खां धक ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्युं.
 त्यं बल सचिव ते जाग ॥ ५ ॥ पग झुं कर पड्यो एकठो,
 जोर न चाले कोय ॥ जेठना दीहा पावरा, तस और अवन
 होय ॥ ६ ॥ कर क्रम धोइ बांसि थयो, हरिवलने ते दृष्ट ॥
 छलताके छलवा मणी, कालसेन उच्चिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिव
 बेठो मालाये, मदनवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आविगे,
 बेठो प्रगमी पाय ॥ ८ ॥ काने लाग्यो चाडियो, कालसेन
 कीराड ॥ हरिवलने दुःख दाखवा, नृपने घाल राड ॥ ९ ॥

॥ हाल १ जी ॥ इण सरोवरोंपारी पाल, आंघा दोष राख
 ला ॥ ललना ॥ ए देशो ॥ द्विवे हरिवलनां वपण, वखाण ते
 नृप करे ॥ १० ॥ खांती त्यागी निकलंक के, शम सुभट मरे
 ॥ १० ॥ जो परधान त एकल्यो, नंका गद गयो ॥ १० ॥
 माइहं काज सुवारवा, बडी भस्म थयो ॥ १० ॥ १ ॥ का
 ड्यो आपणे दो जण, मिडीने खीवती ॥ १० ॥ दोहे पाणीपे
 वेगनी, खस काढी इती ॥ १० ॥ पण ते साहायु लाडी नंका
 छेडने ॥ १० ॥ आव्यो आपणे मंदिर, डंका देखने ॥
 १० ॥ २ ॥ ता में जाण्यो ए पूजण, भाग्य बी घमो ॥ १० ॥
 जामाता थड आव्यो ए, नंका गदतगो ॥ १० ॥ आव्यो सड
 नाणी खडगनी, नृपशुं मन करी ॥ १० ॥ नंका पतिना माहरी,
 दो राकी सरभरी ॥ १० ॥ ३ ॥ बुद्धि अकठ परंपर ए, में
 दीओ मही ॥ १० ॥ मदनवेगे मीत्र आग-न, वात ए मरि
 कही ॥ १० ॥ कालसेनने पगयो, मांडी माया लगे ॥
 १० ॥ प्रगटी झात ते मांभनी, जागी अंग अगे ॥ १० ॥
 ॥ ४ ॥ बोन्यो मंत्रो ताप, कहे रीमें थडी ॥ १० ॥ भडि तुम अकठ
 जे नगपति. हरिवलनां करी ॥ १० ॥ शुं तुमें जाण ॥ म्यांभा.

॥ ल० ॥ २० ॥ शरीर पर हास्य कुहल, नी करी मंत्रीयें ।
 ॥ ल० ॥ सनयो मनमां हरिबल, सांभली मंत्रीयें ॥ ल० ॥
 पापी कुपति मंत्रीयें, चक्रमक केरियो ॥ ल० ॥ निमण तणो
 निग काठी, नृपने मंत्रीयो ॥ ल० ॥ २१ ॥ एहेवा दुष्ट कु
 बुद्धि ने, कां जगे अवतरा ॥ ल० ॥ यमने मंदिर कां न. ग
 या जे गानि भरया ॥ ल० ॥ परनिदा करता फिरे, दुष्ट सुसा
 यनी ॥ ल० ॥ स्वावे ओखर निदकी, काक ज्युं बापनी ॥ ल०
 ॥ २२ ॥ तप जप क्रिया कष्ट, करे जे निदकी ॥ ल० ॥
 ते मरि जाये नगर, निगोदें ए वकी ॥ ल० ॥ भारे कर्मी जी
 व. कदा ए जिनवरें ॥ ल० ॥ इह भव परभव सुखने न, देखे
 कदा ॥ ल० ॥ २३ ॥ पारकां छिद्र जूवे ते, निदकी पो
 कदा ॥ ल० ॥ देवकीरंशें ने उपजे, ए फल रोकटां ॥ ल० ॥
 मरु पइने जीव, करे निदा पारकी ॥ ल० ॥ ते जीवने रिम
 लेनी नही, चंदा बारकी ॥ ल० ॥ २४ ॥ इम हरिबल म
 न मनसी, सुगल रागी रयो ॥ ल० ॥ रेखु दाव ते आग
 र. आवे जे लयो ॥ ल० ॥ गुदपी मरे जे नीर ते, रिपपी न
 मागीये ॥ ल० ॥ ए उखागो लोक, कटे ते संभारियें ॥ ल०
 ॥ २५ ॥ इम पापी मनमांदि ते, हरिबल बोलीयो ॥ ल० ॥
 नो मधु लंकाभोजन, बचन ए खोलीयो ॥ ल० ॥ नगनि समेत
 ते परबद. लइ पवारजो ॥ ल० ॥ करु टटेरु ते सगनि.
 मरु अवधारजो ॥ ल० ॥ २६ ॥ इम कही नृपने मणयो, इ
 निव उवीयो ॥ ल० ॥ एण द्वि नृपने, मंत्रीने, जगदीश
 रीयो ॥ ल० ॥ श्रीजा उदासनी हाव ए. श्रीजी पूर्ण भई
 ॥ ल० ॥ लनि कटे भवि सांभगे, जे अ.गे भई ॥ ल० ॥ २७ ॥
 ॥ इहा ॥ द्वि हरिबल परे आनियो, बेडी नारी टांय ॥
 ॥ २८ ॥ नो दांयो नाहने, उगी मणये मोय ॥ १ ॥ निग पर बेडी

रंगमें, दंपति करे कलोल ॥ प्रेम सगेवर जीतां, निगमे ॥
 टकोल ॥ २ ॥ हरिवल्ल कहे पटनारीने, सांभल प्रिया मुल ॥
 ॥ लंका लडी लेहणुं. ते नृप मागे लांच ॥ ३ ॥ पंच
 मंत्रायें. माम्युं भोजन सार ॥ तव हुं नृपने नोतरी, आल्यो
 आगार ॥ ४ ॥ तव पटनारी कंतने, कहे पिय सांभल मुल
 एक बार नृप तेदतां, लाज बी नडी तुम ॥ ५ ॥ नरुडी
 बी देवने, सरद पूजारी जेम ॥ लोक उखागो जे कहे. ॥
 छो तुम तेम ॥ ६ ॥ बाउि सी शक तुम धाइयां, प्रीतम
 बार ॥ ते हु इम जाणुं अछुं, शान गइ तुम सार ॥ ७ ॥
 पेस्वी क्षुपमें, दीपक लेइ पढो इच्छ ॥ नृप मंत्रा मीतुं चवे. ते
 में मानो सच्च ॥ ८ ॥ मीठां थोलां मानवी, केम पतीजां
 ॥ नरिंकंड मधुर लवे, साप सपुच्छो राय ॥ ९ ॥ तेदनी
 ए जातडी, नृप मंत्री दो नंड ॥ चरु करी तुमने मधु,
 स्त्री दो भंड ॥ १० ॥ ते माटे स्वामी तुम, म करो कोइ
 सास ॥ एतां कवाडि न धोरियें, जो वंछो तन आस ॥ ११
 भेष भुजंगम भामिनी, महेत ने भूरा ॥ ए पांचने जे पी
 ते नर पामछे काउ ॥ १२ ॥ यम वेदया दासी नदी,
 सुभारी काउ ॥ ए साते नही आपणां, प्रीतम निज संभा ॥
 ॥ १३ ॥ तव प्रीतम बलतुं कहे, हरिकी निसुगेह ॥ जो
 दाहा पावरा, गुं नृप करछे तेइ ॥ १४ ॥

॥ दाउ ४ थी ॥ प्रीतममेंनी वीनवे ॥ ए देशी ॥
 लाउ एदवा अयाव ते थीवरें, वसंतनिर्गने दीध ॥ मोरागल
 भोजननी जे जोइयें, मेरी सामग्री मुबिद्ध ॥ मोरा लाउ ॥ १
 सार निपाई रमरनी, जेदवा करी सूर्यपाक ॥ मो० ॥ एक
 कवच तेरेदवां, उनेर तो चढी गेह छाउ ॥ मो० ॥ २ ॥ हरि
 लाउ सागर देव पमापयी, नोनरयां नगरी लोक ॥ मो० ॥

[illegible]

॥ दाल ५ मी ॥ थारे माये पचगंगा पाव, मोराने ठंगलो
 ॥ मारुता ॥ ए देशी ॥ दिवे बोल्यो मत्रा नाम कटि काल
 सेन ने ॥ साहेवजी ॥ तुम मांभटो स्वामी नाथ, वज्राना पाल
 ने ॥ साहेवजी ॥ मधु शु तुम एहने नेदी, आघो गुण करे
 ॥ सा० ॥ निज घनं मघल मोषी आपोप शु वगे ॥ सा०
 ॥ १ ॥ एतो गर्भने मिय, मुख गंगा देवरो ॥ सा० ॥ दि
 म हास्बलने मधु मान, देड जन जेवरो ॥ सा० ॥ बलि गई
 भ पामे नाथि, भेराव्यानी करा ॥ सा० ॥ ए तो पाड इध
 ने व्याल, उछेगे जनहर ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम इणि परे रा
 जन माचो, उवाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अजाण ते
 दुमन, खानने डेलव्यो ॥ सा० ॥ ए तो बेगी तुमचो प्रगट्यो
 रुग्ने शोषरा ॥ सा० ॥ तुम हृदये नारीनी झाल ते, पा
 ली डोपवा ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो ते माटे मधु, उगनो पैरी
 छेदाये ॥ सा० ॥ ए तो काल कंदकने छेदना, धर्म न बेदाये
 ॥ सा० ॥ ए तो शु तुम स्वामी, मोहे लगाडो एहन ॥ सा०
 ॥ ए तो कपटमा मिग्दार, मे दीठो तेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥
 ए तो कपट करीने काढी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥ बली
 लाव्या भूट खजानो, धूनी सारी दो ॥ सा० ॥ ए तो जा
 णतो स्वामी मगोरो छे, जगनो घोर ने ॥ सा० ॥ तुम आगे
 मो दिग, अमबर जोर ने ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो मधु तुम
 मानी सारी, जाणि मरी कसो ॥ सा० ॥ पय हु जाणुं हणे
 कल्पित, वात करे मदी ॥ सा० ॥ ए तो एहने शो विवरा
 स, करो तुम गनवी ॥ सा० ॥ ए तो एहना स्वाचापां पाणां,
 न पागे ते मानवी ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो श्री लका श्रीलंका, गदना
 नाथनो ॥ सा० ॥ ए तो समुद्र उदरी जाव, ने मुकल सा

मनी ॥ सा० ॥ ए नो जो जलमें गयो होत तो, पाछो नारतो
 ॥ सा० ॥ ए नो मरोय मगरमच्छ, सुखे गिली जरतो ॥ सा०
 ॥ ७ ॥ तब आपणुं नायको महोद, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥
 ए नो आपणुं चितव्युं थावन, सचलुं भावतुं ॥ सा० ॥ पण
 ए नो नाटक चेटक, कगीने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने
 पंद्रहास्य, नवग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ निम श्वान
 भगाव्यो धादने, गेदी ले गयो ॥ सा० ॥ बली काकनागीनो
 न्याप, उवागो निम ययो ॥ सा० ॥ निम आव्यो जाणजो ह
 रिबल, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फुल्यो ए एद,
 सोनो होटर थट ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मूकाये,
 म्हापी यमपरे ॥ सा० ॥ ए तो कादीव आभट छट ने, बूरे
 भर्षा पगे ॥ सा० ॥ ए तो दिवे तुम म्हापी माहरो, धुठे चा-
 मासो ॥ सा० ॥ ए तो मय तुम जीघ्र दो नारी, साथे पाल
 मो ॥ सा० ॥ १० ॥ मय नरपति जेवे सांभल, भंजी मा
 हरी ॥ सा० ॥ दिवे आज पडे कटि आन न, सोडुं नारि ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो जेटली बात करीने, धंजी ने मररी ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो सोरूम बेडी माहरे, मनडे मदनरी ॥ सा० ॥
 ॥ ११ ॥ पण ते दिवे मंजी बात, घटो कोट अभिनवी ॥ सा०
 ॥ ए तो आपणुं जेइया कार्य, गीते सुगुनरी ॥ सा० ॥ ए तो
 हरिचरनो जे श्रव्य ऐ, ने काहो पगे ॥ सा० ॥ ए तो आपणे
 पंदिर राया, दो आरे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तय मंजी
 सोल्यो नृपने, धनमां इट ने ॥ सा० ॥ एइ बानतुं धीरे छवुं
 ऐ, हं यइ एह ने ॥ सा० ॥ तुम बुद्धि बनातुं म्हापी, एहरी
 दिव ठरे ॥ सा० ॥ ए तो जे धनपी नवि सीसे, काम ने क
 न को ॥ सा० ॥ १३ ॥ दिवे ने माटे तुम मभा, मयवे बेमी
 ने ॥ सा० ॥ तुम एन नोनवा हगिचन, इको रितावे

॥ दाल ५ मी ॥ घारे माथे पचरंगो पाग, सोनारो
 ॥ मारुजी ॥ ए देशी ॥ दिवे बोल्यो मंत्रो ताम, कुटिल
 सेन ने ॥ साहेबजी ॥ तुम सारंगो स्वामी नाथ, मजाना पाग
 ने ॥ साहेबजी ॥ प्रभु शु तुम एहने तेदी, आयो गुण करो
 ॥ सा० ॥ निज घरनु सघलु सौपी आपोपुं शु वरो ॥ सा०
 ॥ १ ॥ एतो गर्भने निम, गुरन रंगो देवरो ॥ सा० ॥ नि
 म हाहालने प्रभु मान, देइ जस छेयरो ॥ सा० ॥ बलि न
 म पामे नाठि, भेडाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ तु
 ने व्याल, उछेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम इजि के र
 जन माथो, बजाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अजाणो
 दुप्रन, शानने डेलव्यो ॥ सा० ॥ ए तो बेरी तुमचो प्रभु
 करिने शोपरा ॥ सा० ॥ तुन हृदये नारीनी साल ने, व
 ली शोपरा ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो ते माटे प्रभु, जगतो के
 छेदाये ॥ सा० ॥ ए तो काळ कटकने छेदता, धर्म न वेदा
 ॥ सा० ॥ ए तो शु तुम व्यापी, मोडे लुगाडो एहन ॥ सा०
 ॥ ए तो कपटोपि शिष्टार, मे दीडो नेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥
 ए तो कपटे करिने कादी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥ व
 लाव्यो भ्रष्ट मजानो, भूनी मारी दो ॥ सा० ॥ ए तो म
 जजो व्यापी मरोडो छे, जगतो शोर ने ॥ सा० ॥ तुम आ
 माटे दिग, भमवर जोर ने ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु तु
 माना मापी, जाणि मरी कटो ॥ सा० ॥ पम हुं गालु
 कटिन, शान करो मरी ॥ सा० ॥ ए तो एहनो रो विज
 म, कंगे तुम मजरी ॥ सा० ॥ ए तो एहना मजाना पामे
 न पामे ने मजरी ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो नी लंका नीलका, गहन
 मापना ॥ सा० ॥ ए तो मरुट उडवी मावु, ने मरुट म

यना ॥ सा० ॥ ए तो जो जलमें गया होत तो, पाछो नावतो
 ॥ सा० ॥ ए तो महोद्य मगरमच्छ, मुख गिली जावतो ॥ सा०
 ॥ ७ ॥ तब आपणुं नायको महोदु, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥
 ए तो आपणुं चिनल्युं थावन, सयलुं भावतुं ॥ सा० ॥ पण
 ए तो नाटक चेटक, कभीने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने
 चंद्रहास्य, ज्वडग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ निम श्वान
 जजाग्यो घाड़ने, गेरो ले गया ॥ सा० ॥ बली काकनाभीनो
 न्याय, उखागो निम ययो ॥ सा० ॥ तिम आण्यो जाणजो ह
 रिवल, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फूल्यो ए उद,
 पालो होदर यइ ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मूर्काये,
 स्वामी दमपरे ॥ सा० ॥ ए तो कार्दोय आमड छेड ते, दूरे
 भली परे ॥ सा० ॥ ए तो हिवे तुम स्वामी माहरी, धुदे चा-
 नायो ॥ सा० ॥ ए तो मधु तुम जीअ दो नारी, सापे माल
 शे ॥ सा० ॥ १० ॥ तब नरपनि जेपे सांभल, मंत्री मा
 हरी ॥ सा० ॥ हिवे आज पजे कदि आण न, लोडु ताहरी ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो जेटली बात करीने, मंत्री ते रररी ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो चोकस बेडी माहरे, मनडे मटचरी ॥ सा० ॥
 ॥ ११ ॥ पण ते हिवे मंत्री बात, घडो कोद अभिनवी ॥ सा०
 ॥ ए तो आपणुं जेडधी कार्य, सीजे सुगुणवी ॥ सा० ॥ ए तो
 हरिवलनो जे शुल्य छे, ते काडो पगे ॥ सा० ॥ ए तो आपणे
 मंदिर राश, दो आने ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तब मंत्री
 घोल्पो रुपने, प्रगर्भा दुष्ट ते ॥ सा० ॥ एह बातनुं बीडं छवूं
 हुं, हुं यइ एष्ट ते ॥ सा० ॥ तुम नृदि बतावूं स्वामी, एहवी
 दिल उरे ॥ ना० ॥ ए तो जे बल्यी नवि सीखे, काम ते क
 ल करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हिवे ते घाटे तुम सभा, मध्य बैसी
 ने ॥ सा० ॥ तुम यम मोनरना हरिवन्, सुको विहाणि

॥ शाल ६ मी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो ..
 ॥ मारुजी ॥ ए देशी ॥ हिचे बोल्यो मंत्रां ताम, कुटिल
 सेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुम सांभलो स्वामी नाथ, प्रजानां
 ने ॥ साहेबजी ॥ प्रभु गुं तुम एहने तेदी, आयो गुण को
 ॥ सा० ॥ निज घरनुं सघलुं सोंपी आपोंपुं शुं बरो ॥ सा०
 ॥ १ ॥ एतो गर्भने जिम, गुरज रंगो देयवो ॥ सा० ॥
 म हस्तिचलने प्रभु मान, देइ जश लेयवो ॥ सा० ॥ बलि
 म पामें छाळि, भेजाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ
 ने व्याळ, वछेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम इणि को
 जन माथो, उवाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अजान
 दुर्मन, शानने ठेलव्यो ॥ सा० ॥ ए तो बेरी गुनयो प्रज
 हशिने शोपरा ॥ सा० ॥ गुन हृदये नारीनी झाल ते,
 श्री शोपरा ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो त माटे प्रभु, उगतो
 छेदीये ॥ सा० ॥ ए तो काल कंदकने छेदीतां, धर्म न
 ॥ सा० ॥ ए तो गुं तुम म्यामी, मोडे लंगडो एहन ॥ सा०
 ॥ ए तो कपटीयां शिंदार, मे दीडो तेहने ॥ सा० ॥ ४
 ए तो कपटे कर्मिने कादी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥
 गळ्यां भवट गजानां, भूनी मारी दो ॥ सा० ॥ ए तो
 रंगो म्यामी प्रजोरो छे, जगनो घोर ने ॥ सा० ॥ तुम
 गो दिग, अमबर जोर ने ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु
 तानीं सावी, जाणि मरी कही ॥ सा० ॥ पत्र गुं जाण
 हनिन, वान कगे मरी ॥ सा० ॥ ए तो एहनो श्री वि
 म, कगे तुम गजरी ॥ सा० ॥ ए तो एहना खागनां
 न मागे ने मजरी ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो श्री लंका श्रीलंका,
 नाथनी ॥ सा० ॥ ए तो मवट उदवी जाव, ने मुहज

यनी ॥ सा० ॥ ए नो जो जन्म गयो होत तो, पाछो नासतो
 ॥ सा० ॥ ए तो मोटोय मगरमच्छ, भुल्ले गिल्ली जावतो ॥ सा०
 ॥ ७ ॥ दब आपणुं नाथजो मोटो, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥
 ए नो आपणुं चिन्त्युं थावत, मयलुं पावतुं ॥ सा० ॥ पण
 ए नो नाटक चेदक, कगीने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने
 चंद्रहास्य, स्वदग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ निम श्वान
 अजाण्या पाडने, गेटो ले गयो ॥ सा० ॥ बली काकनागीनी
 न्याप, उन्हागो निम पयो ॥ सा० ॥ निम आव्यो जाणतो इ
 रिबल, लंहा गट जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फुल्यो ए उद,
 पोपो दोदर घट ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मूकोये,
 स्वापी पनपरे ॥ सा० ॥ ए तो काशीय आमद छट न, हूर
 मंत्री परे ॥ सा० ॥ ए तो दिवे तुम स्वापी माहरी, बुदो चा-
 लाओ ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुम शीघ्र दो नारी, सापे माल
 सो ॥ सा० ॥ १० ॥ तर नरपति जेवे मांभल, भंभी मा
 हरी ॥ सा० ॥ दिवे आज पडे कोटि आण न, मोटुं माहरी ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो जेटली बात कगीने, भंभी ते रगो ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो चोक्रम भेडा माहरी, मनदे महररी ॥ सा० ॥
 ॥ ११ ॥ पण ते दिवे भंभी बात, पटो कोटि अभिनवी ॥ सा०
 ॥ ए तो आपणुं जेहरी कार्ये, मीले मृगुनवी ॥ सा० ॥ ए तो
 हरिचमनो जे छन्य ते, ते काशे पगे ॥ सा० ॥ ए तो आपणे
 मंदिर राधा, दो आवे ते कगे ॥ सा० ॥ १२ ॥ तर भंभी
 बोल्हो रुपने, दग्यां इट ते ॥ सा० ॥ एइ शानतुं भोटुं छरुं
 छ. छं थइ छट ते ॥ सा० ॥ त्य वडि बनारुं स्वामी, एहरी
 दिव ठरे ॥ सा० ॥ ए तो जे धलपी नदि मीले, शान ते क
 ल करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ दिवे ते पाटे तुम मया, मय्ये बेमी
 ने ॥ सा० ॥ तुम एव मोलना हाकिम, इको रिगने

॥ डाढ ५ मी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो
 ॥ मारुजां ॥ ए देशी ॥ हिचे बोल्यो मंत्रां ताम, कुट्टि
 सेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुम सांभलो स्वामी नाथ, प्रजानां
 ते ॥ साहेबजी ॥ प्रभु शु तुम एहने तेदी, आयो
 ॥ सा० ॥ निज घरतुं सघलुं सोंपी आपोपुं शु वरो ॥ १
 ॥ १ ॥ एतो गर्भने जिम, मुख रंगो देयवो ॥ सा० ॥
 मं ह्मिलने प्रभु मान, देइ जश लेयवो ॥ सा० ॥ बलि
 भ पासं शालि, भेडाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ
 ने व्याल, उछेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम इणि फें
 जन साचो, जखाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अनाथ
 वृक्षन, खानने हेळव्यो ॥ सा० ॥ ए तो वेरी तुमचो प्रगळ
 हरिने शोपया ॥ सा० ॥ तुन हृदये नारीनी झाल ते,
 ली टोपरा ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो तें मोटे प्रभु, जगतो नै
 छेदीये ॥ सा० ॥ ए तो काल कंदकने छेदतां, धर्म न बंदी
 ॥ सा० ॥ ए तो शु तुम स्वामी, मोडे लगाडो एहन ॥ सा०
 ॥ ए तो कपटीमां निगदार, मे दीगो तेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥
 ए तो कपटे करीने काडी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥ क
 लाव्यो अलूट खजानो, भूती सारी दो ॥ सा० ॥ ए तो प्र
 जगो व्यामा मशोरो छे, जगनो खोर ते ॥ सा० ॥ तुम जो
 मोटे दिग, अमकन जोर ते ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु तु
 मानी साची, जाणि मवी कही ॥ सा० ॥ पण हुं जाणुं इ
 कान्यन, वान कंगे मदी ॥ सा० ॥ ए तो एहनो शां विजय
 म. करो तुम राजवी ॥ सा० ॥ ए तो एहना खायानां
 न मागे ते मानवी ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो श्री लंका शीलंका,
 नाथनी ॥ सा० ॥ ए तो समुद्र उद्धवी जावु, ते मुहक

यनी ॥ सा० ॥ ए तो जो जन्ममें गयो होत तो, पाछो नारतो
 ॥ सा० ॥ ए तो मरोय मगरमच्छ, मुख गिली जावतो ॥ सा०
 ॥ ७ ॥ तव आपणुं नाथनी मरोटुं, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥
 ए तो आपणुं चिंतव्युं थावन, मवलुं भावतुं ॥ सा० ॥ पण
 ए तो नाटक चेटक, कभीने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने
 चंद्रहास्य, खडग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ निम श्वान
 अजाग्यो पाडने, भेटी लें गयो ॥ सा० ॥ बली काकनाभीनो
 न्पाय, उखागो निम पयो ॥ सा० ॥ निम आव्यो जाणजो ह
 रिबन्ध, झंका गड जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल कृत्यो ए एद,
 पोछो दोदर पड ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मूकाये,
 स्वामी यमपरे ॥ सा० ॥ ए तो कार्दोय आभट छेड ते, दूर
 भर्ता परें ॥ सा० ॥ ए तो दिवें तुम स्वामी माहरी, बुद्धे चा-
 लाओ ॥ सा० ॥ ए तो मभु तुम शीघ्र दो नारी, सायें माल
 शो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जंये सांभल, भंभी मा
 हरी ॥ सा० ॥ दिवें आज पछे कदि आण न, लोडुं ताहरी ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो जेटली घान करानें, भंभी ते ररां ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो चोकस बेडो माहे, मनडे सहचरी ॥ सा० ॥
 ॥ ११ ॥ पण ते दिवें भंभी बात, घडो कोड अभिनवी ॥ सा०
 ॥ ए तो आपणुं जेह्या कार्य, सीते सुगुणवी ॥ सा० ॥ ए तो
 हरिबन्धनो जे शुल्य छे, ते काशे पगे ॥ सा० ॥ ए तो आपणे
 मंदिर राश, दो आवे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तव भंभी
 पोल्या नृपने, भगर्मा डुष्ट ते ॥ सा० ॥ एह बानतुं धीडं छवूं
 ऐ, हुं यइ एष्ट ते ॥ सा० ॥ तुम वृद्धि बनावुं स्वामी, एहवी
 दिल्ल ठरे ॥ सा० ॥ ए तो जे बलवी नवि सीसे, काम ते क
 ल करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ दिवें ते याटे तुम सभा, मध्ये बेसी
 ने ॥ सा० ॥ तुम यम नोनरना हरिबन्ध, एको विहगि

॥ शाल ५ मी ॥ थारे माथे पचरंगा पाग, सोनारो ।
 ॥ मारुनां ॥ ए देशी ॥ हिने बोल्यो मंत्रां ताम, कुटिन
 सेन ते ॥ सादेवजी ॥ तुम सांभलो स्वामी नाथ, प्रजानां,
 ने ॥ सादेवजी ॥ प्रभु शुं तुम एहने तेदी, आयो गुज को
 ॥ सा० ॥ निज घरतुं सघळुं सोंपी आपोपुं शुं बरो ॥ सा०
 ॥ १ ॥ एतो गर्भने जिम, गुरव रंगां देवको ॥ सा० ॥
 म हाविलने प्रभु मान, देइ जश छेपरो ॥ सा० ॥ बोलि
 म पामें शाळि, भेटाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ
 ने व्याळ, उछेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमेशि कें
 मन माधो, बटाणो मेळव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अजाप
 दुश्मन, शानतें हेळव्यो ॥ सा० ॥ ए तो बेरी तुमयो प्रगळ
 कशिने शोपरा ॥ सा० ॥ तुन हृदये नारीनी झाल ते,
 मो दोंपरा ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो तें मांडे प्रभु, उगनां ने
 छेनाये ॥ सा० ॥ ए तो काळ कंदकने छेदनां, धर्म न
 ॥ सा० ॥ ए तो शुं तुमेश्यामी, मोडे लगाडो एहन ॥ सा०
 ॥ ए तो कपटीयां शिगदार, में दीडो तेहने ॥ सा० ॥ ४
 ए तो करटे कर्गने कादी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥
 जाण्यां प्रसूट खजानां, धूनी मारी दो ॥ सा० ॥ ए तो
 जजो स्वामी म्हातो छे, जगनो घोर ने ॥ सा० ॥ तुम
 मागे रिग, अमबर जोर ते ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु
 मानी मारी, गाणि मवी कहा ॥ सा० ॥ एतुं शुं जाणुं
 कान्तिन, शान कर्गें म्हा ॥ सा० ॥ ए तो एहनां शो
 म, कर्गें तुमेश्यामी ॥ सा० ॥ ए तो एहनां म्हायनां
 न पागे ने मन्वरी ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो श्री लंका श्री लंका,
 नायनी ॥ सा० ॥ ए तो म्हाट्ट उल्लूनी जाव, ने म्हाट्ट

यनी ॥ सा० ॥ ए तो जो जलमें गया होत तो, पाछो नावतो
 ॥ सा० ॥ ए तो भरोय मगरमच्छ, मुँह मिली जावतो ॥ सा०
 ॥ ७ ॥ तब आपणुं नायजो भरोय, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥
 ए तो आपणुं चितव्युं यावन, सचलुं भावतुं ॥ सा० ॥ पण
 ए तो नाटक चेटक, कगीने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने
 चंद्रदाम्य, खदग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ निम श्वान
 जजाण्यो घाइन, रोटी ले गयो ॥ सा० ॥ बलों काकनाभीनो
 न्याय, उखागो निम भयो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो जाणजो इ
 रिबल, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फूल्यो ए एद,
 चोन्नो डोहर थइ ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मुँकोये,
 स्वामी यमघरे ॥ सा० ॥ ए तो कर्डीय आभइ छेट ते, दूर
 मली परें ॥ सा० ॥ ए तो दिवें तुमैं स्वामी माहरी, धुँदें चा-
 लाओ ॥ सा० ॥ ए तो मभु तुमैं शीघ्र दो नारी, साधें माल
 शो ॥ सा० ॥ १० ॥ तब नरपति जेपे सांभल, मंत्री मा
 हरी ॥ सा० ॥ दिवें आज पणें कदि आण न, लोपुं ताहरी ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो जेटली बात करितें, मंत्री ते खरी ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो चोकम धेडी माहरे, मनहे सहचरी ॥ सा० ॥
 ॥ ११ ॥ पण ते दिवें मंत्री बात, घडो कौद अभिनवी ॥ सा०
 ॥ ए तो आपणुं जइयो कार्य, सीजे सुगुणवी ॥ सा० ॥ ए तो
 हरिबलनो जे शल्य छे, ते काओ परो ॥ सा० ॥ ए तो आपणे
 मंदिर राख, दो आवे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तब मंत्री
 बोल्यो नृपने, मगमा दुष्ट ते ॥ सा० ॥ एइ बातनुं बीहं छवूं
 छे, हं थइ एह ते ॥ सा० ॥ तुम बूद्धि घतावुं स्वामी, एहवी
 दिल ठरे ॥ सा० ॥ ए तो जे बलवी नवि सीजे, काम ते क
 ल करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ दिवें ते माटे तुमैं सभा, मध्य वेसी
 ने ॥ सा० ॥ तुमैं यम नोनरना हरिवन्, दुको विहावि

॥ डाल ५ मी ॥ थारे माथे पचरंगा पाम, सोनारो
 ॥ मारुजां ॥ ए देशी ॥ हिचे बोल्यो मत्रां ताम, कुटिने
 सेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुम सांभळो स्वामी नाय, प्रजानां
 ने ॥ साहेबजी ॥ प्रभु शुं तुम एहने तेडी, आयो गुण करो
 ॥ सा० ॥ निज घरनुं सघळुं सांणी आपोपुं शुं वरो ॥ सा०
 ॥ १ ॥ एतो गर्भने जिम, गुरव रंगां देयरो ॥ सा० ॥ हि
 म हांगळने प्रभु मान, देइ जश लेयरो ॥ सा० ॥ बलि
 म पामें शालि, भेळाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ शु
 ने व्याळ, उठेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम शनि परें त
 जन माघो, उठावो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अजाब
 दुसन, शानने हेळव्यो ॥ सा० ॥ ए तो बेरी तुमचो प्रजो
 दगिने गोपरा ॥ सा० ॥ गुन हदये नारीनी झाल ते, त
 जो गोपरा ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो त माटे प्रभु, उगतां तौ
 छेदाये ॥ सा० ॥ ए तो काळ कंठकने छेदतां, यम न वेदी
 ॥ सा० ॥ ए तो शुं तुम स्वामी, मोडे लंगाडो एहन ॥ सा०
 ॥ ए तो कपटीमां निगदार, मे दीवो तेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥
 ए तो कपटे कर्गने काडी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥ इ
 लाव्यो प्रभु प्रजानो, भूनी माती दो ॥ सा० ॥ ए तो ज
 जतो स्वामी प्रजो छे, जगनो चोर ते ॥ सा० ॥ तुम जा
 मो दिग, अमंवर जोर ते ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु
 मानी साणी, जाणि मत्री करो ॥ सा० ॥ पप्र हुं जाणुं ए
 कल्पित, वान कंग मत्री ॥ सा० ॥ ए तो एहना शे रिक्क
 म. कंग तुम गजवी ॥ सा० ॥ ए तो एहना स्वामां दावो
 न पागे ते मजवी ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो श्री लंका श्रीलंका,
 नायनी ॥ सा० ॥ ए तो मप्र उठनी जाव. ने मुरक म

धनो ॥ सा० ॥ ए तो जो जन्मो गयो होत तो, पाछो नावतो
 ॥ सा० ॥ ए तो महोद्या मगरमच्छ, मुखे गिनी जावतो ॥ सा०
 ॥ ७ ॥ सब आपणुं नायको महोदुं, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥
 ए तो आपणुं चिन्वुं यावन, सचलु मावतुं ॥ सा० ॥ पण
 ए तो नाटक घटक, कभीने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने
 चंद्रहास्य, नवदग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ निम श्वान
 अनायास पाडने, गेयो ले गयो ॥ सा० ॥ बली काकनाशिनो
 न्याप, उवागो निम पयो ॥ सा० ॥ निम आव्यो जाणजो ह
 रित, लंका गड जड ॥ सा० ॥ तुम आगळ कृत्यो ए रुद्र,
 चोली दोदर पड ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मूकापे,
 श्यामी पमपरे ॥ सा० ॥ ए तो काशोव आमद छंद ने, दुरे
 बंधी परे ॥ सा० ॥ ए तो दिवे तुम श्यामी मादरी, बुद्धे चा-
 लाओ ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुम शीघ्र दो नारी, मापे माल
 शो ॥ सा० ॥ १० ॥ तर नरपति जेने मांमळ, भंशी मा
 दरी ॥ सा० ॥ दिवे आज पडे कदि आण न, लोडुं मादरी ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो जेदली वान करीने, भंशी ते तरां ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो चोक्कम बेडी मादरे, मनदे मरचरी ॥ सा० ॥
 ॥ ११ ॥ पण ते दिवे भंशी वान, पटो कोट अभिनरी ॥ सा०
 ॥ ए तो आपणुं जेदली कार्य, मीने मूढगरी ॥ सा० ॥ ए तो
 हरिचन्दनो जे कल्प ले, ते काशो पगे ॥ सा० ॥ ए तो आरणे
 मंदिर राखा, दो मावे ते कगे ॥ सा० ॥ १२ ॥ तर भंशी
 बोल्यो लूपने, मर्या हुट ने ॥ सा० ॥ एह वानतुं बीटुं छटुं
 छे, हुं पा छट ने ॥ सा० ॥ तुम बद्धि बनावुं श्यामी, एहरी
 दिव उरे ॥ सा० ॥ ए तो जे कल्पी नवि मीने, खान ते क
 ल करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ दिवे ते माटे तुम मधा, पळवे नेमी
 ने ॥ सा० ॥ तुम यव नोनवा हरिचन, दुरां रिरागि

॥ दाल ॥ मी ॥ थारे माथे पचरंगी पाव, सोनारो
 ॥ मारुजां ॥ ए देशी ॥ हिथे बोल्यो मंत्रां ताम, कुटिल
 सेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुम सांभळो स्वामी नाथ, प्रजानां
 ते ॥ साहेबजी ॥ प्रभु शु तुम एहने तेडी, आयो गुज बो
 ॥ सा० ॥ निज घरनुं सघळुं सांणी आपोपुं गुं वरो ॥ सा०
 ॥ १ ॥ एतो गर्भने जिम, गुरज रंगो देयवो ॥ सा० ॥ मि
 म हस्तिबलने प्रभु मान, देइ जश छेयवो ॥ सा० ॥ बलि
 म पामें शाळि, भेडाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पा
 ने व्याळ, उछेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम इगि प
 जन साधो, बलाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी जत्रा
 दुसन, श्वानने डेलव्यो ॥ सा० ॥ ए तो वेरी तुमचो प्रज
 रुग्निने शोपया ॥ सा० ॥ तुन हृदये नारीनी झाल ते,
 ली शोपया ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो तें मोटे प्रभु, जगतो
 छेरीये ॥ सा० ॥ ए तो काळ कंटकने छेदतां, पम न वेरी
 ॥ सा० ॥ ए तो शु तुम स्वामी, मोडे लग्नाडो एहने ॥ सा
 ॥ ए तो कपटीयां शिग्दार, मे दीडो तेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥
 ए तो कपटे करिनि काडी, लाव्यो नागी दो ॥ सा० ॥ रवी
 लाव्यो प्रभुद स्वजानो, शूनी सारी दो ॥ सा० ॥ ए तो
 जत्रो स्वामी मरोटो छे, जगतो जोर ते ॥ सा० ॥ तुम ज
 मोर दिम, अमबर जोर ते ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु
 मानां साधी, जाणि मरी कही ॥ सा० ॥ पप्र हुं जात
 करिनि. वाज कंगे मरी ॥ सा० ॥ ए तो एहने शो विप्र
 म. कंगे तुम गजरी ॥ सा० ॥ ए तो एहना खायां पा
 न पागे ते मनवी ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो श्री लंका श्रीलंका. गजना
 नायनी ॥ सा० ॥ ए तो समुद्र उल्लरी जाव. ते मुहज सा

गनी ॥ सा० ॥ ए नो जो जन्ममें गयो होत तो, पाछो नावतो
 ॥ सा० ॥ ए तो भरोटा मगरपच्छ, सुख मिली जावतो ॥ सा०
 ॥ ७ ॥ तव आपणुं नायजो महोट, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥
 ए नो आपणुं चितव्युं यावत, सचलुं भावतुं ॥ सा० ॥ पण
 ए तो नाटक चेटक, कर्गने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने
 चंद्रहाम्य, स्वदग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान
 अजाण्यो घाडने, गोटी ले गयो ॥ सा० ॥ बल्लो काकनाभीनो
 न्याप, उखागो निम ययो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो जाणजो इ
 रिबल, लंका गड जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फुल्यो ए एद,
 चोलो दोहर थड ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा मरने सुकाये,
 स्वामी पयपरे ॥ सा० ॥ ए तो काठिपे आभड छेड ते, दूरे
 भली परे ॥ सा० ॥ ए तो हिवे तुम स्वामी माहरी, गुदें चा-
 लाओ ॥ सा० ॥ ए तो मधु तुम शीघ्र दो नारी, सापे माल
 सो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जेपे सांभल, मंत्री मा
 हरी ॥ सा० ॥ हिवे आज पडे कदि आण न, लोडुं माहरी ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो जेठली वान करीने, मंत्री ते तरा ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो चोकरु बेडो माहरे, मनडे महचरी ॥ सा० ॥
 ॥ ११ ॥ पण ते हिवे मंत्री बात, घडो कोद अभिनवी ॥ सा०
 ॥ ए तो आपणुं जेठयी कार्य, सीजे सुगुणवी ॥ सा० ॥ ए तो
 इरिबलजो जे शल्य छे, ते काठो पगे ॥ सा० ॥ ए तो आपणे
 मंदिर राणा, दो आवे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तव मंत्री
 बोल्थो रुपने, प्रगर्भा दुष्ट ते ॥ सा० ॥ एइ बातनुं बीडं छवुं
 छे, हुं थइ एष्ट ते ॥ सा० ॥ तुम बूद्धि बतावुं स्वामी, एहवी
 दिल ठरे ॥ सा० ॥ ए तो जे बलथी नवि सीसि, काम ते क
 ल को ॥ सा० ॥ १३ ॥ हिवे ने माटे तुम सभा, मध्य वेसी
 ने ॥ सा० ॥ नुम थद नोनरवा इरिबल, सुको विदग्धि

॥ शब्द ५ मी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो
 ॥ मारुती ॥ ए देवी ॥ डिबे बोल्यो मंत्रां ताम, कुटिल
 सेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुम सांभलो स्वामी नाथ, प्रजाना
 ने ॥ साहेबजी ॥ प्रभु शुं तुम एहने तेदी, आयो गुण को
 ॥ सा० ॥ निज घरनुं सधळुं सोंपी आपोपुं शुं बरो ॥ सा०
 ॥ १ ॥ एतो गर्भभने जिम, गुरव रंगो देपरो ॥ सा० ॥
 म हासिलने प्रभु पान, देइ मज लेपरो ॥ सा० ॥ बलि
 म पामे शांति, भेटाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ
 ने व्याळ, वळेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम इगि पोर
 मन साभो, बलाणो मेळव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अनामो
 दुर्जन, खानने हेळव्यो ॥ सा० ॥ ए तो बेरी तुमयो मज
 करिने शोयरा ॥ सा० ॥ गुन इदये नारीनी झाल ते,
 मो शोयरा ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो न मोडे प्रभु, उगतो न
 छेदीये ॥ सा० ॥ ए तो काळ कटकने छेदनां, परम न वेरी
 ॥ सा० ॥ ए तो शुं तुम व्यामी, मोडे लगावो एहन ॥ सा०
 ॥ ए तो कपटीयां मित्रां, मे दीडो तेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥
 ए तो कपटे करिने कादी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥ इतो
 लाव्यो भग्न स्वजानां, भूती मार्ग दो ॥ सा० ॥ ए तो
 जती व्यामी मळोरो छे, जगनो चोर ने ॥ सा० ॥ तुम
 मो दिग, भमवर मोर ने ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु
 मारी मारी, जाणि मरी करो ॥ सा० ॥ ए तो नाग
 करिण, काव करी मरी ॥ सा० ॥ ए तो एहनो शो विजय
 म, करो तुम नारी ॥ सा० ॥ ए तो एहना गायनां दातो,
 न दातो ने मारी ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो श्री लका श्री हंसा, मारी
 नारी ॥ सा० ॥ ए तो मनु उदरी जाव, ने मनु म

धनो ॥ सा० ॥ ए तो जो जन्ममें गया होत तो, पाछो नावतो
 ॥ सा० ॥ ए तो भरोटा मगरपच्छ, मुँख गिली जावतो ॥ सा०
 ॥ ७ ॥ तव आपणुं नायजां भरोटुं, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥
 ए तो आपणुं चिनव्युं यावन, सचलुं भावतुं ॥ सा० ॥ एण
 ए तो नाटक चेटक, कभीने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने
 चंद्रदास्य, त्वदग दो लावियो ॥ मा० ॥ ८ ॥ मित्र भान
 अजाण्यो घाड़ने, गेदी ले गयो ॥ सा० ॥ बली काकनाथीनो
 न्याप, उत्तागो निम ययो ॥ सा० ॥ निम आव्यो जाणजो ह
 रिबल, लंका गढ जइ ॥ मा० ॥ तुम आगल फुल्यो ए वृद्ध,
 पानो डोहर थड ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मूर्काये,
 स्वामी यमपरे ॥ सा० ॥ ए तो काठोय आभट छेड ते, दूरे
 मंत्री परें ॥ सा० ॥ ए तो दिवे तुमैं म्वापी माहरी, बुद्धे चा-
 लाओ ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुमैं शीघ्र दो नारी, सापें माल
 शो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जेपे सांभल, मंत्री मा
 हरी ॥ सा० ॥ दिवे आज पछें कदि आण न, लांछुं नाहरी ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो जेटली वान करतें, मंत्री ते तरां ॥
 ॥ मा० ॥ ए तो चोकम धेडी माहरे, मनडे सहचरी ॥ सा० ॥
 ॥ ११ ॥ एण ते दिवे मंत्री वात, घडो कौट अभिनवी ॥ सा०
 ॥ ए तो आपणुं जेह्या कार्य, मंत्री सुगुणवी ॥ सा० ॥ ए तो
 हरियलनो जे दल्य छे, ते काओ पगे ॥ सा० ॥ ए तो आपणे
 मंदिर राधा, दो आवे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तव मंत्री
 बोल्पो रुपने, प्रगमा दुष्ट ते ॥ सा० ॥ एह वानतुं बीहं छवुं
 ए, ते थइ एष्ट ते ॥ सा० ॥ तुम बुद्धि बतावुं स्वामी, एहवी
 दिल उरे ॥ मा० ॥ ए तो जे बलथी नवि सीसे, काम ते क
 ल कोर ॥ सा० ॥ १३ ॥ दिवे ते पाटे तुमैं सभा, मध्यें बेसी
 ने ॥ सा० ॥ तुमैं यम नोनवा हग्गिळ, दुको गिरगि

ने ॥ सा० ॥ जब धीहं छवसे हरिखल, ते पित्त राखुं ॥
 ॥ तव वाली जाली खाख, करिने नाखुं ॥ सा० ॥ १४
 विण पइसे आपणि दूर, विराय ते जायसे ॥ सा० ॥
 शिवयणी मृगनयणी, आपणी थायसे ॥ सा० ॥ नवि
 वायस कंठे, रयणनो हार ते ॥ सा० ॥ ए तो छे तुम
 मायजी, नारि श्रीकार ते ॥ सा० ॥ १५ ॥ मन
 महिपति मंत्रिनी, बाणी सांभलो ॥ सा० ॥ ए तो भक्ती
 बताइ ते सुखदायीमां भली ॥ सा० ॥ इम दो जणे
 परठ, करथो नृप मंत्रीये ॥ सा० ॥ यम नोतग्यानो
 करि, हरिबल यंत्राये ॥ सा० ॥ १६ ॥ इम दुर्मति दीधि
 पने, काल सेन ते ॥ सा० ॥ हरिबलने चुकवा दो जन,
 लय लीन ते ॥ सा० ॥ पण एतु न जाणे मूरख, दो जन
 ते ॥ सा० ॥ किण ठाणे किणे कडणे, वेससे छंड ते ॥
 ॥ १७ ॥ जीमलालचियो यह आकरि, बांधी मोहनी ॥ सा०
 कोढा कोढी सागर सत्वर, लहे दुख श्रोहनी ॥ सा०
 घोराशी जाया जोनिमें. जीव ते बड रले ॥ सा० ॥
 दि पाप भोगवतां. साहु नवि बले ॥ सा० ॥ १८ ॥
 कांठे काट बले निम, लोहने भाजने ॥ सा० ॥ तेम जीवने
 में कर्म, बरे मूसाजने ॥ सा० ॥ ए तो पर निद्रा परश्रो,
 ने आकरा ॥ सा० ॥ तेणे दीर्घा शिवपद बारणे, आहां
 मरां ॥ सा० ॥ १९ ॥ ए तो कंचन कामिनी ए दो,
 बापदा ॥ सा० ॥ जीव बांधे निकाचित कर्म, गलीनां
 दां ॥ सा० ॥ जीव भटके बार अनंती, जरक निगोदमां
 ॥ सा० ॥ ए तो सूझ बादर यह फिर, राज ते चौदमां ॥
 ॥ २० ॥ ए तो कंचन कामिनी साहु, जीव मंदाय छे ॥ सा०
 ए तो दहभर पम्भर नोम, यह दंदाय छे ॥ सा० ॥ निम

नी देखे दूध, न देखे दांगडी ॥ सा० ॥ निम भोर न देवे
 करनी, आगे थपलाकडी ॥ सा० ॥ २१ ॥ इम जाणतां
 जीव चेवे नाई, कर्मना जोरया ॥ सा० ॥ ए तो ज्ञान क्रिया
 दो नदि गमे, कर्म कबोरया ॥ सा० ॥ इम मंत्री शशि निका
 चित्त, कर्मने कालने ॥ सा० ॥ ए नो हरिबल उपर देख, धरे
 घंटाळ ते ॥ सा० ॥ २२ ॥ विण मुने मंत्रि वसि पयो, पद
 दोघा शूल ते ॥ सा० ॥ पण नृप मंत्रीना मुखमें, पदवे धूल
 ते ॥ सा० ॥ कोइ नाते तपसी भीरे नही, मंत्री व्याल ते ॥ सा०
 ॥ पण अंतें जातां बरेसे, पाणीं डाळ ते ॥ सा० ॥ २३ ॥
 ए तो साहेबने धरे जातां, सेतुं एक छे ॥ सा० ॥ रुही भूं
 दीनो जेनातो, प्रभू नेक छे ॥ सा० ॥ ए तो काल प्रसादने
 योगे, करणी संभाले ॥ सा० ॥ वर दुर्बन जलनो बहरी, कारे
 देखावडे ॥ सा० ॥ २४ ॥ एक समष्टि विना जे जीवने
 पोर अंशारधे ॥ सा० ॥ निष्ठि दिन घन घातो कर्पनो, मर्म व
 पार छे ॥ सा० ॥ पृथुल पराबर्नन काल, अनतो ते करे ॥
 ॥ सा० ॥ जय तर क्रिया कष्ट करे ते, सवि निःफल घरे ॥
 ॥ सा० ॥ २५ ॥ जेवने पद बरवर मयाकित, केरी उपोव छे
 ॥ सा० ॥ तम अनुमा मरमनि बंछित, मुव उपोव छे ॥
 ॥ सा० ॥ तम जोगे उपोवने सरुनीनु, कर ते ओढव ॥
 ॥ सा० ॥ बिद्वानंद ने मानंदने लडे, विव मुन विन ठिरो ॥
 ॥ सा० ॥ २६ ॥ जेवनी करणी दुभ धोटी, छे संगारने ॥
 ॥ सा० ॥ तम बाव कपो यनवाने, मुन्य भागारने ॥ सा० ॥
 ए तो हाऊ करी शुभ पांचनी, घोजा दासमनी ॥ सा० ॥
 ए सो छवि करे यदि मुन जो, आगे सुरामनी ॥ सा० ॥ २७ ॥
 ॥ हा ॥ इनि परे परत करी नयो, नृप मंत्री जग दोव ॥
 एतोना निज निज घडिरे, पुर धरि नव मोप ॥ २८ ॥

दिन नृप मांझियें, किष्की कचेरी सार ॥ चामर छत्र विराजते
 बैठो तबत उदार ॥ २ ॥ छविश राजकुली मिळी, बट बट
 ते सांभंत ॥ खान उमराव ते आविया, परम्वदें मांडंत ॥ ३ ॥
 हरिश्चल पण निहां आवियो, बैठो नृपनी संग ॥ एरुण गडी
 विराजता, जाणे अग्नि रवि चंग ॥ ४ ॥ दिवें नृप तेडु मोकने,
 वणिकनें पर पर मार ॥ महाजन सममत मेळियां, मूकी निज
 तळार ॥ ५ ॥ बड बरती व्यवहारा, डाढी माना जेह ॥
 दाढी मति छे जेदनी, मिळिया ते गुणगह ॥ ६ ॥ दानें मानें
 आगवा, दीसता जडवार ॥ घनद भडागी माभिया, गावें
 बड व्यवहार ॥ ७ ॥

॥ डाल ६ ठी ॥ लुडाण जायो दीकरी ॥ सांभागी हे ॥
 भायां माम यमत के ॥ लाळ मोभागी हे ॥ ए देशी ॥ ॥
 हाजन गाथें सहू मिठी ॥ सोभागीह ॥ पदेरी भला शिंगार के
 ॥ लाळमोभागीह ॥ निज निज घरनां भेटणां ॥ मो० ॥ ले आपा
 दरवार के ॥ ला० ॥ १ ॥ श्रीवंत श्रीधन गात्रां ॥ सो० ॥
 शंकर शत्रु मगाठ के ॥ ला० ॥ गुरनंः गुरो सुरती ॥ सो०
 ॥ मोभागी मदर माल के ॥ ला० ॥ २ ॥ मानो मांडो मा
 जती ॥ सो० ॥ मागळ मोनीलाळ के ॥ ला० ॥ जेठो ज
 रमी जीरणे ॥ सो० ॥ जगनीवन जगना के ॥ ला० ॥
 ॥ ३ ॥ धानो घोषन थावर ॥ मो० ॥ भागां भीमो भवान
 के ॥ ला० ॥ कोतो केशर कर्मनी ॥ सो० ॥ कल्याण
 कासां कान के ॥ ला० ॥ ४ ॥ इंदो देवा देखी ॥ सो० ॥
 दापो दानो दयाळ के ॥ ला० ॥ त्रेपो त्रेनुजी पोममी मो
 ॥ एतो ने गुरु पाळ के ॥ ला० ॥ ५ ॥ नेपो नेणमी ना
 गती ॥ मो० ॥ नापो नयमळ नीळ के ॥ ला० ॥ रेपो

रणजी रंगजी ॥ सो० ॥ रांको रंगो रंगील के ॥ ला० ॥
 ॥ ६ ॥ पापो पेलो पालजी ॥ सो० ॥ वीरो ने वीरचंद
 के ॥ ला० ॥ हेमो हीरो हर्षसी ॥ सो० ॥ इंसो ने हरच
 द के ॥ ला० ॥ ७ ॥ गोदीदाम गगलची ॥ सो० ॥
 गांगोने गोपाल के ॥ ला० ॥ गगजी गसेध ने गांगजी ॥
 ॥ सो० ॥ गोविंद गोरो गलाल के ॥ ला० ॥ ८ ॥ खबो
 खामो खनजी ॥ सो० ॥ खागेने खुशाल के ॥ ला० ॥
 तारो तुलसी श्रीरामो ॥ सो० ॥ प्र्यवरुने त्रिभुवन के ॥
 ॥ ला० ॥ ९ ॥ शिवो सेवक श्यामजी ॥ सो० ॥ शामो
 ने शिवचंद के ॥ ला० ॥ सारो शिवरी शामजी ॥ सो० ॥
 साचो साकर वृंद के ॥ ला० ॥ १० ॥ इत्यादिक व्यवहा
 रिया ॥ सो० ॥ मिलिया माहाजन साय के ॥ ला० ॥ भेट
 भली नृपने करी ॥ सो० ॥ बेडा भणयो नाय के ॥ ला० ॥
 ॥ ११ ॥ इभि परे सहु नगरी जना ॥ सो० ॥ मेर्या वर्ण
 अडार के ॥ ला० ॥ बेडी परखद सहु मित्री ॥ सो० ॥
 नृपने कर्गने जुहार के ॥ ला० ॥ १२ ॥ हिवे नृप अवसर
 नैइने ॥ सो० ॥ बोत्यो वयण रिचस के ॥ ला० ॥ धीहुं
 यम आमंत्रवा ॥ सो० ॥ मूके पंच सप्त के ॥ ला० ॥
 ॥ १३ ॥ रे सामंतो सांभलो ॥ सो० ॥ बीहुं ग्रो तुन एह
 के ॥ ला० ॥ यमने नोनह देइने ॥ सो० ॥ तेही आवो
 नैइ के ॥ ला० ॥ १४ ॥ बंशाख शुद्धि पांचा लगे ॥ सो० ॥
 ॥ तेही लावे जेह के ॥ ला० ॥ माहरी रीध ते पापंश ॥
 सो० ॥ मनोवंचित समनेह के ॥ ला० ॥ १५ ॥ ते माटे
 बीहुं ग्रो ॥ सो० ॥ जेहमां होवे माच के ॥ ला० ॥ जीबित नगे
 हुं तेहना ॥ सो० ॥ पालीश मुपरे वाच के ॥ ला० ॥
 ॥ १६ ॥ उम नृप वाणी सांभली ॥ सो० ॥ सभा यई निलस

के ॥ ला० ॥ परपद मीन करी रही ॥ सो० ॥ जागे ते
 मुदी मत्त के ॥ ला० ॥ १७ ॥ निज निज मुख ॥
 सो० ॥ परपद यह मन भूर के ॥ ला० ॥ उरदे को
 जीभदी ॥ सो० ॥ जागे गये देवाणो सिंदूर के ॥ ला०
 ॥ १८ ॥ परपद जागे मझमे ॥ सो० ॥ ए गुं बोल्हो
 के ॥ ला० ॥ देखी पेखी यम घरे ॥ सा० ॥ कहो कि
 हां जराम के ॥ ला० ॥ १९ ॥ सहि तो ए परजे
 ॥ सो० ॥ नृपनी दृष्टि फेरय के ॥ ला० ॥ लुंघी पतने
 ॥ सो० ॥ यमन ममलू करेय के ॥ ला० ॥ २० ॥
 तो नृप जाणो ॥ सो० ॥ भिनि कंकण पहेरयां केदार के
 ॥ ला० ॥ पण काम पडे मीनी मुपकने ॥ सो० ॥
 भित को संहार के ॥ ला० ॥ २१ ॥ ए दृष्टांत ते नृ
 रघो ॥ सो० ॥ मांढ्यो विदानी ए पास के ॥ ला०
 कोइकनी ते फिरी दिना ॥ सो० ॥ लभी मुभी भे
 ॥ ला० ॥ २२ ॥ हम समसी मनये रही ॥ सो० ॥
 परजा मीन धरेय के ॥ ला० ॥ स्वर्ग मझ मट जोइ रही
 ॥ सो० ॥ पग उत्तर कोइ न देख क ॥ ला० ॥ २३
 दख नृप बोल्हो घरकीने ॥ सो० ॥ ए तो लमणे भुकुटी
 के ॥ ला० ॥ गान स्वाभां तुम अन तगा ॥ सो० ॥ दि
 का कान दटाय के ॥ ला० ॥ २४ ॥ जो भम प्रापनी
 करो ॥ सो० ॥ मो तुमो ग्रो बीटि एह के ॥ ला० ॥
 दितर को माग ग्रो ॥ सो० ॥ अन्य मूकनो होय
 ॥ ला० ॥ २५ ॥ इगि परे नरपनि बोडियो ॥ सो० ॥
 रकी परखट त्याहि के ॥ ला० ॥ चमस्यां मटुनां नांग ते
 ॥ सो० ॥ नृप मूकने छे यम ज्याहि के ॥ ला० ॥ २६
 मखिय मे दुख छोडने ॥ सो० ॥ कहो नम नृप

॥ ला० ॥ बार जो गलने चीमदां ॥ मो० ॥ किहां हो
 वान पुकार के ॥ ला० ॥ २० ॥ हिरे मुणजे भविष्य तुम
 मो० ॥ जे सोलने मंत्री काल के ॥ ला० ॥ ए कोह न
 हि लखि छी मही ॥ मो० ॥ ए तो धीना छलामनी
 ल के ॥ ला० ॥ २८ ॥

॥ इहा ॥ अवसर यहि कान्धोन ते, सोल्यो नव कर जोदि ॥
 रज मुनी महु माहरी, कहुं तुम आनन छेदि ॥ १ ॥ यम
 तरदा नापनी, धीनुं ग्रहावो जेह ॥ देखन मरवा कु ।
 हे. मरणनुं धीनुं एह ॥ २ ॥ धोरनुं बीट जे नांव छेह.
 जागे ते यम ॥ गज पावर अंशुकर्णेर, नारी स्वामि तुम्ह
 ॥ ३ ॥ देर रुज जे मानवी, छे नेरनां ए काम ॥ हुं जागे
 नि कीदली, यम राजानुं ठाम ॥ ४ ॥ आगे काम मुपरिपरि,
 जा केरां जेह ॥ ते जागे यम नेरवा, हरिबड छे गुणगेह ॥
 ॥ ५ ॥ मारनिक भिगेमनी, लपने कामे मर ॥ धीरवक के
 पुत्रो, ते करये तुम कस ॥ ६ ॥ इनि परे परखद देखनां
 जा इष्ट ते कान ॥ कीदपी घरण बनारनि, दूर रछो
 ॥ प्यार ॥ ७ ॥

॥ हाव ७ बी ॥ काजी ने पोली बादनी राजिद ॥ ए देखी ॥
 ते हरिबन्ने नूद को, जाला नमन जीवन मुन ॥ यमरा
 जाने नेरवा, लाग मोनु ए बीह मुह ॥ १ ॥ दंधीरा ते यमरुप
 से बदे तुं बेगे हो प्यारा लाग ॥ २ ॥ अंशुका ॥ मारने काम
 मुपरवा, जाला मुन रिग धीनुं न कोय ॥ स्वामिनी मरु को
 निरवा, जाला मेशीपोरा तुं जेय ॥ ३ ॥ ॥ २ ॥ जलदीन ते
 हरे मायेछे. लाग पारे ते निरनेन ॥ परमुन मनि ते दनबदे.
 जाला माया काये ते मेन ॥ ४ ॥ ॥ १ ॥ यमन विद्वाना ना

नवी, नाना अगनी क्षेप समगान ॥ दो परें उग्रल
 लाना तन मन करे सुखवान ॥ पं० ॥ ४ ॥ शिर ओठे
 बयणयी, लाना रुद्धी भुंटी गाल ॥ मुख दुःख न गणे
 लाला बयण तथा प्रति पाल ॥ पं० ॥ ५ ॥ श्रेणिक
 णे करी, लाला परणावी निज धीय ॥ मेतारज मातंगने,
 कीधो जमाइ जीय ॥ पं० ॥ ६ ॥ तेमाटे हरिवल तुमै,
 शीदु ग्रहो ए पान ॥ बैशाख शुद्धि पांचम लगै, लाला
 घरे आण ॥ पं० ॥ ७ ॥ इम नृपवार्णी सांभली, लाना
 ल चिते ताम ॥ जो नाकारो हुं करुं, लाला तो न रहै मुन्न
 ॥ पं० ॥ ८ ॥ जामगरा सलगडीने, लाना वृष्ट रघो ते दूर
 भरी गोंधिम कोश ते, लाना नाखी नृपनी हगूर ॥ पं० ॥ ९
 कोइक भवनो नीमदण्डो, लाला घंघ्री बैरी व्यास ॥ मरणतुं
 ग्रहावतां, लाना कीरो महोद्यो जताऊ ॥ पं० ॥ १० ॥ तां भुं
 मधु माहरो, लाला जोछे पाधरो तेह ॥ तास पनाये
 लाना जीवथी दाहं छेह ॥ पं० ॥ ११ ॥ तो मुजरो रासो
 रो, लाला जग सर खाये बात ॥ महिपी नीत ते महिपीने,
 ला पाईने करुं स्यात ॥ पं० ॥ १२ ॥ एम विचारी
 लाला हरिवल उठयो त्यांहा ॥ नृपने प्रणमी हायतुं, लाना
 ग्रहो ते उल्लाहि ॥ पं० ॥ १३ ॥ तव परजा कर जो
 लाला यिनये त्यां महिनाथ ॥ हरिवलने उमारीये, राज
 करी दो हाय ॥ १४ ॥ राजनजी रे अम बयण विशेष
 हो राज प्राणाधार ॥ ए आंकणी ॥ कटको कीटी उपो,
 तृण पर ज्युं कूठार ॥ ते उखाणो नाथजी, राज मेरो
 धार ॥ रा० ॥ १५ ॥ ए परदेशी प्राहुणो, राज
 वायु शिकोल ॥ आपणी नगरी जमाडीने, राज देखाड्यो
 धो ॥ रा० ॥ १६ ॥ ते नरने किम दुबिये, राज गुण

पण करंड ॥ देव करीने पुजीये. राज होवे लाभ असंड ॥
 रा० ॥ १७ ॥ ते पांढे तुम नायजी, राज दीने बंछित दान
 मजा पियो गडु वीनवे. राज मागे एतुं मान ॥ रा० ॥ १८ ॥
 पांढे यमदूतनुं, राज घो वीजाने जोय ॥ तुम मुखने जे वांछिजे,
 नि करये काज ते सोय ॥ रा० ॥ १९ ॥ परियागतना माछे
 राज खाता ह्ये तुम जेद ॥ ते किम पाछा देयशे, राज
 अप पडे पग नेह ॥ रा० ॥ २० ॥ तव नृप रीप चढाइने,
 नि पोत्यो मृदुशे चढाय ॥ रहो अणबोली परज ते, राज से
 शो नही तुम दांय ॥ रा० ॥ २१ ॥ तव पग्जा छानी रहि,
 नि ममझी ते मनमांदि ॥ विण सूटे नृप कोपियो, राज सुगुण
 करमे आंदि ॥ रा० ॥ २२ ॥ ये नृप पर्जन दीखडी,
 नि करतो क्रौर्य अपार ॥ आण्यो चांवलदे शिरें, राज माल
 केरो भार ॥ रा० ॥ २३ ॥ ए उखाणो दाखवी, राज प
 नि कीर विदाय ॥ विलखी पडने परम ते, राज डवी मन डल
 णप ॥ रा० ॥ २४ ॥ चढूटे चढूटे चाचरे, राज मिलीयां
 गेक अनेक ॥ टोले टोले सडु मली, राज करता वात त्रिवेक
 ॥ रा० ॥ २५ ॥ कोटे केताइक मानवी, राज नृप भिगज्यो छां
 ख ॥ राखे हरिबल उपरे, राज ते मालचधी द्वेष ॥ रा० ॥
 २६ ॥ कोटे केताइक मैनदो, राज काखसेन विनिष्ट ॥ ता
 री मृगी ते कगे, राज-काग परे ते उच्चिष्ट ॥ रा० ॥ २७ ॥
 ए मरी दो पापीया. राज महोश दीडा कुजान ॥ हरिबलने
 जिव देयशे, राज युग लगे गहेशे वात ॥ रा० ॥ २८ ॥ इति
 ते साजन सडु मिशे, राज चार्वा योके याक ॥ करता हाहाख
 करे, राज सत्रही नगरीनां लोक ॥ रा० ॥ २९ ॥ पण
 ना मृष्टे पांगी. राज मरये कःख जंजान ॥ लब्धि कोहे हंम
 मानवी, राज श्रीजा छल्लासवी डाक ॥ रा० ॥ ३० ॥

नवी, नाना अगनी क्षेपे समशान ॥ दो पत्ते उग्र
 लागा तन मन करे खुशवान ॥ पं० ॥ ४ ॥ शिर भों
 ययणधी, लागा रुद्धो भुंढी माल ॥ सुख दुःख न मंग
 लाळा वयण तणा मति पाल ॥ पं० ॥ ५ ॥ श्रेणिक
 णे करी, लाळा परणावी निज धीय ॥ मेतारंज मातंगे,
 कीधो जमाइ जीय ॥ पं० ॥ ६ ॥ तेमाटे हरिवल जे
 बोहुं ग्रहो ए पान ॥ वैशाख शुद्धि पांचम लग्ने, लाळा
 परे आण ॥ पं० ॥ ७ ॥ इम नृपवर्णी सांभली, लागा
 ल चिते ताम ॥ जो नाकारो हुं करुं, लाळा तो न रहे पु
 ॥ पं० ॥ ८ ॥ जामगरी सलग्नाहीने, लागा दुष्ट रक्षो ने
 भरी गांजिमे कौश ते, लागा भाखी नृपनी हूर ॥ पं० ॥
 कोइक भवनो नीमदयो, लाळा मंत्री बेरी व्या ॥ परण
 ग्रहावतां, लागा कोयो महोदो जगाल ॥ पं० ॥ १० ॥ तां
 मभु माहरो, लाळा जोछे पाधरो तेह ॥ तास पसापे
 लाळा जीवधी टाळुं छेइ ॥ पं० ॥ ११ ॥ तो मुजरो लो
 रो, लाळा जग मर चाहे वात ॥ महिषी नीन ते महिषीने,
 ला पाईने करुं म्यात ॥ पं० ॥ १२ ॥ एम विचारी
 लाळा हरिवल उठयो त्यांइ ॥ नृपने प्रणभो हायरी, ला
 ग्रयो ते उठछांइ ॥ पं० ॥ १३ ॥ तव परजा कर
 लाळा विनये त्यां महिनाथ ॥ हरिवलने उगारीये, राज
 करो दो हाय ॥ १४ ॥ राजनजी रे अम वयग निशे
 हो राज प्राणापार ॥ ए आंकणी ॥ कटकी कीदी ठप
 हण पर ज्युं कुटार ॥ ते उम्वाणो नायजी, राज मे
 धार ॥ रा० ॥ १५ ॥ ए परदेखी प्राहुणो, राज
 वायु प्रकील ॥ आपणी नगरो जमाहीने, राज देसा
 थो ॥ रा० ॥ १६ ॥ ते नरने किम द्विये, राज

कुण नाह रे ॥ १ ॥ भीत्रम प्यारा रे सांभलो ॥ ए र्था
 जी ॥ नाह बिहूणी ते नारीने, न गमे पात सोच्छाह रे ॥ भी
 त मुधी धरती रहे, जाणे इटनो दाह रे ॥ लागे रोमें रोमें
 रह रे, बिरहनी झारु असाह रे ॥ पीटे मदन अयाह रे, न
 हो गहे ते कपोह रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ ए मूल मंदिर मांथिया,
 रिपां छे घन घान्य रे ॥ कंत बिना ते कामिनी, जाणे अल
 ते घान रे ॥ नदिये को तस मान रे, मूर्का जिय तरुधान रे,
 गोदा काननुं श्वान रे, जाय तिहां लहे अपमान रे, हम छौं बि
 री ते जाण रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ दे दोष कुमभी दो दैवने,
 सो गुप्त कीथो अपराध रे, बिण मूने मुझ कंतने, यमपट्ट मूके
 हमार रे, दो ते कीरी ए बराध रे, काठि ने को भरनी दाप रे,
 पीटे बियोग अगाध रे, पीटे मंतने साध रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥
 हने मुर मणिपुत्री पटो, जेह पाटे छे बियोग रे ॥ गग्या दिन
 ते नायजी, कां नपी भेता बलिभोग रे, जाये सपथना रो
 रे, भंगि मनना ते सोग रे, जाणे गुं सपसा ते सोग रे ॥
 श्री० ॥ ५ ॥ कंत बिना ते बिजोगनी, पांमे दुःख असार रे
 बिरहानखनी ते बाफमां, सीधी रहे तनसार रे ॥ होवे बबूलाका
 रे, स्तारे पारे ते छार रे, जावे कौने आगार रे, नर दे छह
 भीकार रे, द्रिग ते स्त्री भवतार रे, बीरवी निवन ते मार रे
 श्री० ॥ ६ ॥ बिरहनी नारीने कंतने, प्यान रहे तस जी
 रे ॥ संजुमपछ परे कर्मने, बांधे निकाचि मदीर रे, द्रम
 मारस नरि पीव रे, मोहनी कर्म अनीव रे, जीपनी दुर्मन का
 रीर रे, बिन्द ए बिहरी लहीर रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ एनि
 ते प्यारी कंतने, को बाजी ससनेह रे ॥ नयनें जलधर बर
 हनी, जाणे भाद्रव मेह रे, रहो मोनय हुमें नेह रे, य दहो मुरंग
 रे, भोगरो वन घन एह रे, पानी दुष्यनी रेह रे ॥ श्री० ॥

॥ इहा ॥ दिवे हरियजने नृप करे, सांभल तुं प्र
 पंय ग्रहो यम राजनो, पदोचो जेम सदीव ॥ १ ॥ ता
 पांरयो हसि, सांभलो स्वामी मूल ॥ कामे से ते आवे,
 ने न पदे फूल ॥ २ ॥ तिम तुन कारजमें प्रभु,
 कुण ॥ दसरा भव न दोदियां, कुण देखे बस तुण ॥
 सेनक जे साचो हसे, ते तुम करणे काम ॥ डाल रवे तुम
 धीरज धरजो स्वाम ॥ ४ ॥ एम कही चढ्यो तुव,
 करी प्रणाम ॥ बीहं ग्रही यमदूतन, आव्यो तं निज पंथ ॥
 निज नारी दो भागलें, हरिबलें मागी शीख ॥ पमने
 मणी, जावुं छे सहि इख ॥ ६ ॥ नृपनुं कारज साधवा,
 प्रयो छे पह ॥ यम तेही नृप मंदिरें, आवी सोपूं तेह ॥
 ते माटे तुम शीख यो, तुम जा वसु दोय ॥ होशे मेलो
 खित जो पानें होय ॥ ८ ॥ ए मंदिर सोपूं अछं, तुम
 री हच्छ ॥ दान सुपात्रे पोपत्रो, करजो पुण्य कयच्छ ॥
 देव गुरु समरी सदा, धरजो नव पद ध्यान ॥ पूजा भक्ति
 बना, करजो गृह सावधान ॥ १० ॥ कूल मर्यादें चालत्रो
 जो श्री जिनधर्म ॥ करजो उज्ज्वल पक्ष दो, राखजो नि
 भर्म ॥ ११ ॥ शीख भलापण हणि परें, निज नारीने
 ॥ पंथ भणी संवादिने, गमन भणी पग दीप ॥ १२ ॥
 नां वपण ते सांभली, नारी दो अकुलाय ॥ जागे रंभा
 पदां, तिम नागी मूर्च्छाय ॥ १३ ॥

॥ छाल ८ मी ॥ राम भणे हणि उठीये ॥ ए देवी
 चेतन लहि नारी तदा, पल्लव पियनो ते साही रे ॥ १४
 ठ स्वरें करी, कहे नारां ग्रहि थांही रे ॥ गृहमें रहो तुम
 म कगी मरणनो राह रे, छो भीतम मुख छाह रे, लीजें
 माह रे, होवे अं नारी उच्छाह रे, होवे गजबनो पाह रे,

१ कुण नाह रे ॥ १ ॥ प्रीतय प्यारा रे सांभलो ॥ ए आ
 जी ॥ नाह बिहूणी ने नारी, न गये पात सोच्छाह रे ॥ जी
 त मुषो घरती रहे, जाणे इटनो दाह रे ॥ लागे रोम रोम
 रह रे, बिरहनी साठ असाह रे ॥ पीढे मदन अयाह रे, न
 हो सहे ते कपाह रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ ए मुख मंदिर मांथिया,
 रियां छे धन धान्य रे ॥ कंत बिना ते कामिनी, जाणे अल्
 ते धान रे ॥ भदिये को तस मान रे, मूकां मिय सरुपान रे,
 जसां काननूं शान रे, जाय तिहां लहं अपमान रे, इम सी वि
 ही ते जाण रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ दे दोष कुमरी दो दैवने,
 पो तुष्ट कीयो अपराध रे, विण खूने मुझ कंतने, यमघृह मूके
 तमार रे, छी तें कीर्ती ए ब्याध रे, काडि ते को मरनी दाध रे,
 गढे वियोग अगाध रे, पीढे संतने साथ रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥
 इने मुख मरिपुत्री पदो, जेह पादे छे वियोग रे ॥ गण्या दिन
 ॥ ते नाथजी, कां नधी लेतो बलिभोग रे, जाये सपछाना रो
 ॥ रे, भांगे मनना ते सोग रे, जाणे खुं सपला ते लोग रे ॥
 ॥ श्री० ॥ ५ ॥ कंत बिना ते विनोगणी, पांमे दुःख अपार रे
 ॥ बिरहानखनी ते बाफमां, सीझी रहे तनसार रे ॥ होवे बभूलाका
 ॥ रे, खावे धावे ते छार रे, जावे कोने आगार रे, नव दे छह
 ॥ आंकार रे, जिया ते स्त्री अवतार रे, जीवती निधन ते नार रे
 ॥ श्री० ॥ ६ ॥ बिरहिणी नारीने कंतनूं, प्यान रहे तस जी
 ॥ रे ॥ संकुलमच्छ परे कर्पने, बांधे निकाचि सदीव रे, छम
 ॥ गरस नवि पीव रे, मोहनी कर्म अतीव रे, जीवतो दुर्जन आ
 ॥ रीव रे, चिन्ह ए विग्री लहीव रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ एमि
 ॥ प्यारी कंतने, कहे बाणी ससनेह रे ॥ नयणें जलधर बर
 ॥ सती, जाणे भाद्रव मेह रे, रहो प्रीतय तुम मेह रे, म दहो सुरंग
 ॥ रे, भोगवो नन धन एह रे, पामी पुण्यनी रेह रे ॥ श्री० ॥

॥ ८ ॥ हरिवल कहे दीय प्यारिने, मांसी अमृत बाण रे
म करो मन कोइ सोचना, तुमें छो जीवन प्राण रे, आंखनी
को समान रे, पण छे नृपनी ते आण रे, बीहुं ब्रह्मों में ते जा
रे, होवे ज्यु कोटि कल्याण रे, तुमें छो घग्ना मंडाण रे, म
खांचा ए ताण रे, अमें छुं पथी केकाग रे, करवु शीघ्र भयाण रे
॥ ९ ॥ सांभळ गोपी रे माहरी ॥ ए आंकणी ॥ एम कही
मच्छी चालीयो, रोनी पूकां ते नार रे, नृपनु वपण ते पालवा
आप्यो यहि दार रे, नृपने कांय नृहार रे, कहे मच्छी तंति
वार रे, करा नृमें चिंता तैय्यार रे, म को डील िगार रे, सु
र्णा नृ चित्त मगार रे, पात्रो हर्ष अपार रे, तंडाव्यो
ते तळार रे, चिंता विग्यायी सार रे, हरिवल बलें नृ
कारणों ॥ ए आंकणी ॥ १० ॥ अगर चंदन का
नी, रचना चयनी ते कीय रे ॥ मृगंध द्रव्य ते हांमतां, नृ
करे मनोरथ लीय रे, गाणे रमणी ते म्मिद रे, मभुयें पुश्तने ते
दोय रे, थड मृत्र पुण्यनी रुद रे, आजयी बंछित सिद्ध रे ॥
॥ १० ॥ ११ ॥ हरिवल चय मरी भारीयो, पहेरी बल वि
शाल रे ॥ भों मृग गोभतां, पहेर्यां मारु शमाल रे, कीर्ती
लिखक ते भाल रे, कग्मा थीक ५ जाय रे, जोवे मनुष्यनी मान
रे, मगदी चयनी ते जाल रे, दीसंती महा विद्वाल रे ॥ १० ॥
॥ १२ ॥ निग समे मागर देवता, हरिवल मृगरे ते चित रे
॥ तनत्रण अंनिठि नाथनी, आप्यो मृगरे करि दीन रे, माग्यो
सकळ पणित रे, बोल्हो मृग यहि पित रे, हरिवल मननो पणित
रे, राखजे अविचल चित रे ॥ १० ॥ १३ ॥ एन कही मृ
ते समे हरिवल सप कण्ठो रूप रे ॥ नृपतन भावि न देवतां,
बेडो घटमें ते चूर रे, जन मद्रु देमे मल्ल रे, जन्तो मल्ली अ
नृ रे, हग्यो मंत्री ते धूर रे, पण ते पडियो मारुप रे ॥

॥ १४ ॥ हरिबल बननी जन देखिने, सदा यथा रि
 मरि ने ॥ हा हा करता ते मानवी, रोवे आरंभ वीर रे, न
 पने वी नदी मरि ने, बहिरा जल निजिरीर रे, सदन मन छ
 रे पार रे, न नदी मन कोठनां वीर रे ॥ १० ॥ १५ ॥
 निजि बापा ते मानने, बगवतों बांध सराद ने ॥ अट अट अट
 ते मन माननी, अट अट अटने हाट रे, अट अट अटने ते नाटने,
 ॥ १० ॥ १६ ॥ हरिबल बननी जाऊ ते, लागी नम लपे
 वेद रे ॥ इयान ययुं नम ते यगी, दाये कालो ते घोट रे, र
 सिपने पन दोद रे, दावी माने ते झोट रे, ययो रवि आरुयो
 गोट रे, वरने अरुननी ओट रे, वरने अरुननी गोट रे, ययो
 इतिनी लपकोट रे ॥ १० ॥ १७ ॥ जनि पने वरिप रुद
 रे, अरिपनू करी लाहि रे ॥ जागिने हरिबल जागिपो, मो
 तो निज पदमाहि रे, मय्य करी महु मारी रे, मन को मोरी
 मारी रे, ययो अरुनकर जाहि रे, गुरुं न पटे ते माहि रे,
 रमन मय्याय वारि रे ॥ १० ॥ १८ ॥ मय्य ययुं ते निज
 रमो, लायी बलपु ते लाय रे ॥ जनवरने करी मय्य रे, ह
 मना मय्याने राय रे, काठयो दल ते लाय रे, रमनी गिट्टे
 मय्य रे, रिने मय्य गळिने राय रे, राहना मय्याने लाय रे, अदी
 रे वरि वलाय रे, इन जपनी पर भाय रे, यारंभ अट अट
 रे ॥ १० ॥ १९ ॥ छिट छिट को मय्य मय्याने, मय्य मय्य
 निज मोर रे ॥ मय्यमय्य कोय मय्याने, मय्य मय्य मय्य को
 यो, मय्य मय्य मय्य ते मोर रे, यि मय्य मय्यमय्य मय्य रे, मय्य
 मय्य मोर रे, मय्य मय्य ते मोर रे, मय्य मय्य मय्य मय्य रे
 ॥ १० ॥ २० ॥ पुरजन मय्य मय्याने, मय्य मय्य मय्य
 मय्य ॥ मय्यमय्य मय्य मय्याने, मय्य मय्य मय्य मय्य रे, मय्य

लारे ॥ ५० ॥ साहामोवच्छल भाव धरीजे, जे को पाह
 कीनि ॥ ५० ॥ १ ॥ श्रीजिनके की भाक्ते कोबा, वृःकृत
 पाव हांवे ॥ ५० ॥ २ ॥ बर बंधनादिक जीव छोडावे, करुणा
 मानी भावे ॥ ५० ॥ ३ ॥ दोषुमादिक तीव्य जात्रा, जे
 को निर्मल गावरे ॥ ५० ॥ ४ ॥ पणियागतना नाम रखारे, संपदी
 दिवळ पावरे ॥ ५० ॥ ५ ॥ तद जप संपम ज्ञान किंग
 दो, पाले करि मार्यादो ॥ ५० ॥ ६ ॥ नय विवहार्या मत पचव
 खान, जे को चतुर मुजाणरे ॥ ५० ॥ ७ ॥ इत्यादिक
 शुभ करणी भाखी, सपली ए पुण्यनी साखीरे ॥ ५० ॥
 द्रव्यी भावया जे को करणी, ते भरे पुण्यनी भरणीरे ॥ ५०
 ॥ ८ ॥ द्रव्य स्तवयी बामे स्वर्ग, उपजे मुर उपवर्गे रे ॥
 ५० ॥ ९ ॥ माव स्तवयी केवल नाणी, यह को मुक्ति ते मागारे
 ॥ ५० ॥ १० ॥ द्रव्यी भाणी पने जे करणी, को ते लह रि
 द रमणी रे ॥ ५० ॥ ११ ॥ जे को भावयी करणी निराशी, हांवे
 ते ज्योतिर्विभासीरे ॥ ५० ॥ १२ ॥ पुण्यी हरि हर मुर नर
 ईदा, हलधर चक्री जिगंदा ॥ ५० ॥ १३ ॥ विश्वद शत्रका पुरुष
 कहावे, उत्तम पदवा पावेरे ॥ ५० ॥ १४ ॥ ते मव सिद्धि
 निवरा भावि, शिव पदना मुख चाखेरे ॥ ५० ॥ १५ ॥ देव दानव
 पग सह बंध भावे, अग्निय सवि गलि जावेरे ॥ ५० ॥
 ॥ १६ ॥ अष्ट माहा भय करिय न देखे, निर्भय सपके चेखेरे
 ॥ ५० ॥ १७ ॥ ईति उपद्रव रोग न हांवे, पातक सपदां खेवेरे ॥
 ५० ॥ १८ ॥ पंचमे सधले बोल मुदोला, पापे नसतठ
 मोलारे ॥ ५० ॥ १९ ॥ मूत्र निद्रांतमे छे नर चावा, दुभा ते पुण्या
 नावारे ॥ ५० ॥ २० ॥ ने नावायी मबोदनि तरीया, उप
 राम रसयी मरिपोरे ॥ ५० ॥ २१ ॥ अभ्यंतली गांठ दिछेदी, धि
 वरणी बरी दोरीरे ॥ ५० ॥ २२ ॥ सवा कोरी साधनी

पित लगे, उपनो हर्ष अपार ॥ ७ ॥ दो नारी मुझ
 प्रभुये दीधी इच्छ ॥ तो हुं जइ सफलं करूं, मुझ जीवित
 छ ॥ ८ ॥ इय जाणी ते सज थयो, मदनवेग ते राय
 वधी सम ते नृप थयो, चूवा चंदन लगाय ॥ ९ ॥ को
 जाणे राजमें, तिम चाव्यो धरी आज ॥ रजनी थइ
 सये, पदोतो पच्छा आवास ॥ १० ॥ दूरयी भूषणी
 वसंतसिरीये दीड ॥ ज्ञान करी निजकृतने, हरिबलगृहमें
 ॥ ११ ॥ एटले मोहपति आवियो, दो नारीनी पास
 कुमरी तव बढी तुरत, आसन आप्यु तांस ॥ १२ ॥
 स्वागत धणि करी, मुखयी साकर घोल ॥ कर जोडी
 गद्दी. काभियो कगी रगचोल ॥ १३ ॥ कामिनी कहे महि
 ने, केम पधारया स्वाम ॥ ते कारण मुझने कहे, खोली मन
 भिराम ॥ १४ ॥ हमणां पियु गयो यम घरे, राखबो
 चार ॥ अध्ववसाय जे मन तणा, कही पहांचो दरबार ॥ १५ ॥
 मुझ मंदिर स्वामी तुमें, सांव्या छो महाराय ॥ पण
 बाधलो, कहे ने केम समाय ॥ १६ ॥

॥ डाल १ ली ॥ मंदी रंग लागो ॥ ए देवी ॥ तव
 खिल थइ राजबी रे, बाव्यो ते मदनवेग ॥ विषयी वमूधाना
 कोइक पुण्यना योगयी रे, थयो तुमहुं शुभ नेग ॥ वि०
 ॥ १ ॥ जव आव्यो हुं मंदिर रे, तुमरे भोजन काज
 ॥ वि० ॥ मोहनी लागी ते थकी रे, ते जाणे जिनराज
 ॥ वि० ॥ २ ॥ जगमां छे नारी घणी रे, पण तुमरी
 जोड ॥ वि० ॥ तुम सुयदाइ देखीने रे, बाधो मोहनो
 ॥ वि० ॥ ३ ॥ ते दिनयी नवि बीमरो रे, दो नारी
 स ॥ वि० ॥ जाव रहे चरणांजु रे, तुमरे अविहद
 ॥ वि० ॥ ४ ॥ उध धरे ध्यान जोगीसरा रे, तिम थह

ध्यान ॥ वि० ॥ सास वसासमें सांभरो रे, भन वार तुम गु
 ण धान ॥ वि० ॥ १ ॥ ते गुणनो लीनो यको रे, आव्यो
 छं धरी हंस ॥ वि० ॥ पदमां अठ न जाणजो रे, सत्य कहं
 तुम मंस ॥ वि० ॥ ६ ॥ काइ न करसो शोचना रे, चतुर
 तुम गुणधाम ॥ वि० ॥ बाणी सुधारस सांभली रे, धो मन
 सुख अभिराम ॥ वि० ॥ ७ ॥ तन धन जोवन पापीने रे,
 सोने मनुभव लाह ॥ वि० ॥ पापी अवसर भूलछे रे, तस
 ररेछे दिल दाह ॥ वि० ॥ ८ ॥ यौवनवय सुख पापीने रे,
 ने नही माणे पूर ॥ वि० ॥ वननां कुसुम तणी परे रे, ते रहेछे
 मन सूर ॥ वि० ॥ ९ ॥ जीविन सूर्यी तुम तणुं रे, पालगुं
 निमिदिन वेण ॥ वि० ॥ हरिचलनी परे राखगुं रे, तन मन
 कराने सेण ॥ वि० ॥ १० ॥ तुम हम विच्ये कोइ बातनो रे,
 देरों न राखिये कोय ॥ वि० ॥ ११ ॥ भुझ मन प्राणनिंकुजमें रे,
 राखं तुमने दोष ॥ वि० ॥ १२ ॥ माहारी छती जे राजनी
 रे, आजयी सोंपी तुम्ह ॥ वि० ॥ जो तुम आपसो हेतगुं रे,
 ते सही निमगुं अम्ह ॥ वि० ॥ १३ ॥ कोइ वाते दुहवुं नही
 रे, माहरी करीने जीह ॥ वि० ॥ सबलुं कपठ द्रवें धरी रे,
 भाव राखो मुझ गीह ॥ वि० ॥ १४ ॥ हम नारी दो आगलें
 रे, नृप फेह पूकी मान ॥ वि० ॥ कामातुर थइ भाक्यो रे,
 खोई सघली शान ॥ वि० ॥ १५ ॥ धिग धिग काम बिदंब
 ना रे, धिग धिग मदनविकार ॥ वि० ॥ मुर नर नारी धा
 गलें रे, नवि रहे लज्जा लिंगार ॥ वि० ॥ १६ ॥ कामे केइ
 नर छेतरथा रे, कहंतां नावे पार ॥ वि० ॥ काम बनें मल कु
 पके रे, पढ्यो ललितानं कुमार ॥ वि० ॥ १७ ॥ कामराने
 थयो नारकी रे, सोनी सुवनकुमार ॥ वि० ॥ हास्य महासाका
 रणें रे, पढोतो दरीया पार ॥ वि० ॥ १८ ॥ कामिनी

भाग्य यह बेकल ॥ १ ॥ एम न कीये नायनी. छोकरावनी
 नव ॥ विन को कोइ गेहमें, नवि पेसीजें प्रत ॥ २ ॥ ए तो
 राव छे छेठुं, जेहमें भांगे मार ॥ ने करणी पढ़वी करे, कर
 रा परगने सार ॥ ३ ॥ परणी घरणी जे हुवे, तेने चढावो
 पाव ॥ स्ताने ते खमचे मधु, रहेवा घो ए लाट ॥ ४ ॥
 पदः पर धनन राजनी, ए छे तुम्ह बिन्द ॥ परनामी सहादत,
 वे विप छंडो हट ॥ ५ ॥ छे परजा अमें तुम तनी, पेदा बेटी
 ममान ॥ अण घटनी ए बानदी, केम कंग राजान ॥ ६ ॥
 बारा जोइये निर्दायकी, तिरापी आवे पाद ॥ कहा ते कृण
 मागल करे, जे निज दुःखनी राट ॥ ७ ॥ आवला जानी
 एहली, जाण्यु ते माखी मद्र ॥ नुं जानीने आवीया, लेवा र
 मनी कद ॥ ८ ॥ कंठ बिहणी कामिनी, जाण्यु ते मरिगण
 ॥ एन दुहा मनदु राव छे, तेने छुं सपगग ॥ ९ ॥ टोक ड
 नाणी पग करे, जो होय हैयुं राव ॥ काव हुवे तो बिह दिष्ट,
 जयै भिगा साथ ॥ १० ॥ एक नो मादग कतन, धूक्यो जम
 पर अह ॥ बली नुं करवा आवीया, यह नकट निर्लक्ष ॥
 ॥ ११ ॥ हूये दो मरारा नाव छे, एवा म बहो बोल ॥ सो
 बावे एक बानदी, सती न छूटे बोल ॥ १२ ॥ परवा पद
 ने माधवी, मगदी नृपने जाल ॥ बीधानमनी दापदा, सी
 हि नयो ननकाल ॥ १३ ॥

॥ हाल १ जी ॥ नुं मो दावक बोल्ह बीपादरा ॥ ए देली ॥
 नव मोरयो हन भरायो, जिय आगे हाथो दगरो, बोल्हो यह
 लारो ने, दो बन्नीनुं गोष पगी मयो ॥ हूये माधवी रोद म
 हेनी, हूये लेखुं मोरनोनी, जानो यह बेहनी रे, इह दीदर
 मोल हरी पगी ॥ १ ॥ हूये दावक बोल्हो राजनयो, हूये का
 नुं म बोल्हो गजनयो, मागो पीजारी रे, राजनयो बारी बा

मही ॥ मेना विष्णी जाणी, पुण मनशीं छं मपराणी, भांवे
 इम राणी रे, दो कमरी रुपने नखें मही ॥ १० ॥ २ ॥
 नुम मन नो म्हेसे ररे, अम जाण्यु यात्रे मनरे, भांवे मद पूरे रे,
 नृप कामातुम थड रणो ॥ नृप आरुठ व्यारुठ धाय, निम न
 ल विना पड नटकाय देवो नव राय म, दो कमरीनुं रूप सो
 हायणु । ३० . । वेडी जय वे मादिनाथ, नमैं सांभनो
 कुमरी माध सरो नुम राय रे मगनरणी दोरी में आजयी ॥
 नमैं होशो ने राय हम्न नुम भावमरुम रमैं धरगु, मन मुख
 वमैं रे, मागी नृमानरणी आजयी ॥ ३० ॥ ४ ॥ तब न
 पे कमरी रुपणा नै माना न नरायन मयणा हृष दशु रुपणा
 र, राचनजा नरी भाग मरा न ना जो फिरे पाथवा सारी,
 ए नो जो फिरे रना नरा न नरायन मयणा न नरायन न फिरे
 मरी ररी नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा
 यो मग्न नम ररी न न मरा न नरायन मयणा न नरायन मयणा ॥
 तब कमरी न रे न न नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा
 यमना न नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा ॥ ३१ ॥ फरी
 जय रे न नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा
 मग्न नरायन नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा
 न नोदो नरायन नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा ॥
 नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा
 मग्न नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा ॥ मुक्त
 दामिन दोरी भाग, मग्न नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा
 तब मग्न नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा
 किडा नरायन न कमरी मयणा नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा
 तमरु माध न नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा
 विम अरोनिस नाक मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा न नरायन मयणा

॥ चित्तुं घे ॥ तु० ॥ ९ ॥ अहि आगे डेडकुं भेते, हरि
 आगे मृग जाय केते, जाय कहो केते रे, चास आगे चिटकली दो
 राने ॥ निप तुमहीज भाभिनी भोली, तुम महेसो आम्हो चो
 ली, जासो किहां रोली रे, मुझ आगलें द्रिग ते छोटीने ॥
 ॥ तु० ॥ १० ॥ तव कुमरी भाखि घोळ, नृप दीनो छो फूटा
 रोळ, निगुण निदोळ रे, बडा दीसो छो कोइ तुम ॥ कहे कुम
 री रीखे धेमेरी, निम फूदे कच्छी वंछरी, नाखं नस बेरी रे, नर
 पतिजी छुं अबला अमें ॥ तु० ॥ ११ ॥ के छुं नृप हियदो
 फूटो, के छुं तुम जगदीश हठो, के छुं कांइ खूटो रे, तुम सा
 सोसास हनो निके ॥ तुम छुं नृप आप बरवाणो, तुम अबलाछुं
 बन तागो, अबलायी जाणो रे, केइ हारपा नर बलीया तिके ॥
 ॥ तु० ॥ १२ ॥ तुम सुगो परदेशी राजा, जेहनी हती मही
 दी माना, तेहनी ने भार्या रे, मूगीकतेय नख देइ हण्यो ॥
 बली नितशत्रु महिनाय, हतो परमनी महोदी आय, राणीये
 धरी पाय रे, पियु नारुयो जगनिभिमें सुण्यो ॥ तु० ॥ १३ ॥
 ए तो इत्यादिक नर बलीया, पण नारी आगलें गल्लीया, तो
 छुं दुयें बलीया रे, अम आगल नरपति छुं बको ॥ अय चरि
 र्पणी को नवि जीत्यो, बीनगने नारुयो चीतो, मुर नर खनो रे,
 श्री आगल को नवि जवयो ॥ तु० ॥ १४ ॥ सिद्ध सापक
 ने होय जाण, तेहनां अमें छुकुं टाग, एकादश गुणदाने रे, अमें
 पाटुं निदांणी नरभणी ॥ अमें जानें छुं श्री भूंदी, अमें चालनी
 नरकनां कूडी, छुं अमें हूंदी रे, ए तो चालनी नर दंदक नणी ॥
 ॥ तु० ॥ १५ ॥ तेषाटे नृप तुय आखुं, अमें कूड कदिय न
 मांछुं, चपटोमें नाखुं रे, उदादी खोखुं नहि भडे ॥ अमें सतीय
 न छुकुं टाहुं, अने दीडो ते आ राहुं, बीनो न चाहुं रे, नरपति
 जो मुरगीर खो पडे ॥ तु० ॥ १६ ॥ तुम करबुं होय ते क

राजा जन के पास आया था कि वह भी वही पदों पर
 था जहाँ जाता था वह १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥
 २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥
 ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥
 ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥
 ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
 ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥
 ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥
 ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥
 ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥
 ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

चोथा जहासनी मीठी, कही दूधदे जिह्म भू...
। लिखी चीठी मे, कही बीनी दान दे... ॥

॥ दुरा ॥ इम करता वे नह दयेन कान्हे ॥ १ ॥
रिना सपकाग निम, भगव्या जनेन ॥ २ ॥
नरपति कहे कुएरीने कर जोड ॥ ३ ॥
॥ बंधन छोड ॥ ४ ॥ ॥ हं सुख दुखुं कौं मरिगुं ॥ ५ ॥
॥ जेहवी करि नेहवी लही, वृद्ध पमती भाव ॥ ६ ॥
गतां तो घणी ए थर, काजे कदगा मार ॥ ७ ॥
॥ जिम रहे लोकाचार ॥ ८ ॥ ॥ बांझो नुंझो ॥ ९ ॥
॥ शिदि क्षेत्र ॥ कुर्दापाक देइ स्वर्गो, कीर्तो फल ॥ १० ॥
॥ तीपोने दुःख दाखवी, जे कीयो अपगव ॥ ११ ॥
॥ ग्री, इं छुं तुम सुन साध ॥ १२ ॥ ॥ इत्या दिह ॥ १३ ॥
॥ परो दोष ॥ बंधनयी छोड्यो परो, दुरा ॥ १४ ॥
॥ १५ ॥ ॥ गुप्त पणे नृप तिहां थकी, ॥ १६ ॥
॥ मुक्त पोषाबी आवियो, निगूग घड निर्लक्ष ॥ १७ ॥
॥ ने मुक्त घालीने, रोवे तस्कर मान ॥ १८ ॥
॥ १९ ॥ ॥ जाणुं हत ॥ २० ॥
॥ साय ॥ लेणेयां देणे पडी खालीपडी ॥ २१ ॥
॥ बापडो, देखी परायां माल ॥ २२ ॥
॥ माल ॥ ११ ॥ ॥ ते करणां नृपने ॥ २३ ॥
॥ दीवली दाखवे, वहे मन होलीपूर ॥ २४ ॥
॥ लोचुं, सूकी ममता दूर ॥ २५ ॥
॥ न चढते नूर ॥ २६ ॥

॥ दाल ३ जी ॥ घन स... ॥
॥ हिचे कुमरी दो कवने, कहे क... ॥

ने काढ्यो कूटीने, जिम हांकोटी काढे भान ॥ १ ॥
 लो प्रीतम माहरा, तुम परसादे बाध्यु जोर ॥ दिक ...
 हारपी, मजबुत काढ्यो ज्युं करी डोर ॥ सां० ॥ २ ॥
 वित लगे नृप जाणसे, खटकसे निशि दिन कालजे साल
 निराशी पड दोन ते मारनी, पूंजी ले गयो माल ॥ सां०
 ॥ ३ ॥ साजी इलदर फटकडी, सेववी पडसे मास वे चार
 मम्मइ अशेलीयो, स्वाशे त्वां पाशे करार ॥ सां० ॥ ४
 इत्यादिक भवणे सुणी, हरिचल नारीनां करय बलाण ॥
 लीणी साची तुमें, पणधारी में दांठां सुजाण ॥ ५ ॥
 प्यारी माहरी ॥ ६ आंकणी ॥ तुमें छो आतम जीवन माण
 आखनी कीकी छो तुमें, तुमें छो महोदां घरनां मंदान ॥ सां०
 ॥ ६ ॥ कुलबधूनां ए चिन्ह छे, पियुशुं गांवे मनइ पवित्र ॥
 कष्ट पडे केइ जातिना, तो पण सतीप न मूके सत्त ॥ सां० ॥
 ॥ ७ ॥ सत्य बटु संसाग्मां, सत्यथी वरसे जग जल धार ॥
 सत्यथी पृथिवी धिर रहे, धृतारी रहे सत्य आधार ॥ सां० ॥
 ॥ ८ ॥ सुरगिर पण रहे सत्यथी, सत्यथी शशि रवि चाले
 आकाश ॥ पृथिवी पण फले सत्यथी, वणसइ भार अडार ब
 लास ॥ सां० ॥ ९ ॥ वणज व्यापार चाले बटु, हुंटी चाले दे
 श प्रदेश ॥ ते पण सत्यथी जाणजो, त्रिजग कसो सत्य विशेष
 ॥ सां० ॥ १० ॥ केवली केवल सत्यने, त्रिगडे बेसी करेय प्रकाश
 ॥ धर्मनुं ममे ते सत्य छे, सत्यथी पामे ज्योति निवास ॥ सां० ॥
 ॥ ११ ॥ नर नारी सोढ सत्यथी, सत्यथी माने सह संसार ॥
 सत्यथी चूके जे मानवी, नव दंडक लहे ते निरधार ॥ सां० ॥
 ॥ १२ ॥ शिरनामें लिखे कागजें, सादी चम्पोत्तर आंक जे दोष
 ॥ तेइमे पण जन पंडितें, सत्य ठराव्य लोकमे जोय ॥ सां० ॥
 ॥ १३ ॥ सत्य मन छोडे मित्र तुं चोगडे लच्छी चोगणी होय ॥

मृग दुग्ध रेखा दो कर्मनी, दास्ये पण न टूले होय ॥ सां० ॥
 ॥ १४ ॥ इति परे पण लौकिक भवे, सम्पत्ती पाप्मे मुन्यनी रेख ॥
 कनरी पूरे नो सत्ययी, तो लो दुस्वर्नी रेखा देख ॥ सां० ॥
 ॥ १५ ॥ सतीचा सच न छोडीये, मच डोंडे पन जाय ॥ मगनी
 शिखि लपटी ते, आरे सन्मुख धाय ॥ सां० ॥ १६ ॥ भुंज
 ॥ माये दिन यपो, तेणे न दुर्ग्य सत्य लिगार ॥ दश दोकटा नृप
 शिखी, सायपी लघो ने अमृत भंडार ॥ सां० ॥ १७ ॥
 इत वन कंचण पामीये, ते पण सत्य वजो परमाव ॥ मनरवि
 ॥ शरीना मिले, शनिप विगेजनि दुद्ध म्पाय ॥ सां० ॥
 ॥ १८ ॥ झोल सती धद घोटकी, ते पण अघारी गरगाय ॥
 लय जो राखे आपपी, जिनवर ने पण मुझे पहाय ॥ सां० ॥
 ॥ १९ ॥ जेष्ठ शिखीका पुरप ने, सत्यपाटी पपा धांस भवे
 ॥ इत मापी मा ते लुटे, राखजो पुरो मय विवेक ॥ सां० ॥
 ॥ २० ॥ शनि परे हरिवले नारीने, मत्व ठपर देई दृष्टान ॥
 कर्तव्यी दो हरान्ति करी, टपनी मांडोसाई हरानान ॥ २१ ॥
 ॥ सां० ॥ सुखे तमावे दपनी रहे, निजपादिर बांहे पणजाइ ॥
 दो दुष्टक सुखी परे, पण विषय मुग्य भोगवे स्पाइ ॥ सां० ॥
 ॥ २२ ॥ निज मांडार इंद्री पकी, अर यपो पूरण एक काम ॥
 सर हरिदल पिल विगडे, निदलु दिगडे दवने दलाम ॥ सां० ॥
 ॥ २३ ॥ नृपने ने अदी सीमदी, दरी सारि मर सारि न मीय
 ॥ पण मरी कानोन ने, एणे कोडी ने न को केव ॥ सां० ॥
 ॥ २४ ॥ जो जगदेतलु पाटी प, तो बने बाउंडेपने दू ॥
 दोरी आनी ने पाने, केड जग जगने ने हरेने दू ॥ सां० ॥
 ॥ २५ ॥ विप मरनीवे दो पों, जमिदि हरने केड कल ॥
 दुज्जा कान भंडारीने, दुष्टे दुष्टो दुष्टे दार ॥ सां० ॥
 ॥ २६ ॥ जो हे मरी दू भंडारीने दुष्टे दार दार ॥

शल्य काटुं आखा जगतनुं, मो मननो पण काटुं खा ॥ सां० ॥
 ॥ २७ ॥ हणताशुं हणीये सही, तेहनं पाप न गणीये कांय ॥
 जेहवी देवी ते हवी पानरी, एम ज्ञाणो जगमां कहाय ॥ सां० ॥
 ॥ २८ ॥ ए मुद्रायें कामिनी, काळने बाल्यानुं छे काम ॥
 काल भूढो छे संसारमां, कालयीं विणडे केहिनां ठाम ॥ सां० ॥
 ॥ २९ ॥ इम जाणी हरिबल तिहां, समरयो सागरसुर उज
 माल ॥ लम्पि कहे शुभ सत्यनी, घोषा ज्ञासनी श्री
 ढाल ॥ सां० ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ दुहा ॥ हिचे हरिबल हरखें करी, समरयो सागर देव ॥ ते प
 ततखिण आधियो, कहो बच्छ किम समरेव ॥ १ ॥ तव
 रिबल कर जोडिने, मुरने कहे सोच्छाह ॥ कालसेन कम जातिने, धं
 तुमें अधिमाह ॥ २ ॥ शल्य काटो मम माइलं, निम लहुं मुख पा
 पूर ॥ विण खूने मुक्तेने नडे, तेहने दात्रो दूर ॥ ३ ॥ हरि
 लनी घाणी सुणी, थयो तब मुर परसज ॥ हरिबल केरी कां
 निमें, संक्रम्यो मुर तस तज ॥ ४ ॥ दिव्यांबर पहरी करी
 पहरी भूषण चंग ॥ दिव्य रूप हरिबल तणं, काधुं मुरसम अं
 ॥ ५ ॥ हरिबल पासं मुर करे, वैक्रिय वीजं रूप ॥ नभ म
 रगथकी उमरी, आवि दो भेटे भूप ॥ ६ ॥ चमरकार चित्तमें लई
 इखित परखद सार ॥ हरिबलने देखी तिहां, मलिया
 पांढ पसार ॥ ७ ॥ नृप मंत्रोने मगदीयं, महोई कुल
 अपार ॥ निम रोगीने दीजीये, चांदा उपर स्वार ॥ ८ ॥ हरि
 लने बाली पगे, जन्मे नाखी छार ॥ ते किम पाछे आवीयो,
 कुशळ करि शिणगार ॥ ९ ॥ हरिबलने सही ओल्लख्यो, मदनवेग
 ते राय ॥ आगत स्वागत नृप करे, वना मगमी पाय ॥ १० ॥ पुछे
 नृप हर्मिय मनें, कहो यमराजनी बान ॥ जी जी हकीगत आवि
 या, कुण ए नुम संमान ॥ ११ ॥

[illegible]

॥ २० ॥ १४ ॥ दो मंत्री यमरायना, काल अने माहाकाल हे ॥
 ॥ चित्र विचित्र दो टफनरी, पुण्य पाप लिखन विशाल हे ॥
 ॥ २० ॥ १५ ॥ दुनियां जे करणी करे, सुकृत दुःकृत देव हे ॥
 ॥ चित्र विचित्र ते मांडिने, दाखवे यमने लेख हे ॥ २० ॥
 ॥ १६ ॥ ते करणी यम देखीने, ये दुनियाने जीत हे ॥ सुकृत
 ने सुख दाखवे, दुःकृतने दे भीक हे ॥ २० ॥ १७ ॥ ईवि
 उपद्रव जगतने, मर्काना जे रोग हे ॥ काल दुकाल ते जे पडे,
 छबरना भेलवे जोग हे ॥ २० ॥ १८ ॥ पूर्वज व्यतरी व्यंतरा,
 बलगे ते सनमुख हे ॥ ए सावि करणी यम तर्णी, दुनियां जे
 लहे दुःख हे ॥ २० ॥ १९ ॥ रुसे जो यम जगतने, दाखवी
 नारकी घात हे ॥ तूमे नो यम नेहशु, आपे ते सुख शात हे ॥
 ॥ २० ॥ २० ॥ जारो घने यमराजनो, कहेता नावे पार हे ॥
 ॥ यमना त्रिचार विशेष छे, भगवतीमांडे विस्तार हे ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥ लौकिकने मने जे मृणो, तेह में दीठो सत्य हे ॥ तेह
 सभामें ह् मृयो, यमने करी प्रणिपत्य हे ॥ २० ॥ २२ ॥
 तनखिण यम मुझ ओलख्यो, अबाधि ज्ञाने सार हे ॥ देव शक्ति
 की मृष्टने, फिगी दांघा अवतार हे ॥ २० ॥ २३ ॥ नौतन
 काया माहरी, मृष्टने जीवित दीव हे ॥ सारमहु जाणीकरी,
 सजीव तगामन क्रिध हे ॥ २० ॥ २४ ॥ आगत स्वाग
 त घणि की, मृष्टने ते वभेगज हे ॥ मोक्ष समाचार तुम
 तणा, पूछे ने यमराज हे ॥ २० ॥ २५ ॥ तनमें तिहां कर
 ओढीने, यमने करि अम्दान हे ॥ आव्या ह् एक राजधी, तेह
 वा तुम उल्लास हे ॥ २० ॥ २६ ॥ निशान्दा पुग्नो घणी,
 मदनवेग ते राय हे ॥ अंगजने पन्पाववा, ओन्छन महोदो कराये
 हे ॥ २० ॥ २७ ॥ देश देशाउरि राजवी, मेलसे महोदो राज
 म हे ॥ वैभास गुदि पांचम दिने, परपने पुत्र रत्न हे ॥

करो तिगिरार ॥ स० ॥ कर जोदी कहे रायने, गंभी वयण उद्गार
 ॥ स० ॥ त० ॥ ॥ ४ ॥ यमनो जे पाँदहार छे, ते आवे मुस
 माय ॥ स० ॥ तो जइ यमने भेटीये, भरीये बंछिन बाय ॥ स० ॥
 ॥ ५ ॥ तव नृप कहे पाँदहारने, मुस मंत्राले संग ॥ स० ॥
 मंग मुदन पद दाखवा, भेलबो यमनो रंग ॥ स० ॥ त० ॥
 ॥ १ ॥ करी मगिपन माहरी तिहा, करजो मुस भरदास ॥ स० ॥
 करी सो छहो अस्वारीगुं, आवु तुमचे बिसास ॥ स० ॥ त० ॥ ७ ॥
 करी तो सह नगरी तणो, सयलो आवे साय ॥ स० ॥ यम
 गाने भेटवा, आवे विशालानाय ॥ स० ॥ त० ॥ ८ ॥ इनिपरे
 विनती माहरी, यम नृपने करेय ॥ स० ॥ श्रीप्रगते तुम आवजो,
 यमनी रजा लेय ॥ स० ॥ त० ॥ ९ ॥ तव मुर कहे ते रायने,
 मनी करी तुम मुस ॥ स० ॥ मुस स्वामी यमनापने, मेलबु मंत्री
 ॥ स० ॥ त० ॥ १० ॥ एम करी पाँदहार ते, मागी मृपनी
 दीव ॥ स० ॥ बेठो अगनी जालमां, सह जन देखन ईव ॥ स० ॥
 ॥ ११ ॥ मंत्री पण कालमेन ते, नृपने कोर जहार ॥ स० ॥
 नगरी जन सह गावने, मणमी करे मनुहार ॥ स० ॥ त० ॥
 ॥ १२ ॥ बेठो यमनी जालमां, मंत्री पण तेवहार ॥ स० ॥
 मुर मंगे कालमेन ते, मंत्री बली धयो छार ॥ स० ॥ त० ॥ १३ ॥
 नगरी जन सह देखता, मंत्री मुर धयो छार ॥ स० ॥ जोता विण
 एक पाटके, परोता यम दरबार ॥ स० ॥ म० ॥ १४ ॥ नगरी-
 जन नृप आदि ते, मंत्रीनी जोबे पाट ॥ स० ॥ जाणे मंत्री आदने,
 पन मनी करी गहाट ॥ स० ॥ म० ॥ १५ ॥ इनिपरे दो पटी
 दो पटी, मंत्रीनी जोबे पाट ॥ स० ॥ हजोय लगण आचो
 नही, नृप कहे सो धयो पाट ॥ स० ॥ म० ॥ १६ ॥ नर दगिदर
 करे भुवन, मंत्री करी मण्डप पाव ॥ स० ॥ ते मयो यमने मंत्री,
 ते दिय भावे पाव ॥ स० ॥ म० ॥ १७ ॥ जे मनां मुदल म

स्वार ॥ २ ॥ इय कहेवां नगरी जनां, बलीयां निज घर लोक ॥
 गीत साचो हरलो, पुण्य तणा ए पोक ॥ ३ ॥ कालमेन कुपा
 ने, शस्त्रो हरिचळे जीप ॥ जन दिये रंग वनाभर्णा, घर घर
 जना दोर ॥ ४ ॥ सर्ग नग्न इनियां मुखे, भावे सगळी वान ॥
 ते भेरी करणी करे, ते तेहरी वडे ग्यान ॥ ५ ॥ ज्ञानी तो
 ते ज्ञानी, देखो स्वर्ग ते नर्ग ॥ पण कहे लोक मने करि,
 तर्पाये नर्ग ते सर्ग ॥ ६ ॥ सामन्देव पमायरी, कीष्ट
 तपुं काम ॥ इगिबल चरित्र ते टंगिन, लाज्यो नग्नपति नाम ॥
 ७ ॥ तव इगिबल कहे रायने, म करुं मनमे मोच ॥ तम मत्री
 कुमनिये, तुमरो कराव्यो लोच ॥ ८ ॥ लंकाये मूस मांकल्यो,
 नि पूर्यो यम घेर ॥ तुम घूरण मूस नागिण, तव मे करि ए
 ॥ ९ ॥ तुम भंजीनी संगते, करता तुम पम साथ ॥ पण मे
 ग्या बरिदा, बरुणा भाभी नाथ ॥ १० ॥ ए गुण नेजो माहरी,
 नरिण सुखी भूय ॥ पम कही हरिबल तिहा, भाव्यां निज घर
 ॥ ११ ॥ वपनमिरी कुमुमगिरी, दो प्यारी गुणवन ॥
 तपु मूसचंद विलोकां, दो कुमरी हरखत ॥ १२ ॥ मूख
 विलसे संसारमां, टाळो सपलां चर ॥ करणी करे जिन
 पमनी, हरिबल मच्छी अठी ॥ १३ ॥ परतख देखी पागळुं,
 शक्ति केरो धर्म ॥ पुरजन मह धर्मी यण, टाडी मिथ्या धर्म ॥
 १४ ॥ नरपति पण मन लाजियो, निज कीर्ती चरित्र ॥ ते
 देखी पोखो करे, नरपति मनहुं विविध ॥ १५ ॥
 ॥ दान ७ मो ॥ जानो नारलो रे ॥ ए देवी ॥ साह्यादि
 मांगे परजने रे, पेठां ते निज घाम ॥ सावन सांयलो रे ॥ हा
 हा मे ए गुं करतु रे, अमपठुं ए काव ॥ १ ॥ सा ॥ गुनरं
 ने गुण धाम, दुखी आनगे रे ॥ ए साह्या ॥ किपा मरनी मो
 हनी रे, जागी दन भर माहि ॥ सा ॥ ए, नागिणी दुग्ग सपु

रे, विष्णु साये निन्दन्त्यसि । न । न । न । न । न । न ।
 कहे रे, स्वोऽहं नाम्नाया लान । म । म । म । म । म । म ।
 रे, राजने होल अवाज । रे । रे । रे । रे । रे । रे ।
 पोष्य वयम् विधि । रे । रे । रे । रे । रे । रे ।
 छरी नम रेथ । रे । रे । रे । रे । रे । रे ।
 मुञ्ज दाप । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 ॥ ७ ॥ मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 ॥ ६ ॥ मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 ॥ मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 ॥ ५ ॥ मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 छे स्वा श्रृंगारनी कोथ मे । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 चारे राम रत्न रक्षा रे । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 वो नासा मर । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 वह रे, विचर । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 रे तारे का । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 जावे भवना ड । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 जिनये का । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 मानरा आणा । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 गमाय । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 ॥ १ ॥ मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 ता । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 कामदरे बलि । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 शितादि । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।
 चीती हसे ने जागरे रे । मा । मा । मा । मा । मा । मा ।

दोधे खरु विकारुं रे, खोई तन मन रंग ॥ १६ ॥ सा० ॥ श्री
 मुझने ए उपनां रे, पडवा नारकी कुंड ॥ सा० ॥ धिग धिग मा
 हगी बुझिने रे, जे थयो व्यसनो भंड ॥ १७ ॥ सा० ॥ धन हरि
 बलनी बुझिने रे, दीपुं जीवित दान ॥ सा० ॥ अजर प्याले
 वन जरियो रे, दीठो बडो सावधान ॥ १८ ॥ सा० ॥ जो कोपे
 मुझ उपर रे, सो करे मंझीनी रीत ॥ सा० ॥ राज लीये मुझ
 एकलो रे, तो शी रहे परतीत ॥ १९ ॥ सा० ॥ में मदारे हाये
 करी रे, करणी खोटी कीव ॥ सा० ॥ नौति मारग लोपी करी
 रे, हरिबलने दुःख दीष ॥ २० ॥ सा० ॥ ते किम सांइ सांसहे
 रे, जे हुं चाल्यो अनीत ॥ सा० ॥ तो श्रीरामण भनी जडी
 रे, कादि नहि विसरे चित्त ॥ २१ ॥ सा० ॥ अवगुण उपर गुण
 करे रे, ते तो हरिबल एक ॥ सा० ॥ मुझने राख्यो जीवतो रे,
 दयावंत विवेक ॥ २२ ॥ सा० ॥ मृगुण पुरुष में दीठडो रे,
 हरिबल साहस धीर ॥ सा० ॥ उरगारी शिर सेहरो रे, वीर
 शिरोमणि वीर ॥ २३ ॥ सा० ॥ धन हरिबलना तानने रे, धन
 हरिबलनी मात ॥ सा० ॥ सावित्रंशर्मा दीपनो रे, सुभट शिरोमणि
 जात ॥ २४ ॥ सा० ॥ धन धन ते गुरुदेवने रे, जेणें बताव्यो धर्म
 ॥ सा० ॥ हूं बलिहारी तेहनी रे, जे राखी मुझ धर्म ॥ २५ ॥ सा० ॥
 इम हरिबलना गुण स्तवे रे, परजामें मदनवेग ॥ सा० ॥ तोल
 वधारयो माहरो रे, हरिबलगुं करि नेग ॥ २६ ॥ सा० ॥ तो
 हुं पुत्रा माहरी रे, पणायुं दुभ काज ॥ सा० ॥ कर मूकामण बली
 दीपुं रे, महीयल महोदुं राज ॥ २७ ॥ सा० ॥ गुण भोशोगुण
 ए थइ रे, हुं टिबे याउं निःपाप ॥ सा० ॥ पछे हुं संजम आदरं
 रे, ज्यु मिटे भवनां संनाय ॥ २८ ॥ सा० ॥ एता दिन भूलो भय्यो
 रे, निण दर्शन मुझ जीव ॥ सा० ॥ दिबे करणी एहवी करुं रे,
 जिम लहुं सूर मदीव ॥ २९ ॥ सा० ॥ इम आलोचना परजमे

The page contains dense handwritten text in Devanagari script, likely from a manuscript or a printed book. The text is arranged in approximately 20 horizontal lines across the page. Due to the extreme blurriness and low resolution of the scan, the individual characters are illegible. The ink appears dark against a light background.

७॥ सो० ॥ हांजी बोया उल्लसनी ए काहे, शुभ लक्ष्मी
दानी दाव ॥ सो० ॥ २८ ॥

॥ दुहा ॥ मदनबग हग्ये कनी, कीसो उल्लस भार मोनु
रुं सामदु, वरमे उग्र जल गग ॥ १ ॥ जमगदहा वनचारियो,
नगरी निपाटी सार ॥ हांजि रने राजे ठळ्यो, बग्या जय जयकार
॥ २ ॥ बंदोजन घुव्या पग, आणी मन उवगार ॥ आमी नन
गुनग करपा, टाजे देदेकार ॥ ३ ॥ पद महोग्य भनिहे
कापा, राखी जुग नगे लपान ॥ हरिबल जे राजा थयो वाणी
विहे दिशी बाज ॥ ४ ॥ नगरी जन महु हग्यापा जव थयो
हरिबल राव ॥ देव देवाजि भेटणा, ले आवे रुप धाव ॥ ५ ॥
गिरि पद महोग्य करी, जे नृप मदनबग ॥ हांजि रने राज्य
दो, नवन वारापा नेग ॥ ६ ॥ हरिबल पद नग्य भागव,
राजे राज्य अगद ॥ आज मनारी चिह्न दिने मजबानि मोन
बंद ॥ ७ ॥ हिने रुप जापाया कने, समो मने शीम ॥
जो मारी राजी हवा, तो हं नेहं शीम ॥ ८ ॥ निज भातमने
हारवा, नेहं भजमधार ॥ हिने वणोमु नेहला वग्या थयो हरि
वार ॥ ९ ॥ एन करी नृप गज थयो, बहेने ते पारिजात ॥
दोहा महोग्य शुभ कने, हरिबल जव गुनगाम ॥ १० ॥

१ हात ९ री ॥ अमरासदना भेटणा ॥ वातव आहरो ॥ १ ॥
९ देवी ॥ सजदानी बग्या हे, नृप मन उल्लसो हे ॥ वातवान
अग्या हे, नृप हं मज्जा हे ॥ आजी समया आह वग्या हे,
गजो पग था माये विधान ॥ पंवन मोनने हो हे, मं.प आहो
हे ॥ १ ॥ गाने हवे काहे हे, एन बटु वाहरे हे ॥ निवेज
निने पाने हे, मृदुन करनी आहो हे ॥ मरहित जिने दण्ड
करे, नरपन रचना विष पंग ॥ पंगे आहो आह हे, गुने
ति नृप कने हे ॥ २ ॥ वाताजिने केन हे, एन माये लोडण

रे ॥ परमात्मने गेहं रे, समकेत मांडिया रे ॥ मूली घराने सखें
 शोच, पच मृष्टिगु कम्बो निहां लोच ॥ राजा राणी आदें रे,
 चारित्रने ग्रहे रे ॥ ३ ॥ नव हरिवल गम भावें रे, ससराने ऊजवें
 रे ॥ दीक्षा महोत्सव भावें रे, कम्बो जन संस्तवें रे ॥ वरमे
 ज्युं भादरवानो जधार, वरमे न्यु हरिवल शोचन धार ॥ कभि
 जन जेता नेना रे, श्लोक भणे घणा रे ॥ ४ ॥ सुरपतिनी परें
 कीधो रे, महोत्सव दीक्षनो रे ॥ सायिक समकित केरो रे, ब्रह्म
 दंड ईक्षनो रे ॥ दीक्षा उच्छवनु फल एह, हरिवल पाम्यो रे
 गुणगेह ॥ शिव रमणीनो साचो रे, पालव बांधियो रे ॥ ५ ॥
 धन धन मद्गङ्गापित्री रे, बलिहारी ताहरी रे ॥ संजम नारी
 प्यारी रे, घरी तुम जाहरी रे ॥ धन धन स्वामी तुमरो भेल,
 धन धन जीत्या गग ने द्वेप ॥ ते गृग लीणो तुमरो रे, हुं किं
 कर थइ ग्यो रे ॥ ६ ॥ धन्य स्वामी कल्याण रे, मन संतो
 पियो रे ॥ रावेग रस करी आतम रे, निर्मल पोपियो रे ॥ धन
 धन्य स्वामी तुम दृढ चित्त छांट्यां धन कण राजनी नीत ॥
 धन धन्य स्वामी तुमचा रे, मनोबल भावने रे ॥ ७ ॥ इम गुण
 महोदा रे, मदन वेग कृपिराजना रे ॥ धन्य धन्य मुखपी जपता
 रे, हरिवल पूजना रे ॥ इगि परे काता स्तवनां अपार, कृपिजन
 मगमी निज आगार ॥ हरिवल गंगा आदि रे, सह बांदी बल्या
 रे ॥ ८ ॥ दिवे कृपि मदनवेगजी रे, गुरुसंगे भजे रे ॥ चौद पूर्वना
 अर्थ रे, विचार ने संजणे रे ॥ पावे पूग पंचावार, चाले सुधा
 नव बपवहार ॥ देवाति दोये साचां रे, जिन मतमें वढे रे ॥
 ॥ ९ ॥ अव्यातमरु सुंदर रे, निरखी तिहां रदे रे ॥
 विरेक तणां जे मंदिर जे, मसोटां गह गहे रे ॥ तेहने कीयो दो
 जणे वाम, करे तिहां चेठां ज्ञान अभ्यास ॥ ज्ञान नं दरिद्र नर
 पानु रे, रडे भीनां यकां जे ॥ १० ॥ ध्यान सुनखने वेढां रे, दो

भरिक जीवने निर्भी रे, संजित साग्या रे ॥ भाग्युं ए समकित
 पाम निधान, मुगति बभूनु दाता निदान ॥ जिनरे स्थाणु ..
 रे, मूष सिद्धांतमा रे ॥ १९ ॥ एहरा गृण गुमें जाणी रे, समकित
 भारजा रे ॥ निरा विकथा परनी रे, दूर निवारजा रे ॥ उगुं लो
 भयियां समकित शुद्ध जा जगदीश दे सुमने पुद्ध ॥ तो सद्वच
 मोलें करीने रे, समकित भारजा रे ॥ २० ॥ भरिक जीवने सब
 कित रे, जीवनुं मुल छे रे ॥ समकितवारी जीवने रे, विष
 अनुकूल छे रे ॥ इम कहे लक्ष्मिविजय उममाळ, पोषा उठासनी
 नयमी दाल ॥ हलया कर्षा जीव ते रे, वयण ए मानसे रे ॥ २१ ॥

॥ गुहा ॥ हिं गृणजा भविषण गुमें, हरिबल केनी पात ॥
 र्पाशाग पु नयने, विष्णु राज दिव्यात ॥ १ ॥ वारे दर्यामे
 मयल, मोडी दाननी शाळ ॥ नम बुभुक्षित मांयने, देवे दान वि
 शाळ ॥ २ ॥ नम भेदे ज पुण छे, सुत्र तणे अनुसार ॥ जन्म
 सकल कागवा भगी, मोदये सपुकार ॥ ३ ॥ साते देखे वारे,
 कोइ लभ धननी कोट ॥ पैल कगने जित तणा, मोदि स्वर्ग
 होट ॥ ४ ॥ अमासि पलावे निद्रु दिने, मिही सुवी आणा राय ॥
 मागी शब्द को उचर, ता ते सुनी भाय ॥ ५ ॥ विष रूने कोगीचने,
 को न उपादे जस ॥ कीडी कुंजर भापणा, सम वरी लेखने
 तत्र ॥ ६ ॥ इणि परे हरिबल राजवी, पावे राज्य अराम ॥
 दरमाने ईतु समो, अविन भीम मपेट ॥ ७ ॥

॥ दाल १० मी ॥ माग्गी माग्गीदा रतने धन रे, हापे सब
 वियां रे लो, मागे माजिगर माळो ॥ ए देखा ॥ भरियां नगरी
 विजाळा सारु, समाला साहनी रे लो, मानुं केगलपुगी लो ॥
 ४० ॥ मोदम बासीनी परे खासी, मोदनी रे लो ॥ ठकुराद भोपे
 सन्नी लो ॥ १ ॥ ४० ॥ पुण्य ममारें भावे, भोगरे राजने रे
 लो, हरिबल भाग्य विजाळा लो ॥ ४० ॥ मुगत पला पालने,

[illegible]

॥ भ० ॥ वैसे ह्मति न्हिये दिव, खाने न्हिये रे । वनमेन
 म्पाना लो ॥ १२ ॥ भ० ॥ जो जो प्रदी म्पान, कमा अन्धिये
 रे लो, कीपो झारु झमाश लो ॥ १३ ॥ चोवा उट्टामनी पुण,
 म्हाशनी लम्बिये रे ओ. भांभी दन्नी दाग लो ॥ भ० ॥ १४ ॥

॥ दुहा ॥ इणिये चित्तमां चित्तवी, वनमेन भृषा ॥ काग
 पित लेखण करी, मां लेख म्मा ॥ १ ॥ स्वस्ति श्री श्रीरूप
 मना, चरण कमल नमि ताम ॥ लेख लिख्यो गम्पामणो, जामा
 शने उट्टास ॥ २ ॥ नृप तेहावे नतखिणे, मनिग्गाम मरीश ॥ ते
 पण ततखिण आवियो, मणपी नाव जर्गाश ॥ ३ ॥ भृष
 कहे तुग मंत्रवी, आ सोष्ट नृप न्हिये ॥ जामाना मझ पत्रिने,
 देने लेख विशेष ॥ ४ ॥ कहेजे प्रणिपत माहरी, यणी कमा मनहार
 ॥ कहेजे तसरे तेडवा, मुक्यो मुझ निधाय ॥ ५ ॥ गाय न
 मग इगिरों, भूँ कोधी जोर ॥ मनशु मरी मच जो, देह नगारे
 योर ॥ ६ ॥ कचन पुरनां मानवी, मघळे जाणी वा ॥ जामाना
 निम पत्रिने, मुक्यो तेडवा साथ ॥ ७ ॥ मंत्री साथे पत्रवी, सेना
 पंच हजार ॥ योजन चउसय मनिने, आख्यो विशावा पार ॥
 ॥ ८ ॥ बीशलालापुर नगरनां, दिवां महोशं मदाण ॥ जाणे स्वग
 पूरी वसी, आवीने इण ठाण ॥ ९ ॥ बाढी महोले मलपनि, फाल
 चिदिदि दनराय ॥ जाणे वन नंदननी वहेनदी, आय वमी
 इण ठाय ॥ १० ॥ इणिये सेना भंत्तवी, देखन हांपत होय ॥
 पैमारो पुरमे करयो, बेला शुभ घोडे जोय ॥ ११ ॥ नगरी सरसरी
 जोवतां, आख्या ते दरवार ॥ हरिवल नृपने भोटिया, उपनो हर्ष
 अपार ॥ १२ ॥ हरिवल मुरपति साखिखो, बेठो धरावी छत्र ॥
 मंत्रिपण मणिपत करी, दावो नृप कर पत्र ॥ १३ ॥

॥ दाल ११ नी ॥ शेरुंजानो वासी साहेव, माहारे दिल
 वस्यो रे ॥ मोरा साहेवा ॥ आदिजिन कर्ह रे न्हार ॥ ए देखी ॥

कागल देइ हर्ष धरो विचगुं रे ॥ मोरा साहिवा ॥ ए तो ॥
 मंत्री विशेष ॥ तेहवा तुमने मुक्या अमने हेतु रे ॥ मा० ॥
 तुमचे सुसरेजीये लेस ॥ कागद० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ निशि
 दिन तुमचो राखो मिमचो मज्या तणो रे ॥ मो० ॥ तुम सुस
 रोजी भूपाल ॥ दगिसण टीने पावन कीने आंगणो रे ॥
 मो० ॥ तुमचो सामुनो कृपा ॥ का० ॥ २ ॥ सुसरो
 जमाई आनंद पाई एकठा रे ॥ मो० ॥ रेखी करो रंग रोल ॥
 नेह सुधारस घरसे पावस गहवटा रे ॥ मो० ॥ उपजे ज्युं रंग
 चोल ॥ का० ॥ ३ ॥ अमचो स्वामी तुम शिर नामी प्रेम
 शु रे ॥ मो० ॥ कष्ट मुख वचने एम ॥ तेमाटे स्वामी अंतर
 जामी नेगशुं रे ॥ मो० ॥ पाउ धरो घरी प्रेम ॥ का० ॥
 ॥ ४ ॥ सुसरो ने मामु नही कांदि फामु पावती रे ॥ मो० ॥
 आव्या पिना माणाधार ॥ पजर तिहां छे जीव इहां छे भावधी
 रे ॥ मो० ॥ इगिपरें राखे छे प्यार ॥ का० ॥ ५ ॥ ते
 माटे तुमने कहुं शुं मभने घणुं करी रे ॥ मो० ॥ दंपति थड
 एक रंग ॥ बेगा थावो वार म लावो सहचरी रे ॥ मो० ॥ ल्यो
 लेना तुम संग ॥ का० ॥ ६ ॥ इगि परें सयणा मंत्री बयणां
 सांभली रे ॥ मो० ॥ हरक्यो हरिबल राम ॥ कागद वांची
 मनमां माची मन रली रे ॥ मो० ॥ सेना सजि अभिराम ॥
 का० ॥ ७ ॥ तिहांथी मंत्री उठथो मंत्री शीघ्रधी रे ॥ मा० ॥
 आव्यो ते कुमरी पाम ॥ तातनो मंत्री ओलक्यो पंजी अग्रधी रे ॥
 ॥ मो० ॥ वसंतसिराये उल्लास ॥ का० ॥ ८ ॥ मिलवा
 उठो कुमरी वूठी नयणधी रे ॥ मो० ॥ हर्षनां आमू जोर ॥
 जनरुने दीरें मिलियां भजि परें सयगधी रे ॥ मो० ॥ मंत्री
 कुमरी सढोर ॥ का० ॥ ९ ॥ वेसि एकांतें कुमरी खांतें पूछ
 ती रे ॥ मो० ॥ कुशल खेमनी रे बात ॥ नात पिताना

उदाम ॥ हरिबल राजा चढ़त विजार्ज वाजने रे ॥ मो० ॥ पा
 ल्या जनमनी भूम ॥ का० ॥ २० ॥ सुसगनो मंत्री पुष्प
 विप्रो नेयता रे ॥ मो० ॥ ले चाल्यो दपनि साग ॥ श्रीम प्र
 याणें थाथो निजाणें देयता रे ॥ मो० ॥ आख्या ज्यां परणी नार
 ॥ का० ॥ २१ ॥ ने वन देसी दपनि हग्ली दीधला रे ॥ मो० ॥
 हेरा ते वनमांडि ॥ किधा उतास जीमण साग कीधला रे ॥
 मो० ॥ चउरगी सेना उच्छाटि ॥ का० ॥ २२ ॥ प्यारि
 पयपे पियुने जपे हेतनी रे ॥ मो० ॥ बाणीयें बीनवे भूप ॥ इंद
 पुरी सम नाम रहे तिम बेननी रे ॥ मो० ॥ नगरी बसायो लूष ॥
 का० ॥ २३ ॥ श्रीजिनमटिग अनिही मुंदर चौपडु रे ॥ मो० ॥
 कगे इहां तीरथ ठाम ॥ जे मुस परणी ते करो करभी रूप
 रे ॥ मो० ॥ जिम रहे जगमें नाम ॥ का० ॥ २४ ॥ तब
 ते मच्छी प्यारी मूलच्छी वयण्यी रे ॥ मो० ॥ समरचो ल्हा
 सागर देव ॥ गुणणो रागो पुष्पविभागी सयण्यी रे ॥ मो० ॥
 आख्या सुर तनखेव ॥ का० ॥ २५ ॥ सुर कहे शाने तेहो
 मानें ते कहे रे ॥ मो० ॥ जे होय मननी हूव ॥ तब कहे हरि
 बल दाखां सुरबल मनें बहो रे ॥ मो० ॥ नगरी बसायो लूष
 ॥ का० ॥ २६ ॥ तब तिहां नाकी बाकि न राखी पलकमें रे
 ॥ मो० ॥ बामी ल्हा नगरी विस्तार ॥ गढ मढ मोंदिर पोलगु
 मुंदर हलकमें रे ॥ मो० ॥ रचना कीध अपार ॥ का० ॥
 ॥ २७ ॥ भीमनिमुग्रन श्रीजग उष्टन सो हती रे ॥ मो० ॥
 विव दव्युं वरि चत्त ॥ दपनि दोनी मूरति कीनी मोहनी रे ॥
 मो० ॥ पूर्व जे लखुं देवत्त ॥ का० ॥ २८ ॥ राग बेभउक
 द्रिग ने दंडल देसिने रे ॥ मो० ॥ दपनि थयां उतमा ॥ चो
 था उछासनी भेव प्रकाशनी पेसिने रे ॥ मो० ॥ कदि गदियें
 हग्यारमी दाल ॥ का० ॥ २९ ॥ इति ॥

रंग वधामणां ॥ ए आंकणी ॥ एतो पूजा भक्ति करी ५
 एतो मणम्या देवीना पाय ॥ स० ॥ १ ॥ घन घन मावसी
 जगतमां, मगदी तुं जन मुख हेन ॥ स० ॥ दीन दुःखीया जीवने
 उद्धरी, करी पावन सपद हेन ॥ स० ॥ २ ॥ इम आसना
 वासना देवीनी, करि दंपती बोले आशीष ॥ स० ॥ माना जीव
 जे मुरगिरिनी परे, अम पुढची सचली जगोश ॥ स० ॥ ३ ॥
 हिवे हरखपो कंचनपुर घणी, एतो वसनसेन भूपाळ ॥ स० ॥ तेष
 वसतसेना रागिणों, पट्टराणों थड उजमाल ॥ स० ॥ ४ ॥
 निज पुत्रीने वर कारणें, शिणगागी नगरी ते सार ॥ स० ॥
 एतो देव दाणव विद्याधरा, एतो जोंचा मिलिया अपार ॥ स० ॥
 ॥ ५ ॥ एतो गजरथ घोडा पालखी, शिणगाग्या ते बहु ठाठ ॥
 ॥ स० ॥ राज मारगमां विराजता, पथगट्या सोवन पाट ॥
 स० ॥ ६ ॥ दुर्वांनां हे तोरण बांगियां, विषें सुतरु दल म
 केंन ॥ स० ॥ एतो घर घर चहुटे चाचरे, फुलमालातुंज सोरत
 ॥ स० ॥ ७ ॥ टोडे टोडे मोतीना झुनणां, लहकी रक्षां तेजवें
 तेज ॥ स० ॥ मानुं कुमरी वरने निखवा, आवी स्वर्गपुरी नेहे
 ॥ स० ॥ ८ ॥ शिणगागी नगरी शिणपरें, हरखी नृप वसं
 तसेन ॥ स० ॥ चतुर्गा सेना सज करी, वर कुमरीने तेडवा
 तेण ॥ स० ॥ ९ ॥ गयणांमण गूढो उच्छले, गुंझालां गुंजे नि
 शाण ॥ स० ॥ साबेळां सचळ ते सज करयां, नगरीजन कुं
 मुजाण ॥ स० ॥ १० ॥ इम आठवागुं नरपति, सामयुं सचळ
 सजेय ॥ स० ॥ चाल्यो कुमरी वरने तेडवा, पुरजनगुं हप धरे
 य ॥ स० ॥ ११ ॥ नखयोवन नाग सोडामगी, मिळी गावे मध
 रां गीत ॥ स० ॥ रंभा उर्बर्शाना मद् गाठनी, गावे कोकिल स्व
 रनी रीत ॥ स० ॥ १२ ॥ दळवादळ देखा पुत्रीतुं, नृप पुत्र
 इम भरत ॥ स० ॥ जिपे भक्तिने समकित मिने, तिपे

॥ २५ ॥ जी जी मविषां साधुनी संगतें, लखो जीवदयानो धर्म
 ॥ स० ॥ यपो परसन जलनिधि देवता, तिणें वधारचो मच्छीनो
 भर्म ॥ स० ॥ २६ ॥ यपो चावो ते चिहुं मूंयें, भोगवें शुभ
 ऋद्धि समृद्ध ॥ स० ॥ जाणे सुखनिनो समोवडी, यद वेडो म
 ष्ठी मसिद्ध ॥ स० ॥ २७ ॥ मळें प्रगल्भा सद्गुरु जगत्में,
 वपगारी परम कृपाल ॥ स० ॥ कहि चोया उल्लासनी वारमी,
 लखें संयोगनी दाल ॥ स० ॥ २८ ॥

॥ दुहा ॥ एइवा सद्गुरु वपगयी, पांम्यो जिनवर धर्म ॥ यपो
 परसन जल देवता, वपियो मच्छी भर्म ॥ १ ॥ हरिबल दो पद
 बीं लखो, सागरदेव पसाय ॥ ठकुराई बबीश लाखनी, पापकें अ
 न्व गुहाय ॥ २ ॥ गुडा दंड विराजता, दिसता जाणे पहाड ॥
 गजशालामें गज घडा, मोट नइस अडार ॥ ३ ॥ सुख विलभें
 संसारनां, शोलखें राणी सच्छ ॥ पटराणी बापी वडी, वसंत
 सिरी मुरुपच्छ ॥ ४ ॥ मृदगी जे परिजेतनी, कासी कर्कशा नार ॥
 ते पण हरिवलें सग्रही, कांरि अचळ अवतार ॥ ५ ॥ अमारि
 पत्तावे चिहुं दिशें, निहां सूची छे भाण ॥ निहां सूची को जी
 घनी, काडी न शकें प्राण ॥ ६ ॥ इगिपरें लीला भोगवें, पूरव
 पुण्य पसाय ॥ चावो यपो चिहुं मूंयें, महोदो हरिवल राय ॥ ७ ॥
 इवें सुसरो हररें करी, वमतयेन भुयाळ ॥ नामानने बीनवे,
 कर जोडी उममाळ ॥ ८ ॥ यो अनुमति दीक्षा मणी, आणी
 हर्ष अपार ॥ शिव रमणी वरवा अये, लेखु मजप भार ॥ ९ ॥
 एम कही आगा लडी, मामू सुपरो दोय ॥ पंच महाव्रत उच्चरणी,
 सुविहित सद्गुरु जोय ॥ १० ॥ चढने परिणामें करी, पाडे
 पंचाचार ॥ उग्र तपस्यानां धनी, ययां सुधां अगवार ॥ ११ ॥
 सपक भेणी चढतो धकां, वेरमुं लखो गुणठाण ॥ शुक प्याना जो
 गयी, पांम्यां केवल नाग ॥ १२ ॥ चोवड इक्षादिक पिळी,

॥ १९ ॥ पुर जन सह राजी पया ॥ पु० ॥ नयणे निगूनी
 ना हो ॥ सोदने मिली शुभ मोनाये ॥ पु० ॥ नृपने वरा
 लो मनाय हो ॥ सु० ॥ २० ॥ भले आदरे उदरे पु० ॥
 परोक्ष रूप दरबार हो ॥ छवीश राजकुटी सिन्ध्या पु० ॥
 निद्रिया बाह पसार हो ॥ सु० ॥ २१ ॥ भल भल लोभ मे
 र्णा ॥ पु० ॥ नृप पण ते करे भग हो ॥ मनमाना पच्छी
 नेरने ॥ पु० ॥ देइ शिखाइ ते रंग हो ॥ सु० ॥ २२ ॥ इजिरे
 लीला राजनी ॥ पु० ॥ भोगवे मच्छीगय हो ॥ रडे भानो रमना
 ने ॥ पु० ॥ बीशाला पुरडाय हो ॥ सु० ॥ २३ ॥ लोच इलापे
 र्मा ॥ पु० ॥ मोहे ज्य ऊनाम हो ॥ सिम हरिचल लोच जन
 दे ॥ पु० ॥ सोढे तेजकाश हो ॥ सु० ॥ २४ ॥ ए गुण जीव
 या नगो ॥ पु० ॥ फालिया मनोरथ मिट हो ॥ लक्ष्मी चोभा उ
 लापनी ॥ पु० ॥ दाउ नेमी कही पगनिद हो ॥ सु० ॥ २५ ॥ इति ॥
 ॥ दुहा ॥ पच विषय सुर विलसाती, बीना केना दिस ॥ वन
 लमिरी पदनारीये, जन्मयो पुत्र रतन ॥ १ ॥ श्रीवल नापे मिह
 ल, मगदो माहावल्लभ ॥ हरिचल केरी पुवडा, मकल्लनी श्री
 ल ॥ २ ॥ दुसमसिरी जे मेकनी, निणे पण जन्मयो पुत्र ॥ नान
 रिनाने सुख दिये, चले धानो सुत्र ॥ ३ ॥ मवल्लनापे पण जे
 मगदो ज्य रवितेज ॥ मानपिना इग्ये पणु, देगो दो सुन हेत
 ॥ ४ ॥ गमने लखमण जोड ज्यु, मोहे लू दो धान ॥ दान माने
 आगला, पुहवामा करे रुयात ॥ ५ ॥ जोड मिली दो भ्रा
 तनो, श्रीवल मुवळ नाप ॥ गम काजमे नयना, गसे मन अभि
 राम ॥ ६ ॥ बीनी गणी जे अछे, पौडये जे शुभ मद्र ॥ तिणे
 पण पुवना योग्या, जन्मयो पुत्र रतन ॥ ७ ॥ इजिरे लीला
 भोगव, हरिचल पुष विख्यात ॥ संसारिक जे सुख कदा, बिलसे
 ते सुख सात ॥ ८ ॥ नन धन श्री सुन सखनी, अत्र राम

मां० ॥ ६ ॥ को कही नात न को कही पात ने रे को कही
 भात ने को कही जान रे ॥ इणिके मय मय ने वयणधी रे,
 मगस बेची लीध ख्यात रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ को कही प्रात
 को कही बेरने रे, को कही मान ने को कही कड रे । पाव
 छे बने सहने कालधी रे, आखे प्राणी धृष्ट ने भी धृष्ट रे ॥ मा०
 ॥ ८ ॥ कूदी माया ने कूदी कापिता रे, कूटा ले भया वंश लो
 करे ॥ कूदी छे दुनियां बाढ छे छे न पण भने होवे
 कोकरे ॥ मां० ॥ ९ ॥ प्राणधी बाढा रे जेहने जाणिये रे, राखीये
 वेने शुं करि शंय रे ॥ ने पण न गेह उधो दुडवा रे । प्राणा ने
 छे बि पहोरे पय रे ॥ मा० ॥ १० ॥ कोइ गरा ने कोइ जायने
 रे, केहि छे प्राणी सारणहार रे ॥ पुनर रिहणा दुख बाटही रे,
 आने ने प्राणी हाथ पचा रे ॥ मा० ॥ ११ ॥ न गणा
 ने कृग ने रांफने रे, भागवा एजि गह रे ॥ १२ ॥ माय
 मुहने कीधनी रे, उतगना ने भरनी गह रे ॥ १३ ॥
 प्यो रे भरोसो काचा रुभनी रे, इयो वी कही भननी पण रे
 देखने संध्यातम तनी पणे रे, उलो ने आवि विगन नय रे ।
 मां० ॥ १४ ॥ दश रे हृष्टि मानव भव नणो रे, पान्नी तो न
 नप कजाय रे ॥ तो बली रिहि रिहि पापको दोहो रे । निम
 करी पूजासम्मे न्याय रे ॥ मां० ॥ १५ ॥ जान दाय नय
 मावना रे, धाल्यो ने जिनकरे चउविह ॥ १६ ॥ नहनी सो की
 ने सप शुभभाषधी रे, लूरीये विगमे निज नय कर रे ॥ मा०
 ॥ १७ ॥ होवे ने सहने मणु पुण्य जावना रे, लासगुनु ने
 अजाची होय रे ॥ कोही मणु फल नम ० दानधी रे, प फल
 पुण्यनु दहि पणे जाय रे ॥ मां० ॥ १८ ॥ व्याने दीये ने धन
 विमण लहे रे, चोगमुं पामे धन क्यवनाय रे ॥ इन गण पामे
 गुण सेवणी रे, दान रुपावनी सन्या न पाय रे ॥ मां० ॥

शक्ति ॥ अष्ट करम दल दुर्लभ कीर्ति, बेमवा सिद्धिनी पंक्ति ॥
 म० ॥ १६ ॥ एकादश जे आरुनी प्रतिभा, मांगी जे पगवा
 ने ॥ विधि पूरेकनुं जिन अर्चने, ने पग बहि एक ताने ॥ म०
 ॥ १७ ॥ गारुन अने पाठ ए नागे, जो जो भविषी रंगे ॥
 दग आरुने निम बाह शुभ प्रतिभा, निम बाहि मच्छि अभंगे ॥
 म० ॥ १८ ॥ गद आवश्यक नरकार आदं, तेहना बडे उप
 धान ॥ गिवरम्पणी बरवाने हेने, पंदरी पाठ प्रधान ॥ म० ॥
 ॥ १९ ॥ आरुन उपधान वषा रिण, नरकार क्रिया न मूत्रे ॥
 मारुने पग पाग वषा रिण, वांगर मूत्र न मूत्रे ॥ म० ॥ २० ॥
 पंचांगी मे जो जो मारुने, छ भस्म परगट ॥ ने गारुनि हरि
 बल पाने, कर कर्णी गदगद ॥ म० ॥ २१ ॥ इगिपरे वृष
 रागी गृह बेडा, बार मजमन पा ॥ विदग्ध गद भवि करीने,
 भावम भव मजराद ॥ म० ॥ २२ ॥ इगिबल ने करे प
 ल्यनी करी ने कोड करेने आरु ने उप जो मुगमे प्राणी,
 मारुने दद ॥ म० ॥ २३ ॥ पावे अरे बीने
 बर, न दमः आरुग ॥ गदः उरुग ने नीमन देवरा, मजम
 पंचरिण ने नाग ॥ म० ॥ २४ ॥ प गमवाये विन काध्या,
 बीछ थदा वागदः ॥ शक्ति मरा उगमीम मजवाया, विदग्ध
 मजवाया उदः ॥ म० ॥ २५ ॥ पादगमने विद, निरीप
 ने दद रुमापा ॥ वादन मजराद विने पग कीरा, जतिरसु
 रिवा ॥ म० ॥ २६ ॥ म० ॥ २७ ॥ उरु मजराद, देउद मज
 म० ॥ २८ ॥ श्रीमद्वारा मजराद वागी, मा विनने जग मजरे ॥
 म० ॥ २९ ॥ मजरा पावे पददे मजरी, मज विन पदिका
 मजरी ॥ मज मजरे मज मजरे मजरे ने मजरे मजरे मजरी ॥
 म० ॥ ३० ॥ मज मजरे मजरी देउद, मजरा मजरे मजरी ॥
 मज मजरी मजराद मजरी, मज मजरे मजरे मजरी ॥ म० ॥

॥ १८ ॥ शोच्यो उद्धत शेषना उपै त्रिजगै प. निरी ॥
 मारभर गदि शवक कुरुये, या कर्म जम नीरी ॥ १९ ॥
 ॥ २० ॥ धानने भयये एहवा प्राणी, जे हमा म्मन म. निरी ॥
 मो सु तदा ते काळमुं करै, गी नम कर्वा पगना ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥ ए एष्टांत सुणीने भाविश, मानजो म. निरी ॥
 र्वा ननना ते गुन भांस्या, ते मन नानने रात ॥ २३ ॥
 ॥ २४ ॥ ए भविकार सुणी जे मरेहे, न लहे म. निरी ॥
 या उद्धागनी डाल प. निरी, लहो ए भांसी म. निरी ॥ २५ ॥
 ॥ २६ ॥ इम कर्णी कर्ता यर्वा, बांस्या म. निरी ॥
 एहे सुनिषंठ केवादी, पाउ ग. निरी ॥ २७ ॥ शरी नाहा
 शरीया, नि. निरी ॥ २८ ॥ न. निरी ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥ म. निरी ॥ ३१ ॥
 ॥ ३२ ॥ म. निरी ॥ ३३ ॥
 ॥ ३४ ॥ म. निरी ॥ ३५ ॥
 ॥ ३६ ॥ म. निरी ॥ ३७ ॥
 ॥ ३८ ॥ म. निरी ॥ ३९ ॥
 ॥ ४० ॥ म. निरी ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥ म. निरी ॥ ४३ ॥
 ॥ ४४ ॥ म. निरी ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥ म. निरी ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥ म. निरी ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥ म. निरी ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥ म. निरी ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥ म. निरी ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥ म. निरी ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥ म. निरी ॥ ५९ ॥
 ॥ ६० ॥ म. निरी ॥ ६१ ॥
 ॥ ६२ ॥ म. निरी ॥ ६३ ॥
 ॥ ६४ ॥ म. निरी ॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥ म. निरी ॥ ६७ ॥
 ॥ ६८ ॥ म. निरी ॥ ६९ ॥
 ॥ ७० ॥ म. निरी ॥ ७१ ॥
 ॥ ७२ ॥ म. निरी ॥ ७३ ॥
 ॥ ७४ ॥ म. निरी ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥ म. निरी ॥ ७७ ॥
 ॥ ७८ ॥ म. निरी ॥ ७९ ॥
 ॥ ८० ॥ म. निरी ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥ म. निरी ॥ ८३ ॥
 ॥ ८४ ॥ म. निरी ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥ म. निरी ॥ ८७ ॥
 ॥ ८८ ॥ म. निरी ॥ ८९ ॥
 ॥ ९० ॥ म. निरी ॥ ९१ ॥
 ॥ ९२ ॥ म. निरी ॥ ९३ ॥
 ॥ ९४ ॥ म. निरी ॥ ९५ ॥
 ॥ ९६ ॥ म. निरी ॥ ९७ ॥
 ॥ ९८ ॥ म. निरी ॥ ९९ ॥
 ॥ १०० ॥ म. निरी ॥ १०१ ॥



[illegible]

उपनेहों रे, रामे ने बेर भाव ॥ सो० ॥ दम दिने जो जे नेहने
 रे, सो सोने होवे महाव ॥ सो० ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥
 निज सोरे रे, सेकी द्विजनी नाति ॥ सो० ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥
 से, मरु रे, सेतोयो मरु भाति ॥ सो० ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥
 रामी यथा सह नातना रे, जेना द्विज बहमाप ॥ सो० ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥
 ने हो कुमनि मने रे, गदा ने दाम बहमाप ॥ सो० ॥ २२ ॥ २२ ॥ २२ ॥ २२ ॥
 ॥ १४ ॥ मेरवे हरिभट बोलिदां रे, रे बग दाम ॥ सो० ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥ २३ ॥
 का हो दूध दाविदां रे, से दूध नावही दाम ॥ सो० ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥
 ॥ १५ ॥ नव दिहां द्विज मयना कर रे, दामनाप ॥ सो० ॥ २५ ॥ २५ ॥ २५ ॥ २५ ॥
 ॥ सो० ॥ ॥ हरिना भीरुना जगदा रे, रे न बने नव नाप ॥ सो० ॥ २६ ॥ २६ ॥ २६ ॥ २६ ॥
 ॥ १६ ॥ ॥ १६ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ २७ ॥ २७ ॥ २७ ॥ २७ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १७ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ २८ ॥ २८ ॥ २८ ॥ २८ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ २९ ॥ २९ ॥ २९ ॥ २९ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ २० ॥ ॥ २० ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ३१ ॥ ३१ ॥ ३१ ॥ ३१ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २१ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ३२ ॥ ३२ ॥ ३२ ॥ ३२ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २२ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २३ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ ३४ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २४ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ३५ ॥ ३५ ॥ ३५ ॥ ३५ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २५ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २६ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ३७ ॥ ३७ ॥ ३७ ॥ ३७ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २७ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ३८ ॥ ३८ ॥ ३८ ॥ ३८ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २८ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ २९ ॥ ॥ २९ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ४० ॥ ४० ॥ ४० ॥ ४० ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३० ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ४१ ॥ ४१ ॥ ४१ ॥ ४१ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३१ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ४२ ॥ ४२ ॥ ४२ ॥ ४२ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३२ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ४३ ॥ ४३ ॥ ४३ ॥ ४३ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३४ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ४५ ॥ ४५ ॥ ४५ ॥ ४५ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३५ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥ ४६ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३६ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ४७ ॥ ४७ ॥ ४७ ॥ ४७ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ४८ ॥ ४८ ॥ ४८ ॥ ४८ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३८ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ४९ ॥ ४९ ॥ ४९ ॥ ४९ ॥
 मयाप ॥ सो० ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ३९ ॥ दम बहि द्विज मयना ॥ सो० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥

विहां, उपनंद मिलवा रूप ॥ पाव सट ॥ सिन्धो बेमाडगी की
 घूर ॥ १२ ॥ दिखे सह बेठा रगमे, कगना सत डकोट ॥ तन
 समे आल्या साधुनी, देवा समान गान ॥ १३ ॥

॥ दाल २० ॥ मां ॥ मृडा ३ तु जट बहेन मेटमडा रे ॥ ए
 देवी ॥ तब इस्ते सउ उटीने, कम जोडी नामे दोगी रे ॥ गुरु
 पण भाविक देखोने रे, देवे सहजे यमाजीया रे ॥ १ ॥ भाव सु
 णजो रे, इहां गुरु पण लाभ कमावे रे ॥ ए आरुणी ॥ माम खम
 णनुं पाणुं, करी बेठा त्या चित्रगाला रे ॥ साथ सह पण तिहा
 कणे, गुरु पास बेठा संभारी रे ॥ भ० ॥ २ ॥ यमकता यथा
 स्थित करि, सह बुझया प्राणी सजाणो रे ॥ समकित मामना
 पार्षिया, गुरुमुखी मुणी यखाणो रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ तब द्विजणा
 कर जोडीने, पुछे मंडा विशाखानी माना रे ॥ आ दो पुत्री दोना
 गिणी, तस कांड होये मुख शाना रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ तब
 कृपि दो कुमरी लणी, तस कर्नेनी रेखा जोय रे ॥ आजयी
 एक वर्षनुं, गुरु भावे आउगु होय रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ त्यापनी
 मुख पामणे, जो जिन मागने बह जे रे ॥ सिन्धो पर जो उड
 ये, तो मन बछिन लहेजे रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ दम कृपि बहे मृण
 भउणी, तुम मारग शुद्ध बताव रे ॥ जो ने भागने वा शो तो
 शुखनी दोरी कपाव रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ तब भ०णी बहे साथ जी,
 तुम मागा शुद्ध भांखो रे ॥ काज सर नेहवी २० भय कल्या
 करी ने दाखो रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ तब गुरु कर मुनी भाउको, तुम
 एजो प्रभु शुभ जाणीरे ॥ मभु पूज्या ने पार्षिया दम लोकमे ७९ पण
 वाणी रे ॥ भ० ॥ ९ ॥ सद्गुरुवचन न्हदे बरी तुम आपधी मननुं
 नाणो रे ॥ प्रभु बंदन जल सांभली तमे मनभर लखे आणो रे ॥
 ॥ भ० ॥ १० ॥ अविद्या रे तुम जिन बंदन भणी जावो रे,
 तो मीठा मेग पावो रे ॥ ए आरुणी ॥ वामरे उरी सादयी दा

पनसं त्रिनभणी जानुं रे ॥ उलट भाणी भावणी तो, घोष तर्ण
 फल पातुं रे ॥ भ० ॥ ११ ॥ उडे चैत्य गमण भणी ए तो, परी
 गुट ते बेनी रे ॥ छड तर्ण फल पायी ते लहे, एम केवली दे
 चपदेनी रे ॥ भ० ॥ १२ ॥ चोखा मोपारी कर छीपा, तब अ
 ठमनुं फल पातुं रे ॥ पगलु दे जावाने देहरे, तब दशप तर्ण कर
 आवे रे ॥ भ० ॥ १३ ॥ द्वादश तप सम फल छहे, ए तो देहरा
 माग भातां रे ॥ अर्थे पंधे लहे देहरे, ए तो मास स्वमण फल
 भातां रे ॥ भ० ॥ १४ ॥ देहक देवे दृष्टिमें, तब मास स्वमण फल
 लाभे रे ॥ जस पडोवे चैत्य अहदी, तब स्वमासी फल लाभे रे ॥
 भ० ॥ १५ ॥ त्रिनव वाग्मना करमणी, ए तो वरसी तप
 फल होवे रे ॥ वण मदारिणा देयतां, तम अंत वर्ष तप फल जा
 वे रे ॥ भ० ॥ १६ ॥ महम ते वपे उपवास जे, फल होवे त्रि
 पुते पता रे ॥ पुण्य अनंत ते बरे, त्रिनवना भावे करे तो रे ॥
 भ० ॥ १७ ॥ चैत्यम कानो कादनां, फल जो उपवासनुं पावे रे ॥
 आंगी रवे जा विठवने, सटप पांण लाम उपावे रे ॥ भ० ॥
 ॥ १८ ॥ लाय उपासक फल लहे, एक फु नी माया पडावे रे ॥
 वाजिब गांव मय भागद, हीरे लाम अनंत गण पावे रे ॥ भ०
 ॥ १९ ॥ घुनडीक वनु भातां, करतां छे संनवमासा रे ॥ जो
 गति करे प्रमू त्रिन वणा, तम जाये भागति वादा रे ॥ भ० ॥
 ॥ २० ॥ गृहण करे त्रिनती शिरे, तम होवे भातम शुद्ध रे ॥
 घुन उखेवे मय भागद, न मरुत मय लहे बद्ध रे ॥ भ० ॥
 ॥ २१ ॥ नाटक कर्मां पदरी लहे, त्रिन चळि इच्छिल देसा रे ॥
 म नार मुग नर पद लहे, मय मेवाणी लहे मांडा देसा रे ॥ भ०
 ॥ २२ ॥ जो वण काट पुता लहे, भरमाण पाव उपावे रे ॥
 हट्टा कर्मां मरेहे, ते जावे मुक्ति दुरारे रे ॥ भ० ॥ २३ ॥ राव
 न ते संनदी, कर्मां अशुद्ध ते नरो रे ॥ ता ये मान न बुद्धि

जिन पदवीनी लहेवानां रे ॥ भ० ॥ २४ ॥ धौणकगणें बीगनी
 करी ह्येस जवनी पूजा रे ॥ पद्य नाभ नार्थकरु. हांजे भावति चो
 बीशी राजा रे ॥ भ० ॥ २५ ॥ धृमारपाल पुरब भों, कोढी
 पांचनी फुल चढावे रे ॥ देण भद्रागनां अनिपति. ययो फुल
 भद्रापी फावे रे ॥ भ० ॥ २६ ॥ इणि पों प्रभुनी पूजाधकी,
 ए हो सपत्तां संकट माजे रे ॥ स्वर्ग मुगति मुग्य पाभीयें. वनी सं
 सारिक सुस्त छाजे रे ॥ भ० ॥ २७ ॥ ए अविचार ते सांभली,
 सहनां मन भावें भेदाणां रे ॥ जिन वंदन जिन भक्तिमां. नम आ
 वम रंग रंगाणा रे ॥ भ० ॥ २८ ॥ गृहनी शांगव सांढामणी,
 मानी बिम सपत्नी साची रे ॥ चोथा उडागनी बीगपी, कहि
 छमे चाखे राणी रे ॥ भ० ॥ २९ ॥

॥ दुहा ॥ कृपिनी गोख सोढामणी, सांभलि भयला विष ॥
 जिन वंदन अर्चाभणी. दिन दिनणा थया विष ॥ १ ॥ कहे उर
 नंद मुजो प्रभु, श्री विव कजि भव ॥ ते विवि कहो भमनें प्रभु,
 निण विष पूजा देव ॥ २ ॥ तव गुरु देव ते दाखवें. द्रोप रहित
 अदार ॥ जिन वंदन अर्चा तगां. शिखरे गुरु आचार ॥ ३ ॥
 रमणी क्रुद्धि तजां करी. जीत्या राग ने द्वेष ॥ देव नेहनु नाम छे,
 बांजा देव ते रेख ॥ ४ ॥ देव ते नाम धावने. राखे कामिनी
 संग ॥ ते ससारी मुग कद्या, लुब्धाणा नम भग ॥ ५ ॥ जे सुर
 जीवता जे हुवे, ते भलें राखे नारि ॥ पण थड मुनि संलनी, छे
 सी राखे साग ॥ ६ ॥ मुआ गवा परलोकमे. तो पण नगयो वि
 कार ॥ ते शुं तारक तागो, पडिया मोद मदार ॥ ७ ॥ बाहा
 लो वयरी एकसम, छेखवे ते खरो देव ॥ तस धरणांजुन सेवनां,
 रहियें शिव तनखेव ॥ ८ ॥

॥ शाल २१ मी ॥ तुम पांतावर पहेरो जी, मुगने परकलदे ॥
 ए देगी ॥ सांभली गृहनी बाणी जी ॥ हरिल सांभलो ॥ दु

॥ ६० ॥ नाथ ते आगे जे होवे जी ॥ २० ॥ नाथि जिना शिरो
 जोरे जी ॥ ६० ॥ २२ ॥ दिवें मदेव पुढेव दोड जी ॥ ६० ॥ गोमि
 पोता ये वध होइ जी ॥ ६० ॥ नातिना सुनी जाणो जी ॥ ६० ॥
 बायल ने कुट माणो जी ॥ ६० ॥ २३ ॥ निरुन्या नातिथी
 हाण्य जी ॥ ६० ॥ कोंबादभदे ते गाव्य जी ॥ ६० ॥ गण ने
 कच्छर देखे जी ॥ ६० ॥ न जाणे को नाथनी विभे जी ॥ ६० ॥
 ॥ २४ ॥ निहां जड एक कापटी भटा जी ॥ ६० ॥ तिगे निग्व
 रीं विण महांतो जी ॥ ६० ॥ बह रूपिणी विद्या शिखी जी ॥
 ६० ॥ आल्या त दो भाखी जी ॥ ६० ॥ २५ ॥ कापटी वेग
 ते लोइ जी ॥ ६० ॥ आल्या ने विगय बेइ जी ॥ ६० ॥ उपनदने
 पर भागे जी ॥ ६० ॥ कपट हा भिजा मागे जा ॥ ६० ॥
 ॥ २६ ॥ मगुरा घने गाव गावे जी ॥ ६० ॥ उपनदना पाक
 रीमावे जी ॥ ६० ॥ रूपिणी विद्यामागे जी ॥ ६० ॥ उपन नाडे
 नम भोगे जी ॥ ६० ॥ २७ ॥ एक दिन गने ते पोलं जी ॥ ६० ॥
 मित्रक गावे दो ठोडे जी ॥ ६० ॥ एहेव उपनद आल्या जी ॥ ६० ॥
 कपटीपे दाव ते पाव्यो जी ॥ ६० ॥ २८ ॥ फरमापे घाव त्या
 घाल्यो जी ॥ ६० ॥ उपनद यमवरे चाख्यो जी ॥ ६० ॥ श्वानना
 रुम करी नाव जी ॥ ६० ॥ कपटी दो त्याधा नाव जी ॥ ६० ॥
 ॥ २९ ॥ घाओ रे भाइ घाइ जुओ जी ॥ ६० ॥ उपनद हाग्न रणे
 हुओ जी ॥ ६० ॥ जयदेव भादे कुटुं जी ॥ ६० ॥ आल्या मट
 करी वृंथ जी ॥ ६० ॥ ३० ॥ रोगिणी देखो दो भेटे जी ॥ ६० ॥
 घाल पटी तस पेठे जी ॥ ६० ॥ जयदेव कहे जइ देखो जी ॥
 ६० ॥ हणनारुं कुम तस पेठो जी ॥ ६० ॥ ३१ ॥ घापा नन
 बहु केरे जी ॥ ६० ॥ न लावा गया कोइ चेहे जी ॥ ६० ॥
 आरतिनगर कुंभारी जी ॥ ६० ॥ न पटे मुर कांई जारी जी ॥
 ६० ॥ ३२ ॥ गले सादले रांद जी ॥ ६० ॥ नेइ गइ पाशेर

[illegible]

सहित नाम ॥

पुनः पुनः पाठ्ये

वशा अवशरि

ना पुनः

हृत् अठ्यो

ने नि

॥ अ

लात्

वीर्यम

न मेव

या दो

न म

नार

हृत् ने

दृष्ट

दृष्ट ॥

पुनः पुनः

पुनः पुनः

॥ ॥

पुनः पुनः

पुनः पुनः

॥ ॥

पुनः पुनः

॥ ॥

पुनः पुनः

सज्ज नालें करों शान मोन भरी, चाँज्यो मे ॥ १ ॥ मनी मरी
 ॥ मो० ॥ ३ ॥ वाग ने वन उमर व माने लीया मज रिता
 नव गुमद साचा ॥ राग ने द्वेष दोष चोरे जगन्ना नेहन
 वेरा नदीअ काचा ॥ मो० ॥ ४ ॥ फोज राग निरम ॥ मोज
 एते दोर ॥ साँपनी मोहना मेन कोटी ॥ भाव नृप भनय मन्त्री
 ॥ ५ ॥ राग ने दोष दोष दोष दोष ॥ मो० ॥ ५ ॥ ज्ञानने
 दर्शन करण नाने करी, अग्रे बडाव प्रदो मज नदी ॥ गङ्गा
 बहवा आरा जावने, अनुभव गण लह नवद पुरे ॥ मो० ॥
 ॥ ६ ॥ एते मोहने आवा जुगरी करी ॥ आरा राग नव दह
 पुरी ॥ जाग ने जाग न मोह उवाव दो, सबद नाने ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥ मोह नव कोपियो नव राग रापिया,
 अरिया मोह निन सैन्य मेरी ॥ वाग समुद्रा नाना ॥ ९ ॥
 मन्त्री नृप उपरि बहन बेला ॥ मो० ॥ १० ॥ नदी मन्त्री रापिया
 मुहान घन घातीया, पानीया मान मज नव नदी ॥ ११ ॥
 नदी मज जलकापिया, भावनृप नेनमे इने राग ॥ मो० ॥
 ॥ १२ ॥ साँप उमराव ने अह दश अर नाना नदी मनी करी
 निपुवज हरता ॥ फोज नव मोहकापिया मन्त्री, मन्त्री ॥
 नाना जोन करता ॥ मो० ॥ १३ ॥ राग ने द्वेष दोष नव नदी
 साँपना करत समाभादि ॥ काप घरी वरत मन्त्री ॥ १४ ॥
 रेलीपो जिगे घनराज भादि ॥ मो० ॥ १५ ॥ वाग नवराजना
 नाजि शिरीया करी, राग कपायना वीर मो ॥ १६ ॥
 कोर अने करी, भाव नृप सैन्यन करन मोला ॥ मो० ॥
 ॥ १७ ॥ इतिपरे मोह नृप सैन्य भेल करी, चाँज्यो मन्त्री
 नृप करवा ॥ आपसी सापुही फोज दोषे पिरी, घनमो
 फोज दो मदि लहवा ॥ मो० ॥ १८ ॥ मोहनुर भावनृप दोष
 पोरत नदीया, आनन्दया मुहमे पूर बेद ॥ नव चाँज्यो ने मोनि

- [illegible]

प्राप्तान्ते छात्राणां पुनः.

ડૉક્ટર કેશવલાલ જગમલાલ તરફથી પ્રેર.

શ્રીમદ્ ધર્મસિંહજી

અને

શ્રીમદ્ ધર્મદાસજી

[સામાયિક, આયુષ્યકર્મ અને ક્ષાયક સમ્ય-
વાચની પર્યાલોચના સાથે]

લેખક

મુનિરાજ શ્રી હર્ષેશ્વરજી

(દરિયાપુરી મંદાવ)

પ્રકાશક

ડૉક્ટર નાગરદાસ કેશવલાલ

કલોલ (વ. ગુમરાન)

પ્રથમ આવૃત્તિ

સંવત ૧૯૮૦

પ્રત ૬૦૦

ઈ. સ. ૧૯૧૭

બો શ્રીરંગાસન શ્રીરીંગ પ્રેસમાં કેશવલાલ જગમલાલ
આપે છે. ડૉ. નાગરદાસજી પોસ્ટ-અમરગઢ.

અમૃત્ય.